वर्ष : 2 ▸ अंक: 169 ▸ मूल्य : 4 रू.

RNI No. -DELHIN/2019/78266

newsdesk@motherlandvoice.org
editor@motherlandvoice.org

मदरलैण्ड वॉइस

बुधवार, 10 फरवरी 2021

राष्ट्र प्रेमियों का दैनिक समाचार पत्र

दिल्ली से प्रकाशित एवं जयपुर, लुधियाना, चंडीगढ़, पटना, रायपुर, देहरादून, शिमला में प्रसारित

राज्यसभा से विदाई के दिन तारीफ करते भावुक हुए पीएम मोदी

गुलाम नबीं आजाद को बताया बेहतरीन मित्र और सहयोगी

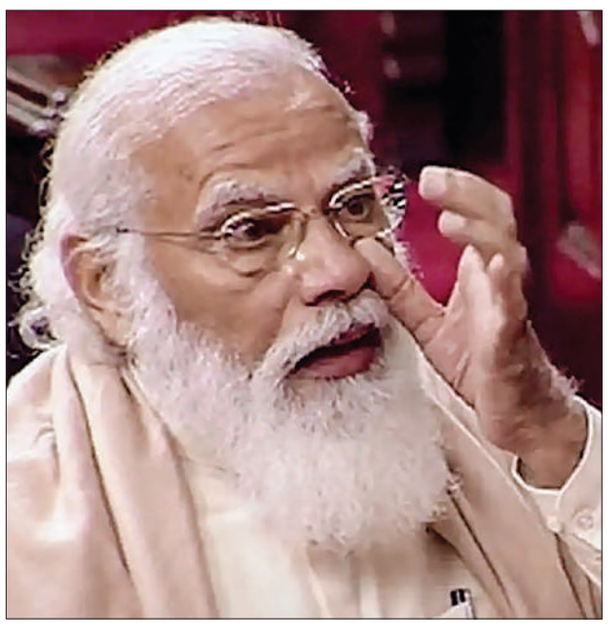

नई दिल्ली। राज्यसभा में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी मंगलवार को विपक्ष के नेता और कांग्रेस के वरिष्ठ सदस्य गुलाम नबी आजाद की तारीफ करते हुए भावुक हो गए। पीएम मोदी ने आजाद को एक बेहतरीन मित्र बताते हुए कहा कि सदन के अगले नेता प्रतिपक्ष को आजाद द्वारा स्थापित मानकों को पूरा करने में दिक्कत का सामना करना पड़ेगा। पीएम मोदी ने कहा कि आजाद ने अपने दल की चिंता जिस तरह की, उसी तरह उन्होंने सदन की और देश की भी चिंता की।

उन्होंने कहा कि विपक्ष के नेता के पद पर रहते हुए आजाद ने कभी दबदबा स्थापित करने का प्रयास नहीं किया। पीएम मोदी ने कहा कि आजाद अपनी पार्टी और देश की एक परिवार की तरह चिंता करते हैं, यह कहते हुए पीएम मोदी ने आजाद को सैल्यूट किया। उल्लेखनीय है कि गुलाम नबी आजाद का उच्च सदन में कार्यकाल खत्म हो गया और उन्हें मंगलवार को विदाई दी गई।

प्रधानमंत्री ने बताया कि जब वह गुजरात के मुख्यमंत्री थे तब आजाद जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री थे। उन दिनों कश्मीर में पर्यटकों पर आतंकी हमला हुआ और कुछ पर्यटक मारे गए।इनमें गुजरात के पर्यटक भी थे।मोदी ने कहा तब सबसे पहले, गुलाम नबी आजाद ने फोन कर उन्हें सूचना दी और उनके आंसू रुक नहीं रहे थे।मैंने तत्कालीन रक्षामंत्री प्रणव मुखर्जी से पर्यटकों के पार्थिव शरीर लाने के लिए सेना का हवाई जहाज उपलब्ध कराने का अनुरोध किया जो उन्होंने स्वीकार कर लिया।रात को पुनः आजाद ने फोन किया। यह फोन उन्होंने हवाईअड्डे से किया और उनकी चिंता उसी तरह थी जिस तरह लोग अपने परिवार की चिंता करते हैं।यह बोलते हुए प्रधानमंत्री का गला रुंध गया और आंखों में आंसू आ गए।

पीएम मोदी ने कहा कि मेरे लिए बहुत भावुक पल था। अगले दिन सुबह पुनः आजाद का फोन आया और उन्होंने पूछा कि मोदी जी, क्या सभी लोग पहुंच गए हैं।उन्होंने कहा कि एक मित्र के रूप में घटनाओं और अनुभव को देखते हुए मैं आजाद का बहुत आदर करता हूं।आजाद के बारे में मोदी ने कहा आजाद को सत्ता पक्ष में रहने का और विपक्ष में रहने का लंबा अनुभव है।28 साल का कार्यकाल बड़ी उपलब्धि होता है।उन्होंने कहा कि बहुत पहले एक बार संसद भवन में लॉबी में वह आजाद से बात कर रहे थे।

वहां से निकलने पर पत्रकारों के सवाल पूछने पर आजाद ने कहा था टीवी पर, अखबारों में आप हमें लड़ते झगड़ते देखते हैं, लेकिन यहां हम सबके बीच एक परिवार की तरह का वातावरण होता है।पीएम मोदी ने मुस्कुराते हुए कहा कि अपने सरकारी बंगले को आजाद ने बहुत प्यार से संवारा और उनका बगीचा देख कर वहां कश्मीर की याद आ जाती है। उन्होंने वहां एक कश्मीर बना रखा है। स्पर्धा में उनका बंगला पहले नंबर पर आ जाता है।

मेरा सौभाग्य है मैं भारत में पैदा हुआ, हिंदुस्तानी मुसलमान होना फक्र की बात: आजाद

नई दिल्ली। वरिष्ठ कांग्रेस नेता और पूर्व केंद्रीय मंत्री गुलाम नबी आजाद का राज्यसभा में कार्यकाल पूरा हो गया है। मंगलवार को सदन में पीएम नरेंद्र मोदी समेत अन्य दलों के नेताओं ने गुलाम नबी आजाद की प्रशंसा करते हुए उन्हें भविष्य के लिए बधाई दी। आजाद ने भी सभी का शुक्रिया अदा करते हुए अपने लंबे राजनीतिक अनुभवों को कुछ किस्सों के जरिए साझा किया। जम्मू रीजन से आने वाले गुलाम नबी आजाद ने बताया कि उन्होंने देशभक्ति महात्मा गांधी, जवाहर लाल नेहरू और मौलाना आजाद को पढ़कर सीखी है।

गुलाम नबी आजाद ने पूर्व पीएम इंदिरा गांधी और संजय गांधी का शुक्रिया अदा करते हुए कहा कि उनकी वजह से मैं यहां तक पहुंच पाया। इसके साथ ही गुलाम नबी ने बताया कि कश्मीर के हालात पहले कैसे हुआ करते थे और अब कितना बदलाव आ गया है। साथ ही पाकिस्तान के बारे में भी अपनी राय रखी। गुलाम नबी आजाद ने सदन में बताया मैं कश्मीर के सबसे बड़े एसपी कॉलेज में पढ़ता था। वहां 14 अगस्त और 15 अगस्त दोनों मनाया जाता था।

दिल्ली हाट में ट्राइब्स इंडिया महोत्सव

जीआई उत्पादों पर ध्यान केंद्रित

नई दिल्ली। इस समय चल रहे ट्राइब्स इंडिया आदि महोत्सव को विशेष महत्व दिया गया है, यह 50 जनजातीय जीआई उत्पादों के लिए समर्पित स्थान है। इन उत्पादों को इस महोत्सव में विशेष स्थान मिला है और सभी आगंतुक इस स्टाल पर बहुत रुचि के साथ आते हैं। आदि महोत्सव और विशेष रूप से जीआई उत्पाद स्टाल पर आने वाले एक प्रमुख आगंतुक श्री भास्कर खुल्बे थे, वह माननीय प्रधानमंत्री के सलाहकार हैं।

उन्होंने रविवार 7 फरवरी, 2021 को आदि महोत्सव में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। श्री भास्कर ने आदिवासी हस्तशिल्प और अन्य उत्पादों के स्टॉलों का भ्रमण किया तथा वन धन डेमो सेंटर भी देखा। उन्होंने 50 आदिवासी जीआई उत्पादों पर फोकस करने के लिए मंत्रालय के कार्यों पर प्रशंसा व्यक्त की और कहा कि, 'मुझे यह जानकार बेहद खुशी हो रही है कि ट्राइफेड ने जीआई टैग किए उत्पादों को बढ़ावा देने और इन्हें एक ब्रांड में बदलने का कदम सक्रिय रूप से उठाया है। भास्कर ने कहा कि, इन प्रयासों से आदिवासी कारीगरों को सशक्त बनाया जा रहा है।

उन्होंने कहा कि, आदि महोत्सव देश भर के सभी आदिवासी कारीगरों को एक ही स्थान पर लाने का एक शानदार तरीका है।

ट्राइब्स इंडिया के आदि महोत्सव में जीआई उत्पादों के स्टॉल पर राजस्थान की नीली मिट्टी के बर्तन, कोटा दरिया कपड़े, मध्य प्रदेश के चंदेरी और माहेश्वरी रेशम, बाघ प्रिंट, ओडिशा के पट्टचित्र, कर्नाटक के खास बर्तन, उत्तर प्रदेश से बनारसी रेशम, पश्चिम बंगाल की दार्जिलिंग चाय, हिमाचल प्रदेश से काला जीरा, पूर्वोत्तर की बेहद तीखी नागा मिर्च और बड़ी इलायची जैसी प्रसिद्ध तथा उत्तम वस्तुएं उपलब्ध हैं।

जियोग्राफिकल इंडिकेशन टैगिंग ने तब से अधिक महत्व प्राप्त कर लिया है, जबसे सरकार का ध्यान वोकल फॉर लोकल की ओर स्थानांतरित हुआ है और आत्मनिर्भर भारत का निर्माण हो रहा है। जनजातीय मामलों के मंत्रालय के अंतर्गत ट्राइफेड आदिवासी उत्पादों के साथ जीआई टैग उत्पादों को बढ़ावा देने और उन्हें एक ब्रांड में बदलने की सुविधा प्रदान कर रहा है, जो आदिवासी कारीगरों के सशक्तीकरण का प्रतीक है।

संक्षिप्त समाचार

पीएम मोदी आज विश्व सतत विकास शिखर सम्मेलन -2021 का उद्घाटन करेंगे

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 10 फरवरी को शाम ६.३० बजे वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग केमाध्यम से विश्व सतत विकास शिखर सम्मेलन –2021 का उद्घाटन करेंगे। इस शिखरसम्मेलन का विषय है 'हमारे सामान्य भविष्य को पुनर्परिभाषित करना: सभी के लिए सुरक्षित एवं संरक्षित वातावरण'। गुयाना गणराज्य के राष्ट्रपति डॉ मोहम्मद इरफान अली; न्यू पापुआ गिनी के माननीय प्रधानमंत्री जेम्स मारपे; मालदीव गणराज्य में पीपुल्स मजलिस के अध्यक्ष मोहम्मद नशीद; संयुक्त राष्ट्र की उप महासचिव सुश्री अमीना जे. मोहम्मद औरभारत सरकार में केंद्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री श्रीप्रकाश जावडेकर इस अवसर पर उपस्थित रहेंगे। ऊर्जाऔर संसाधन संस्थान –द एनर्जी एंड रिसोर्सेज इंस्टीट्यूट (टेरी) के प्रमुखकार्यक्रम विश्व सतत विकास शिखर सम्मेलन का 20वां संस्करण 10 से 12 फरवरी, 2021 तक ऑनलाइन माध्यम से आयोजित किया जाएगा। इस सम्मेलन में कई देशों कीसरकारें, बिजनेस लीडर्स, शिक्षाविद, वैज्ञानिक, युवा और सामाजिक संगठनजलवायु परिवर्तन के खिलाफ लड़ाई में एक साथ खड़े होंगे। भारत के पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय तथापृथ्वी विज्ञान मंत्रालय इस शिखर सम्मेलन के प्रमुख भागीदार हैं। इससम्मेलन के दौरान चर्चा किए जाने वाले प्रमुख विषयों में ऊर्जा एवं उद्योगपरिवर्तन, अनुकूलन तथा लचीलापन, प्रकृति आधारित समाधान, जलवायु वित्त, चक्रीय अर्थव्यवस्था, स्वच्छ महासागर और वायु प्रदूषण शामिल हैं।

आजाद आपको वापस आना होगा, कांग्रेस नहीं लाएगी तो हम लाएंगे: अठावले

नई दिल्ली। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और पूर्व केंद्रीय मंत्री गुलाम नबी आजाद का उच्च सदन में कार्यकाल मंगलवार को पूरा हो गया है। इस अवसर पर उन्हें राज्यसभा में भावभीनी विदाई दी गई। इसी दौरान आरपीआई के नेता और केंद्रीय मंत्री रामदास अठावले ने गुलाम नबी आजाद से कहा कि आप को सदन में फिर से वापस आना चाहिए। अगर कांग्रेस आपको वापस नहीं लाती हैं तो हम ऐसा करने के लिए तैयार हैं। उन्होंने कहा कि इस सदन को आपकी जरूरत है। उन्होंने कहा कि यहां आने में कोई तकलीफ नहीं है। मैं भी उधर था लेकिन अब इधर आ गया हूं तो आपको क्या तकलीफ है। अठावले ने यह बात जैसे ही कहीं, पूरा सदन हंसी के ठहाके से गूंज उठा। खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह भी हंसने लगे। इतना ही नहीं रामदास अठावले ने गुलाम नबी आजाद की तारीफ करते हुए कहा कि आपका स्वभाव बहुत अच्छा है।

बिहार में 17 विधायकों को दिलाई मंत्रीपद की शपथ

भाजपा कोटे से नौ और जेडीयू कोटे से आठ लोग बने मंत्री

पटना। बिहार में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व वाले मंत्रिमंडल का बहुप्रतीक्षित विस्तार अंततः हो गया। पटना में आयोजित कार्यक्रम में मंगलवार को 17 विधायकों को मंत्रिपद की शपथ दिलाई गई। भाजपा के कोटे से नौ और जेडीयू के कोटे से आठ नेताओं को शपथ दिलाई गई। इसके साथ ही बिहार में मंत्रियों की संख्या अब बढ़कर 31 हो गई है। सबसे पहले भाजपा एमएलसी शाहनवाज हुसैन ने उर्दू में मंत्री पद की शपथ ली। शाहनवाज हुसैन मूल रुप से समस्तीपुर के खानपुर प्रखंड रहने वाले हैं। उनके पिता शिक्षक थे और सुपौल में पढ़ाते थे। इसलिए शाहनवाज हुसैन पिता के साथ सुपौल में ही पले-बढ़े। वह 1999, 2006 और 2009 में लोकसभा पहुंचे। अटल सरकार में सबसे कम उम्र के मंत्री के रुप में शपथ ली थी। सन 2014 के लोकसभा चुनाव में हार के बाद से वह सत्ता की राजनीति से अलग-थलग थे। मुख्यधारा की राजनीति में शाहनवाज की छह साल बाद वापसी एमएलसी बनाए जाने के बाद हुई। इसके साथ ही प्रमोद कुमार को भी मंत्रिमंडल में स्थान दिया गया है। वह पर्यटन और कला संस्कृति मंत्री रह चुके हैं। 58 साल के प्रमोद कुमार की क्षेत्र में परेड़ है। संगठन से लगातार जुड़े हैं। पांचवीं बार मोतीहारी से चुनाव जीते हैं। नीरज सिंह बबलू को भी मंत्री बनाया गया है, जो बिहार विधानसभा में चौथी बार पहुंचे हैं। उनके राजनीतिक सफर की शुरूआत 2005 में हुई थी। 2020 में वे छातापुर विधानसभा से चुनाव लड़े और जीते। नीरज सिंह दिवंगत अभिनेता सुशांत सिंह राजपूत के भाई हैं। नीतीश कैबिनेट में गोपालगंज से विधायक सुभाष सिंह को भी स्थान दिया गया है, वह पांच बार विधायक रह चुके हैं। वह सीएम नीतीश कुमार के बेहद करीबी माने जाते हैं।

नौतन से भाजपा विधायक नारायण प्रसाद को भी मंत्रिमंडल में स्थान दिया गया है। वह मैट्रिक पास हैं। लगातार अपने क्षेत्र में सक्रिय रहते हैं। 2015 के चुनाव में भी जीत दर्ज की थी। नीतीश कैबिनेट में शामिल होने वाले सम्राट चौधरी को राजनीति विरासत में मिली है। वह विधानपरिषद सदस्य हैं और पूर्व मंत्री शकुनि चौधरी के बेटे हैं। वह 2017 में जदयू से भाजपा में शामिल हो गए थे। भाजपा के पूर्व सांसद जनक राम पहली बार भाजपा में वर्ष 2014 में शामिल हुए थे। वर्ष 2019 में गोपालगंज लोकसभा सीट जदयू कोटे में चली गई तो उनका टिकट कट गया। जनक राम ने पार्टी के खिलाफ कोई बगावत नहीं की और वह पार्टी के प्रति वफादार बने रहे। वह भाजपा में दलित प्रकोष्ठ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष हैं और पार्टी के स्टार कैम्पेनर भी हैं। मंत्रिमंडल में स्थान देकर उनकी पार्टी के प्रति निष्ठा को सम्मानित किया गया है।

नितिन नवीन को भी मंत्रिमंडल में स्थान दिया गया है। वह बांकीपुर से विधायक हैं। उनके पिता भी भाजपा के कद्दावर नेता थे। छत्तीसगढ़ भाजपा के सह प्रभारी हैं। शत्रुघ्न सिन्हा के बेटे लव सिन्हा को विधानसभा चुनाव में पराजित किया। भाजपा कोटे से आलोक रंजन झा को भी मंत्री बनाया गया है, जो सहरसा से विधायक हैं।

प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के जलविभाजक विकास घटक में समामेलित

नई दिल्ली। वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण ने अपने बजट भाषण में किसानों की आय दोगुना करने, महिला सशक्तिकरण और समावेशी विकास (पारा 25) का जिक्र किया - जिसे ग्रामीण विकास मंत्रालय के अधीन भूमि संसाधन विभाग के प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के जलविभाजक विकास घटक द्वारा संबोधित किया गया। एकीकृत जलविभाजक प्रबंधन कार्यक्रम (आईडब्ल्यूएमपी) को साल 2015-16 में प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना (पीएमकेएसवाई) के जलविभाजक विकास घटक में समामेलित कर दिया गया। डब्ल्यूडीसी-पीएमकेएसवाई वर्षा और प्राकृतिक उत्पादकता खो चुके क्षेत्रों के विकास के लिए है। 8214 स्वीकृत जलविभाजक विकास परियोजना में से, 345 परियोजनाएं जो अभी शुरू नहीं हुई हैं, 1487 परियोजनाएं जो शुरूआती चरण में हैं (कुल 1832), राज्यों को अपने बजट के अनुसार चलाने के लिए हस्तांतरित कर दी गई हैं।

वाईएसआर कांग्रेस के सदस्यों ने राज्यसभा के सभापति वेंकैया नायडू से मांगी माफी

नई दिल्ली। राज्यसभा के सभापति एम वेंकैया नायडू के निष्पक्ष रवैए पर सवाल उठाने को लेकर वाईएसआर कांग्रेस के विजयसाई रेड्डी ने मंगलवार को अपने आचरण पर खेद जताया और सदन को भरोसा दिलाया कि भविष्य में उनकी ओर से इसकी पुनरावृत्ति नहीं होगी। शून्यकाल आरंभ होते ही संसदीय कार्यमंत्री प्रल्हाद जोशी ने सोमवार को उच्च सदन में हुई इस घटना का उल्लेख करते हुए इसकी निंदा की और कहा कि ऐसा आचरण स्वीकार्य नहीं है। उन्होंने आसन से कहा कि कल जो कुछ भी हुआ, वह बहुत निंदनीय है। आपके प्रति हमारे दिल में बहुत सम्मान है। आसन के प्रति बहुत सम्मान है। आसन पर आक्षेप लगाना स्वीकार्य नहीं है। इसके लिए मैं क्षमा मांगता हूं।

जोशी ने इस घटना के लिए खेद जताते हुए रेड्डी से आग्रह किया कि वह अपने आचरण के लिए सभापति से क्षमा मांगे। रेड्डी ने खेद जताते हुए कहा मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं था। आसन को निष्प्रभावी बनाने वाला मैं कोई नहीं होता। कल मैं भावुक हो गया था। मैं अपने शब्दों को वापस लेता हूं। मैं खेद जताता हूं। मैं भावुक हूं। आश्वासन देता हूं कि इसकी पुनरावृत्ति नहीं होगी। इसके साथ ही सभापति नायडू ने इस मामले को यहीं समाप्त करने की घोषणा की।

ज्ञात हो कि सोमवार को रेड्डी ने व्यवस्था के प्रश्न का हवाला देते कहा था कि कुछ दिन पहले तेलुगु देशम पार्टी (टीडीपी) के एक सदस्य ने इस सदन में एक आपत्तिजनक मामला उठाया था। उन्होंने कहा था इस मामले को उठाया नहीं जाना चाहिए था। इसे सदन की कार्यवाही से निकाला लाना चाहिए। सभापति नायडू ने इस पर कहा कि यह व्यवस्था के प्रश्न से जुड़ा मुद्दा नहीं है और संबंधित सदस्य उन्हें लिखित में अपनी आपत्ति जता सकते हैं।

उन्होंने कहा यदि कुछ आपत्तिजनक होगा और नियम उसकी अनुमति नहीं देते हैं तो मैं आवश्यक कार्रवाई करूंगा, लेकिन इसके बावजूद रेड्डी बोलते रहे। इसी बीच रेड्डी ने सभापति पर पक्षपातपूर्ण रवैया अपनाने का आरोप लगाया। रेड्डी के आरोपों पर सदन के कुछ सदस्यों ने आपत्ति जताते हुए उनके खिलाफ कार्रवाई की मांग की थी। इस पर सभापति नायडू ने कहा कि उन्हें भी इससे बहुत ठेस पहुंची है और रेड्डी का विचार आसन को निष्प्रभावी बनाने के लिए है। उन्होंने कहा लेकिन मैं आसन को निष्प्रभावी बनाने के इस तरह के प्रयासों के आगे झुकूंगा नहीं।

टीका आ गया है इसका मतलब यह नहीं है कि हम लापरवाह हो जाएं: हर्षवर्धन

नई दिल्ली। केंद्रीय स्वस्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री और इंडियन रेड क्रॉस सोसाइटी के अध्यक्ष डॉ. हर्षवर्धन ने विभिन्न ट्रांसपोर्ट यूनियनों को मास्क तथा साबुन वितरित किए जाने के एक कार्यक्रम की अध्यक्षता की। डॉ. हर्षवर्धन ने इस प्रयास पर प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने कहा, ह्यकोविड-19 महामारी से मुकाबले के लिए की जाने वाली पहलों के क्रम में मास्क वितरित किए जाने के इस प्रयास का हिस्सा बनने से मुझे खुशी हो रही है। यह देश भर में इसी तरह के मास्क वितरण की श्रृखंला का एक हिस्सा है। इंडियन रेड क्रॉस सोसाइटी के प्रयासों का संज्ञान लेते हुए और कोविड से मुकाबले के लिए उपयुक्त एहतियाती उपायों की आवश्यकता पर जोर देते हुए, यहां तक कि टीका विकसित होने के बावजूद, डॉ. हर्षवर्धन ने कहा कि मुझे यह कहते हुए खुशी हो रही है कि भारत ने कोविड रोधी टीके का अपने देश में विकसित किया है और इसे मान्यता मिल गई है। भारत सरकार ने विश्व के सबसे बड़े टीकाकरण अभियान की शुरूआत कर ली है। लेकिन टीका आ गया है इसका अर्थ यह नहीं है कि हम सभी लापरवाह हो जाएँ। बल्कि हम सभी को इस समय भी और भविष्य में भी इससे बचाव के एहतियाती उपायों को जारी रखना होगा। इसी को ध्यान में रखते हुए भारतीय रेड क्रॉस सोसाइटी द्वारा मास्क वितरित किए जाने का अभियान जारी रखना प्रशंसनीय है।

केंद्रीय मंत्री ने कहा मास्क का वितरण मास्क के उपयोग और साबुन का वितरणहाथ की स्वच्छता के महत्व को दशार्ता है। उन्होंने कहा कि सड़कों पर चलने वाले विभिन्न ट्रांसपोर्ट वाहनों के चालक और उनके सहायक देश के विभिन्न भागों में घूमते रहते हैं ऐसे में उनके इस संक्रमण की चपेट में आने की आशंका बनी रहती है। इंडियन रेड क्रॉस सोसाइटी द्वारा मास्क के वितरण से कोविड-19 के संक्रमण से बचने में उन्हें बड़ी सहायता मिलेगी। भारत में कोविड-19 की वर्तमान स्थिति के बारे में बात करते हुए डॉक्टर हर्षवर्धन ने रेखांकित किया कि कोविड-19 की स्थिति में सुधार निरंतर जारी है। उन्होंने कहा कि भारत विश्व के उन देशों में है जहां इस बीमारी से ठीक होने की दर सबसे अधिक है।सक्रिय मामले भी लगातार कम हो रहे हैं और आज तक की ताजा स्थिति के अनुसार इस समय देश में कुल सक्रिय मामले 1.48 लाख हैं। जनवरी 2020 में जहां हमारे पास कोविड-19 की जांच के लिए महज एक प्रयोगशाला थी वहीं इस समय हम 2373 प्रयोगशालाओं में इसकी जांच कर रहे हैं। हमारे पास 1 दिन में 10 लाख से अधिक कोविड-19 की जांच करने की क्षमता आ गई है। हमने अब तक कुल 20 करोड़ कोविड-19 की जांच कर लिए हैं। उन्होंने यह सब 'सरकार के समग्र प्रयास' और 'समाज के समग्र प्रयास' से संभव हुआ है।

जल्द लागू की जाएगी ओटीटी प्लेटफॉर्म के लिए गाइडलाइन: जावड़ेकर

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने कहा है कि ओटीटी प्लेटफॉर्म (ओवर द टॉप) पर दिखाई जाने वाली सामग्री को लेकर लगातार मिल रही शिकायतों और सुझावों के मद्देनजर दिशानिर्देश तैयार किए जा चुके हैं और इन्हें जल्द ही लागू किया जाएगा। सूचना एवं प्रसारण मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने राज्यसभा में शून्यकाल के दौरान यह जानकारी दी है। उन्होंने बताया कि ओटीटी प्लेटफॉर्म पर दिखाई जाने वाली सामग्री को लेकर कई शिकायतें मिल रही हैं और इसके नियमन के बारे में सुझाव भी मिले हैं। इसे एक महत्वपूर्ण विषय बताते हुए जावड़ेकर ने कहा इसके संबंध में दिशानिर्देश तैयार किए जा चुके हैं और जल्द ही उन्हें लागू किया जाएगा।

इससे पहले भाजपा के महेश पोद्दार ने यह मुद्दा उठाते हुए कहा कि कोविड-19 महामारी के दौरान इंटरनेट बेहद उपयोगी ऑनलाइन मंच के रूप में उभरा है और मनोरंजन के लिए ओटीटी प्लेटफार्म की लोगों तक पहुंच बढ़ी है। उन्होंने कहा लेकिन इसमें दिखाई जाने वाली सामग्री की आपत्तिजनक होती है। इस मंच का नियमन किया जाना चाहिए।

शून्यकाल में ही सपा के रामगोपाल यादव ने भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों को सरकार में संयुक्त सचिव के पद पर सीधी नियुक्ति दिए जाने का मुद्दा उठाया।

उन्होंने कहा कि ऐसा होने की वजह से आईएएस अधिकारियों और सिविल सेवा परीक्षाओं के प्रतिभागियों में नाराजगी है। यादव ने यह भी दावा किया कि अब तक इस तरह की गई नियुक्तियों में आरक्षण व्यवस्था का ध्यान नहीं रखा गया। उन्होंने कार्मिक एवं प्रशिक्षण मंत्रालय को इस संबंध में निर्देश दिए जाने की मांग की। राकांपा की वंदना चव्हाण ने कार्बन डाइऑक्साइड का उत्सर्जन घटाने के लक्ष्य में भारत के पीछे रहने का मुद्दा उठाया।

उन्होंने कहा कि इसके लिए विशेषज्ञों ने भारत में वनीकरण को बढ़ा कर दोगुना करने का सुझाव दिया है। वंदना ने मांग की कि इसके लिए सरकार को बजटीय सहयोग बढ़ाना चाहिए और राज्यों को जनभागीदारी के साथ आवश्यक कदम उठाने के लिए कहना चाहिए। द्रमुक के तिरूचि शिवा ने तमिल से जुड़ा मुद्दा उठाया। उन्होंने कहा कि आरटीआई के माध्यम से तमिलनाडु के 39 केंद्रीय विद्यालयों में तमिल का एक भी शिक्षक नहीं होने की जानकारी मिली है। उन्होंने कहा इस स्थिति में स्थानीय विद्यार्थियों को होने वाली समस्याओं का अनुमान लगाया जा सकता है।

शिवा ने तमिल को राज्य में अनिवार्य बनाए जाने की मांग की। अन्नाद्रमुक के गोकुल कृष्णन ने पुडुचेरी के लिए बजटीय अनुदान बढ़ाए जाने की मांग की, वहींकांग्रेस के नीरज डांगी ने कर्मचारी पेंशन योजना से जुड़ा मुद्दा उठाया। तेदेपा सदस्य के रवींद्र कुमार ने विशाखापट्टनम संयंत्र से जुड़ा मुद्दा उठाते हुए मांग की कि कोई भीकदम उठाने से पहले यह ध्यान में रखा जाना चाहिए कि इस इस्पात संयंत्र में हजारों की संख्या में लोग काम कर रहे हैं। उन्होंने मांग की कि आंध्र प्रदेश पुनर्गठन कानून को पूरी तरह लागू किया जाए और आंध्र प्रदेश को विशेष राज्य का दर्जा दिया जाए। इनके अलावा टीआरएस के बंदा प्रकाश और बीजद के डॉ सस्मित पात्रा ने भी अपने अपने मुद्दे उठाए।

newsdesk@motherlandvoice.org
editor@motherlandvoice.org

द्वारका जिला पुलिस द्वारा नाबालिग बच्चो से चोरी कराने वाले बड़े आपराधिक गैंग का भंडाफोड़

» विजय गौड़ विशेष संवाददाता

नई दिल्ली। द्वारका में जिला पुलिस कर्मचारियों को खुफिया जानकारी विकसित करने और अपराधियों के बारे में जानकारी एकत्र करने और साथ ही क्षेत्र में घूमने वाले संदिग्ध अजनबियों और दिल्ली पुलिस की ई-बीट बुक के माध्यम से संदिग्ध व्यक्तियों की पुष्टि करने के लिए नियमित रूप से प्रेरित किया जा रहा है। उन्हें सिविल कपड़ों में गश्त करने और जेल में बंद अपराधियों, जो फिर से अपराध में शामिल हैं, पर नजर रखने के लिए भी निर्देशित किया गया है। 15 जनवरी को एक बच्चा शुक्रवार साप्ताहिक बाजार, सेक्टर -8, द्वारका, नई दिल्ली के क्षेत्र में संदिग्ध स्थिति में पाया गया था। पूछताछ पर, बच्चे ने एक गिरोह द्वारा मोबाइल फोन चोरी करने के लिए जबरदस्ती उसका इस्तेमाल किए जाने की एक कहानी का खुलासा किया। उक्त बच्चे को चाइल्ड केयर एंड प्रोटेक्शन एक्ट के तहत उचित परामर्श के लिए तुरंत चाइल्ड वेलफेयर समिति , डिस्ट्रिक्ट साउथ वेस्ट, निर्मल छाया कॉम्प्लेक्स हरि नगर, जेल रोड में पेश किया गया। काउंसलिंग के दौरान, बच्चे ने कहा कि विशाल जो अपने पैतृक ग्राम महाराजपुर जिला झारखंड में नौकरी देने के बहाने उन्हें दिल्ली लेकिन मोबाइल चोरी करने

के अपराध के लिए मजबूर किया । उन्होंने यह भी कहा कि इस तरह के अपराध में कुछ अन्य मासूम बच्चों का इस्तेमाल किया जा रहा है। तदनुसार मामला दर्ज किया गया था। मामले की गंभीरता को देखते हुए सुनील कुमार, एसीपी द्वारका की देखरेख में इंस्पेक्टर राकेश डडवाल, एसएचओ द्वारका के नेतृत्व में इंस्पेक्टर सतबीर, एसआई मनमोहन सिंह, एसआई मेहरबलाम, एसआई बिक्रमजीत सिंह, महिला एसआई ज्योति यादव, एएसआई सुभाष , एचसी प्रवीण, एचसी प्रवीण, एचसी ओमप्रकाश, कॉन्स्टेबल अन्नू, झबर मल और शक्ति, गठित टीम में शामिल किया गया । टीम पूरे 05 दिनों और रात के लिए त्वरित कार्रवाई में जुट गई। जांच के दौरान, ख्याला और नांगलोई क्षेत्र में ठिकाने की पहचान की गई। निरंतर क्षेत्र की जांच के साथ-साथ लगभग 10 मोबाइल नंबरों की तकनीकी निगरानी के परिणामस्वरूप, एक और नाबालिग बच्चा उम्र 8 वर्ष बचा लिया गया, जो गिरोह द्वारा पिक-पॉकेट के लिए भी जबरदस्ती इस्तेमाल किया गया था। इसके बाद, इस मामले में दो संचालकों शेखिलदार और बिहारी चौधरी को ख्याला क्षेत्र से बच्चे के मामले में गिरफ्तार किया गया। उपरोक्त दोनों हैंडलर्स से पूछताछ में पता चला कि यह एक बड़ा और सुव्यवस्थित गैंग है जिसने झारखंड राज्य में गरीब परिवार से नाबालिगों को काम पर रखा और उन्हें प्रशिक्षण देकर अपराध की दुनिया में प्रवेश कराया जाता है आगे की जांच के दौरान, गिरोह के अन्य सदस्य जो का हिस्सा थे और दिल्ली क्षेत्र में बच्चों की तस्करी कर रहे थे, अमर सिंह उर्फ ताऊ और कन्हैया कुमार को भी पकड़ा ह्न साथ में दो ऑटो रिक्शा भी जब्त किया गया जो अपराध में उपयोग किया गया था। जांच से पता चला कि गिरोह का प्रबंधन और नियंत्रण विशाल महतो द्वारा किया जाता था, जो झारखंड के उनके रिश्तेदारों और परिवार के सदस्यों द्वारा सहायता प्रदान करता था। पूरे रैकेट के मुखिया विशाल महतो और उनके सहयोगी सुनील लगातार नांगलोई, ख्याला, भजनपुरा, खजूरी और लोनी क्षेत्र से अपनी स्थिति और स्थान बदल रहे हैं। तत्पश्चात, तकनीकी निगरानी के अनुसार यह पाया गया कि विशाल महतो ने दिल्ली छोड़ दिया और झारखंड के लिए आगे बढ़ा। तुरंत एसआई बिक्रमजीत के नेतृत्व में झारखंड छत्तीसगढ़ के क्षेत्र में साइबर अपराध की जांच करने वाली पुलिस स्टेटिक टीम को सक्रिय किया गया। अभियुक्तों और स्थान की जानकारी एसआई बिक्रमजीत के साथ साझा की गई । एसआई बिक्रमजीत की टीम ने अपरहणकर्ता को उनके पैतृक गांव नयाटोला, कल्याणी, जिला झारखंड मध्य रात्रि में गिरफ्तार कर पांच दिन की ट्रांजिट रिमांड मिलने के बाद आरोपी को दिल्ली लाया गया। दिल्ली पहुंचने के बाद, आरोपी विशाल महतो के मामले की तर्ज पर, दो और नाबालिग बच्चों, जिनकी उम्र 7 वर्ष और उम्र 10 वर्ष थी , उन्हें भजनपुरा के इलाके से सह-सहयोगियों महेंद्रमोतो (जीजा) और चंदमुहातो(भाई) के कब्जे से छुड़ाया गया था।आरोपियों के कब्जे से 14 एप्पल, सैमसंग, वीवो, ओप्पो, जियोनी, मोटोरोला, आदि के महंगे मोबाइल फोन बरामद किए गए हैं। चोरी हुए फोन की औसत बिक्री राशि प्रति माह लगभग 5-6 लाख है। चुराए गए फोन का लाभार्थी भी पुलिस की निगरानी में है और सभी पहलुओं की जांच की जा रही है।

भारतीय समता पार्टी की मीटिंग सिटी पार्क बल्लभगढ़ मे संपन्न

» ह्रदयेश कुमार

फरीदाबाद। भारतीय समता पार्टी की मीटिंग का कार्यक्रम सिटी पार्क बल्लभगढ़ में हुआ पार्टी की अध्यक्षता की, एस्कोर्ट से रिटायर रामेश्वर जीने संभाली पार्टी की मीटिंग में बिशेषकर शिक्षा स्तर पर जोर दिया बिना पढ़ाई के आप अपना हक भी नहीं लें सकते,ई, इसलिए सबका पढ़ना-लिखना सीखो आज हम आपको बताते है कि जैसे जैसे लोगो की जागरूकता बढ़ती जाएगी वैसे वैसे देश की हालात में सुधार होगा , आपका विकास तभी होगा जब आप सभी अपना विकास खुद करेंगे ,, सरकारों से भीख मत मांगिए अपने अधिकारों छीनिये छीन ना आपका अधिकार भी है तो छीनिऐ लढिऐ और लड़ना बहुत जरूरी है तभी आपका विकास होगा ,आपको अपनी लड़ाई लड़नी ही होगी,तब ही ये आपकी लड़ाई देश को गतिशील बनायेंगी शिक्षा का सही मायने में ,अर्थ पूरा होगा तभी अपनी भूमिका को निभाना अपना आधार वनाना वहुत जरुरी भी है। क्योंकि भारतीय समता पार्टी की लड़ाई एक दिन। देश की लड़ाई बनेंगी ,जब एक एक आदमी अपने अधिकारों को लेकर पार्टी में जुड़ेगा हमारी पार्टी एक एक मोलिक अधिकारों को जनता को दिलायेंगे आइए भारतीय समता पार्टी के साथ कंधा से कंधा मिलाकर चलिए आज ही से। हम अपने हक की लड़ाई में भारतीय समता पार्टी में शामिल होते हैं और हम अपना एक एक हक लेकर रहेंगे, हमारी पार्टी भी आपको एक एक हक दिलवा कर रहेगी। पार्टी में उपस्थित भारतीय समता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष हरियाणा माता प्रसाद शिरोमणि, प्रदेश उपाध्यक्ष राकेश कुमार छौंकर, प्रदेश महासचिव सुशील कुमार, मिश्रा जी ,महिला मोर्चा प्रदेश अध्यक्ष हरियाणा हेमलता गोयल ,प्रदेश उपाध्यक्ष डॉ महेंद्र भारद्वाज महिला मोर्चा प्रदेश उपाध्यक्ष एडवोकेट नीरज भारद्वाज, प्रदेश प्रवक्ता सूभेनदर सिंह चौधरी, प्रदेश उपाध्यक्ष युवा मोर्चा अनुज कोशिश, प्रदेश उपाध्यक्ष पी सी शर्मा, महिला मोर्चा जिला अध्यक्ष नीलम जोशी, महिला मोर्चा प्रदेश प्रवक्ता मीनाक्षी चौधरी, जिला उपाध्यक्ष डॉक्टर के प्रदेश कोषाध्यक्ष वीरेन्द्र सिंह भाटी मंडल अध्यक्ष चफरीदाबाद, नरेनंदर सिंह चौधरी, गौरव टौगर जिला उपाध्यक्ष फरीदाबाद उपस्थित रहे।

संक्षिप्त समाचार

सरकारी बैंकों के निजीकरण के विरोध में श्रमिक संगठनों ने किया दो दिन की हड़ताल का आह्वान

नई दिल्ली। बैंक कर्मचारियों के नौ संगठनों का शीर्ष निकाय यूनाइटेड फोरम ऑफ बैंक यूनियन्स (यूएफबीयू) ने सार्वजिक क्षेत्र के दो बैंकों के प्रस्तावित निजीकरण के विरोध में मंगलवार को 15 मार्च से दो दिन की हड़ताल का आह्वान किया। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने पिछले सप्ताह अपने बजट भाषण में विनिवेश कार्यक्रम के तहत सार्वजनिक क्षेत्र के दो बैंकों के निजीकरण की घोषणा की। सरकार पहले ही 2019 में आईडीबीआई बैंक में अपनी बहुलांश हिस्सेदारी एलआईसी को बेचकर उसका निजीकरण कर चुकी है। साथ ही पिछले चार साल में सार्वजनिक क्षेत्र के 14 बैंकों का विलय किया गया है। ऑल इंडिया बैंक एम्प्लॉयज एसोसिएशन (एआईबीईए) के महासचिव सीएच वेंकटचलम ने कहा कि यूएफबीयू की बैठक में बैंकों के निजीकरण के सरकार के निर्णय का विरोध करने का फैसला किया गया। उन्होंने कहा, ह्यह्यबैठक में केंद्र सरकार के बजट में सुधारों को लेकर की गयी विभिन्न घोषणाओं पर चर्चा हुई। इसमें आईडीबीआई बैंक और सार्वजनिक क्षेत्र के दो बैंकों का निजीकरण, बैड बैंक की स्थापना, एलआईसी में विनिवेश, एक साधारण बीमा कंपनी का निजीकरण, बीमा क्षेत्र में 74 प्रतिशत तक एफडीआई (प्रत्यक्ष विदेशी निवेश) की मंजूरी और सार्वजनिक उपक्रमों में हिस्सेदारी बिक्री आदि शामिल हैं।ह्न वेंकटचलम के अनुसार बैठक में यह कहा गया कि ये उपाय प्रतिगामी और कर्मचारियों के हितों के खिलाफ हैं। इसीलिए इसका विरोध करने की जरूरत है।

आत्मनिर्भर भारत चैलेंज का हिस्सा बना देसी ट्विटर 'कू', पीयूष गोयल की हुई एंट्री

नई दिल्ली। सोशल मीडिया के जमाने में कई प्लेटफार्म के बीच आत्मनिर्भर भारत एप्लीकेशन चैलेंज में हिस्सा लेने वाली माइक्रो ब्लॉगिंग साइट 'कू' का लगातार रफ्तार पकड़ रही है। मंगलवार को केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल ने जानकारी दी कि वो भी अब इस प्लेटफॉर्म पर जुड़ गए हैं। मंत्री की ओर से अपील की गई है कि लोग भी इस देसी ऐप से जुड़ें। आपको बता दें कि कू को देसी ट्विटर कहा जा रहा है, जो लगातार पॉपुलर हो रहा है। खास बात ये है कि ये करीब दस भारतीय भाषाओं में भी है। यानी अंग्रेजी, हिन्दी के अलावा ये एप तमिल, मराठी, बांग्ला और अन्य कई भाषाओं में है। पीयूष गोयल से पहले भी कई केंद्रीय मंत्री, केंद्रीय मंत्रालयों और केंद्र सरकार के अन्य विभागों ने इस देसी ऐप पर अपना अकाउंट बनाया है और लोगों से जुड़ने की अपील की है। बता दें कि पिछले साल भारत सरकार ने आत्मनिर्भर भारत एप चैलेंज लॉन्च किया था, जिसमें कू ने भी हिस्सा लिया था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी मन की बात में इसकी तारीफ की थी। गौरतलब है कि इन दिनों भारत सरकार और ट्विटर के बीच काफी रार देखने को मिल रही है। ट्विटर को कई बार भारत सरकार की ओर से नोटिस भी भेजे गए हैं। इस बीच कू को जिस तरह से प्रसिद्धि मिल रही है, साथ ही सरकार के कई बड़े मंत्री इस ओर बढ़ रहे हैं तो ट्विटर की चिंताएं भी बढ़ सकती हैं।

सीमा पर तैनाती से पहले ट्रेन्ड के-9 डॉग कर रहे सैनिकों का कोरोना टेस्ट

नई दिल्ली। वैश्विक महामारी कोरोना वायरस का प्रकोप अब भी जारी है। हालांकि रोजाना आने वाले मामलों में गिरावट दर्ज की गई है। भारत में भी कोरोना मरीजों की संख्या में काफी कमी देखने को मिली है, लेकिन इसके बावजूद ऐहतियात बरतना काफी जरूरी है। फिलहाल देश में कोरोना वॉरियर्स को वैक्सीन मुहैया कराई गई है, जिसे बाद में धीरे-धीरे सभी के लिए शुरू किया जाएगा। वहीं सेना के जवानों के लिए भी खास तरह के के-9 कुत्तों को ट्रेंड किया गया है, जो कि उनका कोरोना टेस्ट कर रहे हैं। के-9 कुत्तों को तरह से ट्रेनिंग दी गई है कि वे गंध के जरिए कोरोना वायरस की पहचान कर सकते हैं। दरअसल सीमा पर तैनाती से पहले इन खास तरह के कुत्तों के जरिए जवानों का कोरोना टेस्ट कराया जा रहा है, जिसके बाद उन्हें सीमा पर भेज दिया जाता है। इस बीच, भारत में कोरोना वायरस के दैनिक नए मामले इस महीने दूसरी बार 10,000 से कम आए हैं जिससे संक्रमितों की कुल संख्या 1,08,47,304 हो गई, जबकि एक दिन में जान गंवाने वाले संक्रमितों की संख्या लगातार चौथे दिन 100 से कम रही।
केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने मंगलवार सुबह आठ बजे तक के आंकड़ों के हवाले से बताया कि बीते 24 घंटे में 9110 नए मरीजों में संक्रमण की पुष्टि हुई है, जबकि 78 संक्रमितों की मौत हुई है। अबतक 1,55,158 मरीजों की इस वायरस से जान जा चुकी है।

मिट्टी फाउंडेशन की पहल अब छात्रों को कैरियर काउंसलिंग के लिए नहीं करना होगा इंतजार

» मदरलैंड संवाददाता

नई दिल्ली। सरस्वती विद्या धन समिति तथा डिस्ट्रिक्ट लीगल सर्विस अथॉरिटी (ईस्ट) के संयुक्त तत्वाधान में सोमवार को यमुना खादर की झुग्गी झोपड़ियों में बच्चों के लिए ह्यगुड टच, बैड टचह्न जागरुकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में इलाके के 150 से अधिक बच्चों ने भाग लिया। इस अवसर पर संस्था के अध्यक्ष मृदुल अवस्थी ने बच्चों को पुस्तकें, स्टेशनरी और मिठाई वितरित की। मृदुल अवस्थी ने बताया कि कार्यक्रम के तहत वंचित वर्ग के बच्चों को ऑडियो विजुअल के माध्यम से गुड टच और बैड टच की जानकारी दी गई। उन्होंने बताया कि इस कार्यक्रम का उद्देश्य बच्चों में आत्मविश्वास बढ़ाना था ताकि हम बच्चों के मन से डर दूर करें और उन्हें ना कहना सिखाएं । अगर उन्हें कोई गलत तरीके से छूने की कोशिश करे तो वे ऐसा करने वालों से डरे नहीं और तुरंत शोर मचाएं। डिस्ट्रिक्ट लीगल सर्विस अथॉरिटी (ईस्ट) की सचिव हर्षिता मिश्रा ने इस कार्यक्रम की अध्यक्षता की। उन्होंने बताया कि बच्चों को समाज में किस तरह सावधान रहने की जरूरत है ।उन्होंने बच्चों के अभिभावकों से भी बात की और बोला कि बच्चों के बदलती व्यवहार के बारे में उन्हें ज्यादा जानकारी रखनी चाहिए। बच्चों के साथ ऐसा व्यवहार रखें कि वह हर बात आपसे शेयर करें। कार्यक्रम में यमुना खादर से कांता प्रसाद, सामाजिक कार्यकर्ता सुश्री रेनू सिंह, मोनू यादव , नरेश आदि उपस्थित रहे। बारहवीं या ग्रेड्यूशन की पढ़ाई करने के बाद छात्रों को अपने कैरियर मार्गदर्शन के लिए किसी के ऊपर निर्भर रहने की जरुरत नहीं है। सामाजिक क्षेत्र में काम करने वाली संस्था आवर मिट्टी फाउंडेशन ने छात्रों को इन समस्याओं को ध्यान में रखते हुए मुफ्त में जर्नलिज्म, लॉ, कंप्यूटर साइंस, एविएशन, पायलट ट्रेनिग, सेवा क्षेत्र, डिजिटल मार्केटिंग जैसे तमाम आधुनिक क्षेत्रों में जहां छात्र कैरियर बनाना चाहते है उनको फ्री में काउंसलिंग करने का बीड़ा उठाया है।

के एस एम पब्लिक स्कूल में कम्पटीशन प्रतियोगिता का आयोजन

» मदरलैंड संवाददाता

नई दिल्ली। आया नगर वार्ड से पूर्व निगम प्रत्याशी जगदीश लोहिया के एस एम पब्लिक स्कूल में ड्राइंग, जी.के ,डांस और ड्रेस कम्पटीशन का आयोजन किया गया। जिसमें बतौर मुख्य अतिथि जगमोहन महलावत अध्यक्ष जिला महरौली उपस्तिथि रहे। साथ में रविन्द्र चौधरी आया नगर मंडल अध्यक्ष भी आए के एस एम पब्लिक स्कूल घिटोरनी की प्रिंसिपल जे.वी.लोहिया व अन्य गणमान्य व्यक्ति ने प्रतियोगिता में भाग लेने वाले बचचो को आशीर्वाद दिया। प्रथम, द्वितीय और तृतीय आने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया ।सभी बच्चों को संबोधित कर उत्साहवर्धन किया व आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया।

कांग्रेस नेता अधीर रंजन चौधरी को शाह का जबाव, मैं उस कुर्सी पर नहीं बैठा

नई दिल्ली। लोकसभा में मंगलवार को कांग्रेस नेता अधीर रंजन चौधरी ने गृहमंत्री शाह पर रवींद्रनाथ टैगोर का अपमान करने का आरोप लगाया। जिसका गृह मंत्री अमित शाह ने जवाब देकर कहा कि अधीर रंजन जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि जब मैं विश्वभारती और शांति निकेतन में गया,तब गुरुदेव टैगोर की कुर्सी पर बैठा। मेरे पास विश्वभारती के उपकुलपति का पत्र है जिसमें मैंने स्पष्टता मांगी है कि सभी चीज की जांच करके बताइए कि कहां पर मैं बैठा हूं।

गृह मंत्री ने बताया उन्होंने स्पष्ट किया है कि ऐसी कोई घटना नहीं हुई है। जहां पर मेरे बैठने का जिक्र है, वहां एक खिड़की है, जहां सभी के बैठने की व्यवस्था है। उसी स्थान पर पूर्व राष्ट्रपति भी बैठीं थीं, प्रणब दा भी बैठे थे, राजीव गांधी भी बैठे थे, मैं भी वहीं बैठा हूं। उन्होंने कहा कि बांग्लादेश की प्रधानमंत्री जब आईं तब उन्होंने स्मरिका के अंदर उसी स्थान पर बैठकर अपनी टिप्पणियां लिखी। मेरा इतना ही कहना है कि इस सदन में जब कभी हम बात करते हैं तब बात करने से पहले तथ्यों को जांचना चाहिए, परखना चाहिए। अगर हम सोशल मीडिया से उठाकर हम यहां में रख दें,तब इस सदन की गरिमा को क्षति पहुंचती है।

उन्होंने कहा कि मैं तो उस कुर्सी पर नहीं बैठा, लेकिन मेरे पास दो फोटो हैं, जिसमें एक पर जवाहरलाल नेहरु उस कुर्सी पर बैठे दिख रहे हैं। दूसरी फोटो में राजीव गांधी टैगोर साहब के सोफे पर बैठकर चाय पीते दिख रहे हैं। उन्होंने कहा कि जो इस सदन में उपस्थित नहीं होता है उसके नाम का उल्लेख नहीं किया जाता है। उन्होंने कहा कि जेपी नड्डा जी के नाम का भी उल्लेख किया है। मैंने नड्डा जी के भाषण को पूरा सुना है। मैं चैलेंज करता हूं कि नड्डा जी ऐसा बोले हैं,तब उसे रिकॉर्ड पर रखें। जो उन्होंने कल कहा है, ऐसा नड्डा जी कहीं नहीं बोले हैं। इस दौरान गृह मंत्री ने लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला से शांति निकेतन के उपकुलपति का पत्र और फोटो को सभापटल में रखने का अनुमति मांगी।

रेलवे ने रिकॉर्ड समय पर पहुंचाया सामान, रिकॉर्ड 119.79 मिलियन टन सामान की ढुलाई

नई दिल्ली। कोरोना संकट के बीच रेलवे कई सीमाओं और नए नियम-शर्तों के साथ ट्रेनों का परिचालन कर रहा है। सीमित संख्या में यात्री ट्रेनों के चलाए जाने से मालगाड़ियों के लिए ट्रैक खाली मिल रहा है। पहले के मुकाबले ज्यादा सामान एक से दूसरी जगह तक पहुंचाया जा रहा है। इससे बाजारों में सामान की उपलब्धता सुनिश्चित होने के साथ-साथ महंगाई को काबू करने में मदद मिल रही है। कारखानों को कच्चा माल और फैक्ट्रियों में तैयार सामान को बाजारों तक कम समय में पहुंचाना संभव हो पा रहा है। रेलवे ने जनवरी 2021 में रिकॉर्ड सामान की ढुलाई की। रेलवे के आंकड़ो के मुताबिक, जनवरी 2021 में रिकॉर्ड 119.79 मिलियन टन सामान की ढुलाई की गई। इससे पहले मार्च 2019 में रेलवे ने 119.74 मिलियन टन सामान की ढुलाई की थी। पिछले कुछ महीने के आंकड़ों को देखकर रेलवे लगातार मालढुलाई के नए कीर्तिमान बना रहा है। रेलवे 1-8 फरवरी के बीच 30.54 मिलियन टन सामान को एक से दूसरे स्थान तक पहुंचा चुका है। इस 30.54 मिलियन टन में से 13.61 मिलियन टन कोयला, 4.15 मिलियन टन लौह अयस्क, 1.04 मिलियन टन अनाज, 1.03 मिलियन टन उर्वरक, 0.96 मिलियन टन खनिज तेल और 1.97 मिलियन टन सीमेंट है।

फ्रेट लोडिंग में अपना शेयर बढ़ाने के लिए भारतीय रेलवे कई आकर्षक छूट की पेशकश कर रहा है। यही नहीं, भारतीय रेलवे अपने मौजूदा और पुराने ग्राहकों के लिए कई इंसेंटिव भी दे रहा है।

पांच समुदायों को अल्पसंख्यक दर्जा देने से जुड़ी लंबित याचिकाओं पर केंद्र जवाब दे

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने उस याचिका पर केंद्र से जवाब मांगा है,इमसें पांच समुदायों मुस्लिम, ईसाई, सिख, बौद्ध और पारसी- को उन राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में भी अल्पसंख्यक दर्जा देने संबंधी अधिसूचना के खिलाफ विभिन्न उच्च न्यायालयों में लंबित याचिकाओं को शीर्ष अदालत में स्थानांतरित करने का आग्रह किया गया है, जहां वे अल्पसंख्यक नहीं हैं। प्रधान न्यायाधीश एसए बोबडे, न्यायमूर्ति एएस बोपन्ना और न्यायमूर्ति वी रामसुब्रमण्यम की पीठ ने गृह मंत्रालय, विधि एवं न्याय मंत्रालय और अल्पसंख्यक मामलों के मंत्रालय को नोटिस जारी किया है। गौरतलब है कि राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग कानून, 1992 के प्रावधान 2(सी) की संवैधानिक वैधता को चुनौती देने वाली याचिकाएं दिल्ली, मेघालय और गुवाहाटी उच्च न्यायालयों में लंबित हैं। इसी कानून के तहत सरकार ने 23 अक्टूबर, 1993 को अधिसूचना जारी कर मुसलमान, ईसाई, सिख, बौद्ध और पारसी समुदायों को देश भर में अल्पसंख्यक घोषित किया था।

याचिका में आरोप लगाया गया कि स्थिति ऐसी बन गई कि पंजाब में जहां अधिसंख्य आबादी सिखों की है, वहीं जम्मू-कश्मीर में बहुसंख्य मुस्लिम आबादी को अल्पसंख्यकों का लाभ मिल रहा है। शीर्ष अदालत मामले में फैसले के लिए उच्च न्यायालयों में लंबित सभी याचिकाओं को शीर्ष अदालत में स्थानांतरित करने संबंधी अधिवक्ता और भाजपा नेता अश्विनी उपाध्याय की याचिका पर सुनवाई कर रही थी। उपाध्याय की तरफ से वरिष्ठ अधिवक्ता सीएस वैद्यनाथन न्यायालय में पेश हुए. अधिवक्ता अश्विनी कुमार दुबे के माध्यम से दायर याचिका में कहा गया है कि विभिन्न याचिकाओं और परस्पर विरोधी विचारों से बचने के लक्ष्य से उच्चतम न्यायालय में स्थानांतरण याचिका दायर की गई है।

अरुण साहू संसद सुरक्षा की व्यवस्था के एक अनमोल रत्न

» मदरलैंड संवाददाता

नई दिल्ली। संसद पर हमले के बाद सुरक्षा बल के आधुनिकीकरण की बात आई तो एक सक्षम अधिकारी के रूप में अरुण कुमार साहू का नाम सर्वोपरि था इसीलिए आधुनिकीकरण का महत्वपूर्ण दायित्व इन्हे दिया गया अपने दायित्वों के प्रति निष्ठां एवं समर्पण के लिए साहू की सेवाएं अनुकरणीय रूप में याद की जायेगी इस बात का उल्लेख करते हुए संसद सुरक्षा बल के निदेशक भुवन चंद्र जोशी उपमहानिरीक्षक पुलिस ने साहू के 36 वर्ष के लम्बे सेवाकाल की उनके अभिनंदन समारोह में मुक्त कंठ से प्रशंशा की और संयुक्त निदेशक पद से सेवानिवत्ति के बाद की नयी पारी के प्रति पुरे विभाग की ओर शुभकामनाएं दी ओर विभागीय व्यवस्था का एक अनमोल रत्न बताया ह्न राजीव शर्मा विशेष निदेशक राज्य सभा सचिवालय सुरक्षा , बी के राय निदेशक स्किल्ल डेवलपमेंट , वरिष्ठ अधिकारी कृष्ण प्रसाद बालियान ने भी साहु की कार्य दक्षता, मानवीयता, साहसी सोच , मधुर भाषी तथा मित्रवत व्यक्तित्व के स्मरणों का अपने भाषण में विशेष उल्लेख किया ह्न कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ पत्रकार एवं महासचिव भागीदारी जन सहयोग समिति ने किया तथा कार्यक्रम का संयोजन सुशांत दास समाजसेवी ने किया ह्नइस अवसर पर रविन्द्र प्रधान, गजेन्द्र सामन्त, शरत देहूरि, बरोदा कृष्ण रथ, अशोक

प्रधान, आनंद ओझा एबं सहयोगी दयानंद, प्रदीप राय, कृष्ण प्रसाद बालियन, अजय ठाकुर, दीपक परमार एवं उड़ीसा परिवार से वरिष्ठ पदों पर आसीन अनेकों अधिकारी गण उपस्थित थे ।

यमुना खादर की झुग्गी-झोपड़ी में बच्चों को गुड टच बैड टच का भाव समझाया

» मदरलैंड संवाददाता

नई दिल्ली। सरस्वती विद्या धन समिति तथा डिस्ट्रिक्ट लीगल सर्विस अथॉरिटी (ईस्ट) के संयुक्त तत्वाधान में यमुना खादर की झुग्गी झोपड़ियों में बच्चों के लिए गुड टच बैड टच जागरुकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में इलाके के 150 से अधिक बच्चों ने भाग लिया। इस अवसर पर संस्था के अध्यक्ष मृदुल अवस्थी ने बच्चों को पुस्तकें, स्टेशनरी और मिठाई वितरित की। मृदुल अवस्थी ने बताया कि कार्यक्रम के तहत वंचित वर्ग के बच्चों को ऑडियो विजुअल के माध्यम से गुड टच और बैड टच की जानकारी दी गई। उन्होंने बताया कि इस कार्यक्रम का उद्देश्य बच्चों में आत्मविश्वास बढ़ाना था ताकि हम बच्चों के मन से डर दूर करें और उन्हें ना कहना सिखाएं । अगर उन्हें कोई गलत तरीके से छूने की कोशिश करे तो वे ऐसा करने वालों से डरे नहीं और तुरंत शोर मचाएं। डिस्ट्रिक्ट लीगल सर्विस अथॉरिटी (ईस्ट) की सचिव हर्षिता मिश्रा ने इस कार्यक्रम की अध्यक्षता की। उन्होंने बताया कि बच्चों को समाज में किस तरह सावधान रहने की जरूरत है । कार्यक्रम में यमुना खादर से कांता प्रसाद, सामाजिक कार्यकर्ता रेनू सिंह, मोनू यादव, नरेश आदि उपस्थित रहे।

मुसलमान नेताओं को हमेशा आगे बढ़ाती रहीं हैं कांग्रेस: बिलाल खां

» अफाक खान

रामपुर। अल्पसंख्यक कांग्रेस की ओर से महाराष्ट्र के पूर्व सीएम स्व. डा. अब्दुल रहमान अन्तुले के जन्मदिन पर उनकी याद में जिला अस्पताल के वरिष्ठ चिकित्सक डा. टीपी सिंह, डा. रमेश गुप्ता, डा. आरके कांटपाल, डा. एके श्रीवास्तव, डा. भरत सिंह, डा. अक्षय सिंह, डा. दशरथ सिंह, डा. जावेद खां, डा. सेराज अहमद आदि को शाल पहना कर सम्मानित किया गया। इस मौके पर जिलाध्यक्ष धमेन्द्र देव गुप्ता ने कहा कि कांग्रेस ने हमेशा मुसलमानों को सम्मान दिया हैं। अल्पसंख्यक कांग्रेस के शहर अध्यक्ष बिलाल खां ने कहा कि कांग्रेस ने मुसलमान नेताओं को हमेशा आगे बढ़ाने का काम किया हैं। कांग्रेस सिर्फ विकास में विश्वास रखती है ।इस मौके पर नोमान खां, मामून शाह खां, आरिफ खां एड, दिव्यांश सिंघल, अकरत सुल्तान, रहमान अली, जिवेन्द्र गंगवार, शहरोज मंसूरी, सरफराज, पप्पू खां, शहजादी खान, नगीना खलील, मुसकान शकील, आलिया बी, सफीना बी आदि मौजूद थे।

संयुक्त उद्योग व्यापार मंडल के राजीव मांगलिक बने प्रदेश उपाध्यक्ष

» मदरलैंड संवाददाता

रामपुर। पउप्र संयुक्त उद्योग व्यापार मंडल की बैठक का आयोजन राजीव मांगलिक के आवास पर प्रदेश अध्यक्ष घनश्याम दास की अध्यक्षता में किया गया। बैठक में जीएसटी में आ रहीं समस्याओं तथा बजट में बार-बार जीएसटी में नये-नये कानून बनाने पर 28 फरवरी को दिल्ली में जंतर मंतर पर विशाल प्रदर्शन की रणनीति बनाई गई। इसके अलावा केन्द्र सरकार को हर जिले से ज्ञापन भेजे जायेंगे जिसमें व्यापारियों को कोरोना काल में हुए नुकसान मे तीन महीने की बिजली के बिल माफ करने, बैंकों का तीन महीनों का ब्याज माफ किये जाने, तीन महीने का बच्चों की स्कूल फीस माफ किये जाने, तथा महीने की ईएमआई सरकार द्वारा खत्म किये जाने की मांग की जायेगी। 60 साल से ऊपर वाले व्यापारियों को तुरन्त पेंशन दिये जाने की भी मांग रखी जायेगी। इस मौके जिलाध्यक्ष पीयूष कुमार जिंदल ने कई सदस्यों को सदस्यता ग्रहण कराई। बैठक में संगठन का विस्तार करते हुए अनुज कुमार सक्सैना को जिला उपाध्यक्ष, आशुतोष गुप्ता को जिला मंत्री, गौरव अग्रवाल को जिला मंत्री, अमि ठाकुर को जिला मंत्री, राजीव गुप्ता को जिला उपाध्यक्ष, रूपेश अग्रवाल को जिला मंत्री बनाया गया। प्रदेश अध्यक्ष घनश्याम दास गर्ग ने व्यापार मंडल में राजीव मांगलिक की सक्रियता को देखते हुए उन्हे प्रदेश उपाध्यक्ष नियुक्त किया हैं। इस मौके पर रामेन्द्र गुप्ता, वीरेश सिंघल, महेश जुनेजा, बलजीत सिंह, संजीव अग्रवाल, देवेश गुप्ता, आशुतोष गुप्ता, अमित ठाकुर, अमित सहगल, गौरव अग्रवाल, मनीष कथूरिया, मधु मांगलिक, शब्बीर अली, राजीव गुप्ता आदि मौजूद थे।

संक्षिप्त समाचार

रामपुर के सीवीओ को भेजा जायेगा कारण बताओ नोटिस: डा. विनोद

मदरलैंड संवाददाता, रामपुर। मुरादाबाद में आयोजित बैठक में शामिल न होने पर अपर निदेशक गेड-2 डा. विनोद कुमार ने रामपुर के मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी को कारण बताओ नोटिस भेजने की बात कहीं हैं। पिछले दिनों मीट फैक्ट्री में तैनात पशु चिकित्सक की शासनादेशों की बख्यिा उड़ाते हुए की गई तैनाती पर अपर निदेशक ग्रेड-2 डा. विनोद कुमार ने कहा था कि पूरे मामले की जानकारी लेकर डायरेक्टर को बताया जायेगा। उन्होने पांच फरवरी को इसी प्रकरण को लेकर मुरादाबाद में बैठक बुलाई थी लेकिन उक्त बैठक में रामपुर के मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी नहीं पहुंचे जिसपर नाराजगी व्यक्त करते हुए अपर निदेशक ने बताया कि रामपुर के सीवीओ को कारण बताओ नोटिस भेजा रहा हैं। यदि कारण बताओ नोटिस को जवाब संतोषजनक नहीं पाया गया तो विभागीय कार्रवाई की जायेगी। डा. विनोद कुमार ने बताया कि चिकित्सक की शासनादेशों की धज्जियां उड़ाते हुए की गई तैनाती के मामले की जानकारी लखनऊ स्थित निदेशालय में दे दी गई हैं।

भाजपा सरकार नफरत फैला रहीं हैं: गुड्डू खां

मदरलैंड संवाददाता, रामपुर। उप्र कांग्रेस कमेटी के सदस्य व पूर्व प्रत्याशी अरशद अली खां गुड्डू ने मासिक बैठक में बोलते हुए कहा कि भाजपा सरकार नफरत पर परवान चढ़ रहीं हैं जिसका सबूत हमें हर दिन देखने को मिल रहा हैं। उन्होने कहा कि जब से देश में भाजपा सत्ता में आई हैं देश में महंगाई दिन ब दिन बड़ी हैं और अब भी बढ़ रहीं हैं। देश में युवाओं के लिए रोजगार के कोई अवसर नहीं हैं युवा मामूली नौकरी के लिए भी दर-दर की ठोकरे खा रहें हैं। आज पेट्रोल व डीजल की कीमतें भी सातवें आसमान पर हैं। देश की जनता अपने वाहनों को खड़ा कर साईकिल से चलाने को मजबूर हैं। देश में बेरोजगारी दर बढ़ती ही जा रहीं हैं सरकार इस दर को कम करने में असफल साबित हुई हैं। कहा कि कांग्रेस राज में प्रतिभा देखकर नौजवानों को रोजगार दिया गया। रोजगार के नये-नये रास्ते खोलने के लिए बड़ी संख्या में औद्योगिक कारखाने, अस्पताल, प्रयोगशालाएं, कालेज आदि का निर्माण कराया गया था जो आज भाजपा सरकार उद्योगपतियों के हाथ बेच रहीं हैं। बैठक में अरसलान खां, तारिक हसन खां, आमिर मियां, अदील मियां, शैजी सैफी, अब्दुल जब्बार खां, हाजी जीशान कौनेन, समीर रजा, रेहान पठान, फरमान खां, रयान खां, भूरा खां प्रधान, यासिर शाह, शाहवेज खां आदि मौजूद थे।

शांतिभंग में दो लोग गिरफ्तार

मदरलैंड संवाददाता, गढमुक्तेश्वर। सिंभावली पुलिस ने दो लोगो को विवाद करने पर हिरासत में लेते हुऐ दोनो को शांतिभंग की धाराओ में गिरफ्तार किया है। सिंभावली थानाध्यक्ष राहुल चैधरी ने जानकारी देते हुऐ बताया कि पुलिस टीम ने सूचना के बाद गांव सिखैडा में मकान के बांटवारे को लेकर विवाद करने वाले सचिन व संदीप निवासी ग्राम सिखैडा को हिरासत में लेते हुऐ दोनो के विरूद्व शांतिभंग की धाराओ में कार्रवाई की गई है। आरोपीयों को अग्रीम कार्रवाई के लिए न्यायालय में पेश किया गया है।

10 अप्रैल को होगा राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन

मदरलैंड संवाददाता, मेरठ। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण मेरठ के सचिव कुलदीप सिंह ने बताया कि दिनांक 10 अप्रैल 2021 दिन शनिवार को जनपद न्यायाधीश अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की अध्यक्षता में राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया जाएगा। उन्होंने बताया कि जन सामान्य को आपसी सुलह एव समझौते के आधार पर सस्ता व सुलभ न्याय उपलब्ध कराने के उद्देष्य से राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया जाता है। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण मेरठ के सचिव कुलदीप सिंह ने बताया कि आगामी 10 अप्रैल 2021 दिन शनिवार को राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन होगा, जिसमें आपसी सुलह समझौते के आधार पर न्यायालयों में लम्बित वाद जैसे सिविल वाद, फौजदारी के शमनीय वाद, 138 एन.आई एक्ट के अन्तर्गत वाद, श्रम वाद, पारिवारिक वाद, भूमि अध्यापित वाद, दीवानी वाद, जैसे किरायेदारी, बैंक वसूली, राजस्व वाद, चकबन्दी वाद, मनरेगा, जलकर, बिजलीकर, आयकर, वाणिज्यकर सेवा सम्बंधित वाद, राशन कार्ड, बीपीएलकार्ड जाति एंव आय प्रमाण पत्र से सम्बंधित सभी प्रकार के चालान, वन विभाग के वाद, कैन्टामैन्ट बोर्ड, रेलवे प्रतिकर, आपदा प्रतिकर, सिविल दीवानी के वादों का निस्तारण पक्षकारों की आपसी सहमति के आधार पर किया जायेगा। इसके अतिरिक्त प्री लिटिगेशन वाद जैसे बैंक ऋण, मोबाईल बिल, टेलीफोन बिल का निस्तारण पक्षकारों की आपसी सहमति के आधार पर प्री लिटिगेशन पीठ द्वारा किया जायेगा।

रोते बिलखते मासूम बच्चें को परिजनों को सौंपा

यातायात प्रभारी संतराम ने दी मानवता की मिसाल

» मदरलैंड संवाददाता

रामपुर। यातायात प्रभारी संतराम कश्यप ने मानवता की मिसाल पेश करते हुए बीते रोज अपने परिवार से खोये हुए मासूम बच्चे को मिलाया। यातायात प्रभारी संतराम कश्यप ने बताया कि बीते रोज करीब छह बजे एक मासूम बच्चा माल गोदाम पर रो रहा था। यातायात प्रभारी की नजर रोते हुए मासूम बच्चे के ऊपर पड़ी तो उन्होने उसे अपनी कस्टडी में लेकर कंट्रोल रूम को अवगत कराया। बच्चे से पूछताछ के दौरान उसने अपना नाम अकमल पुत्र मुकीम निवासी गोपाल मंदिर हल्द्वानी बताया। बच्चे पूछताछ में बताया कि उसकी दुकान चाय की हल्द्वानी रोडवेज के सामने हैं दुकान के सामने ही रोडवेज की बसें आकर रूकती हैं। बच्चा थकने के बाद हल्द्वानी रोडवेज की बस में सो गया। रोडवेज बस हल्द्वानी से चलने के बाद रामपुर आई जैसे ही बस माल गोदाम तिराहे के पास पहुंची वैसे ही बच्चा उतर कर वहीं पर रोने लगा। रोते बिलखते मासूम बच्चें को यातायात प्रभारी ने शांत कराकर उसे खाना खिलाया और हल्द्वानी में उसके परिजनों से संपर्क साधा गया। परिजनों ने रामपुर में मासूम बच्चें के रिश्तेदार होना बताया इसके बाद बच्चें के रिश्तेदारों को सुपुर्द कर दिया गया। रोते बिलखते मासूम बच्चें का अपने रिश्तेदारों को देख कर खुशी का ठिकाना नहीं रहा।

जंतर मंतर पर होने वाले प्रदर्शन में देश भर के व्यापारी होंगे शामिल: घनश्याम दास

» पूजा जैन

रामपुर। पश्चिमी उत्तर प्रदेश संयुक्त उद्योग व्यापार मंडल की बैठक राजीव मांगलिक के निवास पर प्रदेश अध्यक्ष घनश्याम दास गर्ग की अध्यक्षता में संपन्न हुई। प्रदेश अध्यक्ष ने बताया कि जीएसटी में आ रही समस्याओं तथा बजट में बार-बार जीएसटी में नए नए कानून बनाने पर 28 फरवरी को दिल्ली में जंतर मंतर पर विशाल धरना प्रदर्शन में देश भर के व्यापारी शामिल होंगे। इसके अलावा केंद्र सरकार को हर जिले से ज्ञापन भेजे जाएंगे जिसमें मांग की जाएगी कि व्यापारियों को कोरोना काल में हुए नुकसान में 3 महीने के बिजली के बिल माफ करना, बैंकों का 3 महीने का ब्याज माफ करना , 3 महीने का बच्चों की फीस स्कूल माफ करना तथा 3 महीने की ईएमआई सरकार खत्म करें तथा 60 साल से ऊपर व्यापारियों को पेंशन दी जाए। जिला अध्यक्ष पीयूष कुमार जिंदल ने कई सदस्यों को सदस्यता दिलाई। जिसमें अनुज कुमार सक्सेना जिला उपाध्यक्ष, आशुतोष गुप्ता जिला मंत्री, गौरव अग्रवाल जिला मंत्री, अमित ठाकुर जिला मंत्री, राजीव गुप्ता जिला उपाध्यक्ष, रुपेश अग्रवाल को जिला मंत्री बनाया गया। प्रदेश अध्यक्ष घनश्याम दास गर्ग ने व्यापार मंडल में राजीव मांगलिक की सक्रियता को देखते हुए उन्हें प्रदेश उपाध्यक्ष बनाया। मीटिंग में जिला अध्यक्ष पीयूष कुमार जिंदल, जिला महामंत्री रामेंद्र गुप्ता, प्रदेश उपाध्यक्ष वीरेश सिंघल, महेश जुनेजा, बलजीत सिंह, संजीव अग्रवाल, देवेश गुप्ता, आशुतोष गुप्ता अमित ठाकुर, अमित सहगल, गौरव अग्रवाल, मनीष कथूरिया, मनु मांगलिक, शब्बीर अली, राजीव गुप्ता आदि मौजूद रहें।

सडक दुर्घटना में बाईक सवार युवक की मौत

» मदरलैंड संवाददाता

गढमुक्तेश्वर। गढ कोतवाली क्षेत्र में सडक दुर्घटना में बाईक सवार युवक की मौत हुई। मृतक के चाचा ने घटना के संबंध में अज्ञात वाहन चालक के विरूद्व रिपोर्ट दर्ज कराई है। गढ कोतवाली क्षेत्र में गढ स्याना मार्ग पर एक बाईक में अज्ञात वाहन ने टक्कर मार दी जिससे बाईक पर सवार नईम की मौत हो गई घटना उसका दोस्त भी घायल हुआ।

घटना के संबंध मृतक के चाचा ने अज्ञात वाहन चालक के विरूद्व रिपोर्ट दर्ज कराई है।

इस संबंध में गढ कोतवाली प्रभारी का कहना है कि मृतक के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। पुलिस अज्ञात वाहन व उसके चालक की तलाश कर रही है।

एफपीओ की सहायता से सुधरेगी कुपोषित बच्चों की सेहत

» मदरलैंड संवाददाता

रामपुर। जिलाधिकारी आञ्जनेय कुमार सिंह के नेतृत्व में जनपद में अतिकुपोषित बच्चों की सेहत में सुधार लाने के लिए निरंतर अभिनव प्रयास किए जा रहे हैं। जिलाधिकारी के नेतृत्व में जनपद में ₹आहार से उपचार₹ की प्रशासनिक पहल को अमलीजामा पहनाने की कवायद शुरू कर दी गई है। रामपुर में सक्रिय रूप से कार्य कर रहे रामपुर कृषक एफपीओ के सहयोग से आहार से उपचार को प्रशासनिक पहल को पायलट प्रोजेक्ट के रूप में जनपद के चिन्हित 24 अति कुपोषित बच्चों को शामिल किया जा रहा है ।जिलाधिकारी ने बताया कि यह एक प्रशासनिक पहल है जिससे कुपोषित बच्चों को शुद्ध और ऑर्गेनिक खाद्य सामग्री की उपलब्धता हो सकेगी और इसके सेवन से उनके स्वास्थ्य में तेजी से सुधार हो सकेगा। उन्होंने बताया कि इस पहल के बहुआयामी परिणाम होंगे जिसमें आमजन को ऑर्गेनिक तरीके से प्राप्त उपज का महत्व पता चला सकेगा। किसानों को संगठित होकर आर्थिक दृष्टिकोण से लाभदायक खेती के लिए प्रोत्साहन मिलेगा। किसानों को आर्थिक रूप से मजबूती के साथ साथ लोगों को शुद्ध और पौष्टिक कृषि उत्पादों की उपलब्धता भी हो सकेगी। जब लोग ऑर्गेनिक उत्पादों के महत्व को समझेंगे तो इससे जुड़े किसानों को स्थानीय स्तर पर एक बेहतर बाजार भी मिल सकेगा। ऑर्गेनिक उत्पादों से कुपोषित बच्चों को कुपोषण से मुक्ति दिलाने के लिए यह एक शुरूआत है और इसके तहत आच्छादित बच्चों के स्वास्थ्य की नियमित रूप से मोनिटरिंग भी होगी। इस पहल को निरन्तर रूप से आगे भी बढ़ाया जाएगा।

कृत्रिम अंग सहायक उपकरण का वितरण 10 फरवरी को: जिलाधिकारी

» मदरलैंड संवाददाता

मेरठ। जिलाधिकारी के0 बालाजी ने बताया कि दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग, उ0प्र0 लखनऊ द्वारा पात्र दिव्यांगजनो को निशुल्क ट्राईसाईकिल, व्हील चेयर, बैसाखी, कान की मषीन, स्मार्ट कैन व वाकर का वितरण विधानसभा किठौर के अंतर्गत आने वाले विकास खंड रजपुरा, माछरा व खरखौदा के दिव्यांग लाभार्थियों को विकासखंड रजपुरा कार्यालय परिसर मेरठ में दिनांक 10 फरवरी 2021 को प्रातः 11.00 बजे षिविर आयोजित कर लगभग 30 दिव्यांगजनो को कृत्रिम अंग सहायक उपकरणो का वितरण मा0 विधायक सत्यवीर त्यागी विधानसभा क्षेत्र किठौर द्वारा किया जायेगा।

इमरजेन्सी सेन्टर के दूरभाष पर दर्ज कराये लापता व्यक्ति का विवरण-जिलाधिकारी

» मदरलैंड संवाददाता

मेरठ। जिलाधिकारी के बालाजी ने बताया कि उत्तराखण्ड के चमोली जनपद मे दिनांक 07 फरवरी 2021 को हुई आपदा के संबंध मे उत्तर प्रदेश शासन से प्राप्त सूचना के अनुसार उक्त आपदा मे उत्तर प्रदेश के भी कई व्यक्ति प्रभावित लापता है तथा कुछ व्यक्तियों की मृत्यु होने की भी सूचना प्राप्त हुई है। उक्त आपदा मे उत्तर प्रदेश के लापता व्यक्तियों के खोज-बचाव तथा उनके परिवारों से समन्वय हेतु राहत आयुक्त कार्यालय उत्तर प्रदेश स्थित राज्य स्तरीय इमरजेन्सी आपरेशन सेन्टर 24 घंटे क्रियाशील है। उक्त आपदा मे लापता व्यक्तियों के परिजन लापता व्यक्ति का विवरण जनपदीय नियंत्रण कक्ष के दूरभाष नं0- 0121-2664134 व उत्तर प्रदेश राज्य स्तरीय इमरजेन्सी सेन्टर के दूरभाष नं0-1070 व मो0नं0- 9454441036 पर दर्ज करा सकते है। अपर मुख्य सचिव, राजस्व विभाग, उ0प्र0 शासन, राहत आयुक्त कार्यालय, लखनऊ के पत्र संख्या- 2136/रा0आ0का0/2021 दिनांक 08.02.2021 मे निर्गत निदेर्शों के अनुपालन मे उक्त आपदा से प्रभावित जनपद मेरठ के लापता/मृत व्यक्तियों के परिजनों से समन्वय हेतु कलेक्ट्रेट कार्यालय स्थित जिला इमरजेन्सी आपरेशन सेन्टर मे नियन्त्रण कक्ष दूरभाष नं0- 0121-2664134 तत्काल प्रभाव से 24 घंटे क्रियाशील किया गया है। उक्त नियंत्रण कक्ष अग्रिम आदेशों तक स्थापित रहेगा तथा उक्त आपदा मे लापता व्यक्तियों के परिजन लापता व्यक्ति का विवरण नियंत्रण कक्ष के दूरभाष नं0-0121-2664134 पर दर्ज करा सकते है। इसके अतिरिक्त उत्तर प्रदेश राज्य स्तरीय इमरजेन्सी सेन्टर के दूरभाष नं0-1070 व मो0नं0-9454441036 पर भी लापता व्यक्ति के विवरण दर्ज करा सकते है।

मुख्यमंत्री की प्राथमिकता वाले विकास कार्यो की जिलाधिकारी ने की समीक्षा

» मदरलैंड संवाददाता

मैनपुरी। जिलाधिकारी महेंद्र बहादुर सिंह ने मुख्यमंत्री की प्राथमिकता वाले विकास कार्यक्रमों की समीक्षा के दौरान अधिकारियों को आदेशित करते हुए कहा कि जिन योजनाओं में जनपद बी कैटेगरी में है, उन्हें ए श्रेणी में, जो सी श्रेणी में है उन्हें बी श्रेणी में, जो सी श्रेणी में है उन्हें डी श्रेणी में लाने के लिए प्रयास करें, कार्यों में तेजी लाकर प्रगति सुधारी जाए। उन्होंने कहा कि किसानों को समय से खाद-बीज, सिंचाई हेतु पानी की उपलब्धता सुनिश्चित हो इसके लिए सभी सरकारी नलकूप चालू दशा में रहें, नहरों की अंतिम टेल तक पानी की उपलब्धता सुनिश्चित कराई जाए। उन्होंने जिला पूर्ति अधिकारी को आदेशित करते हुए कहा कि करहल में जो दो राशन की दुकानें रिक्त हैं तत्काल प्रस्ताव कराकार नियमानुसार आवंटन किया जाए, खंड विकास अधिकारी करहल तत्काल प्रस्ताव की प्रक्रिया कराएं।

हरौडा मोड मार्ग पर जल भराव की समस्या को लेकर एसडीएम को ज्ञापन

» कांति प्रसाद

गढमुक्तेश्वर। सिंभावली के हरौडा मोड मार्ग पर जल भराव की समस्या को लेकर सामाजिक लोगो ने एसडीएम को एक ज्ञापन सौंपा। एसडीएम ने बीडीओ सिंभावली को मौके के स्थिति देखकर कार्रवाई के लिए निर्देश दिये हैं। गढ तहसील के ब्लॉक सिंभावली क्षेत्र में हरौडा मोड मार्ग पर ग्राम पंचायत मौहम्मदपुर खुडलिया के आवासीय मकानो व व्यवसायिक प्रतिष्ठानो का वेस्टैज गंदा पानी नाले से गंदे पानी की निकासी का उचित प्रबंध नही होने के कारण सडक मार्ग पर पानी भरने की समस्या दिनो दिन बढती जा रही है। अब तो इस पानी के बीच से वाहन चालको को निकलने के लिए मजबूर होना पड रहा है। इस मार्ग से प्रतिदिन क्षेत्र के एक दर्जन से अधिक गांवो के हजारो लोगो का आवागमन रहता है। यहां से सैकडो वाहनो के अलावा सिंभावली मिल में गन्ना लाने वाले किसानो को भी आना जाना है जिन्हें जल भराव से भारी परेशानी का सामना करना पड रहा है। इतना ही नही स्कूल कालिज आने जाने वाले छात्र-छात्राओ को भी मार्ग से निकलने में दिक्कत हो रही है। जल भराव से पहले से ही छतिग्रस्त मार्ग लगभग पुरी तरह टुट गया है। इतना सब होने के बाद भी कोई जन प्रतिनिधि मार्ग की समस्या को हल करने के लिए तैयार नही है। मंगलवार को सिंभावली हरौडा मोड निवासी समाजसेवी व विभिन्न संगठनो से जुडे सरदार राजेन्द्र सिंह औलख व भाकियू नेता सतवीर सिंह आदि गढ एसडीएम विजय वर्धन तोमर के पास जल भराव की समस्या हो हल कराने की मांग को लेकर पुहंचे ओंर अपनी मांग को लेकर एक ज्ञापन दिया। इस संबंध में एसडीएम विजय वर्धन तोमर का कहना है कि उन्होने समस्या के हल के लिए बीडीओ सिंभावली को निर्देशित किया है।

बंधक बनाकर महिला के साथ दुष्कर्म मुकदमा दर्ज

» शकील सैफी

मेरठ। मेरठ थाना सरधना क्षेत्र के मोहल्ला घनश्याम मंडी में एक मकान में कार्य कर रही नौकरानी ने अपने मालिक पर बंधक बनाकर रेप करने का आरोप लगाया है। थाने पहुंची पीड़िता ने पुलिस को मामले से अवगत कराया और नामजद तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की। पुलिस ने मुकदमा दर्ज किया और जांच में जुट गई। मामला गांव पनवाड़ी निवासी एक युवती ने बताया कि वह अपने जीजा के यहां रहती थी। जहां सरधना के मोहल्ला घनश्याम मंडी निवासी युवक का आना जाना था। जिसने नौकरी का कहकर घर का कार्य करने के लिए उसे अपने यहां रख लिया। युवती के अनुसार, रविवार को सुबह वह घर में सफाई कार्य कर रही थी। युवक व उसकी मां किसी काम से घर से बाहर गई हुई थी। उसका पिता ही घर था। इस बीच उसके पिता ने उसे घर में अकेली देखा और कमरे में ले जाकर उसके साथ रेप किया। विरोध करने पर उसकी पिटाई भी की। आरोप है कि उसने युवक व उसकी मां को इस बारे में बताया तो उन्होंने उसे चुप रहने के लिए कहा। इसके अलावा उसे घर में ही बंधक बना कर कार्य कराते रहे और उसका मोबाइल भी छीन लिया। वह किसी तरह उनके चंगुल से निकली और सीधा थाने पहुंच गई।

newsdesk@motherlandvoice.org
editor@motherlandvoice.org

संक्षिप्त समाचार

भोपाल में क्राइम ब्रांच ने अवैध हथियार तस्करों को पकड़ा

मदरलैंड संवाददाता, भोपाल। भोपाल क्राइम ब्रांच की टीम ने अब तक की अवैध हथियारों के खिलाफ सबसे बड़ी कार्रवाई करते हुए 30 से ज्यादा पिस्टल, कट्टे और रायफल जब्त किए हैं। टीम ने 7 शहरों में अलग-अलग ठिकानों पर दबिश देते हुए 7 तस्करों को भी गिरफ्तार किया है। आरोपी यह हथियार प्रदेश भर में 20 हजार से लेकर 25 हजार रुपए तक की कीमत में बेचते थे, क्योंकि उनकी फिनिशिंग अच्छी होने से इनकी कीमत भी ज्यादा होती थी। आरोपियों में 19 साल का एक लड़का भी शामिल है।

आरएफ में एएमयू छात्रों की सफलता का मिसाल

मदरलैंड संवाददाता, अलीगढ़। अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के 9 छात्रों ने नेशनल एलिजिबिलिटी टेस्ट (नेट) परीक्षा उत्तीर्ण करली है जिनमें 8 छात्रों का सम्बन्ध भूगर्भ विज्ञान विभाग से है जबकि एमएससी, बायोटेक्नोलाजी की छात्रा बुशरा काजी ने सीएसआईआर-नेट में सफलता प्राप्त की है। इंटर-डिसिप्लिनरी बायोटेक्नोलाजी यूनिट के समन्वयक प्रोफेसर डा० वसीम अहमद सिद्दीकी ने बताया कि बुशरा काजी ने जीव विज्ञान में नेट परीक्षा पास की है। उन्होंने इस उपलब्धि के लिये उन्हें बधाई दी। भूगर्भ विज्ञान विभाग के अध्यक्ष प्रो एएचएम अहमद ने सफल छात्रों को बधाई देते हुए कहा कि मोहम्मद शाहरुख, गुलाम नबी, मोहम्मद शावेज और सुल्तान अजीम ने जेआरएफ में और कुमैल अहमद, पुनीत कुमार मिश्रा, मोहम्मद सिद्दीक अकबर तथा मोहम्मद मुनीस मलिक ने नेट परीक्षा उत्तीर्ण की है। उन्होंने कहा कि यह उपलब्धि छात्रों के परीश्रम और विभाग के शिक्षकों के मार्गदर्शन का परिणाम है।

प्रदेश सदस्य बनाये जाने पर कृष्णा दास लोधी का जोशीला स्वागत

अजय सक्सेना, मैनपुरी। सपा जिला कार्यालय आवास विकास मैनपुरी पर समाजवादी पार्टी के राट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव जी की अनुमति से प्रदेश अध्यक्ष नरेश उत्तम पटेल जी द्वारा कृणादास लोधी निवासी भोगांव को समाजवादी पार्टी उत्तर प्रदेश की राज्य कार्यकारिणी में प्रदेश सदस्य नामित किये जाने एवं विश्वनाथ प्रजापति जिलाध्यक्ष पिछड़ा वर्ग प्रकोठ मैनपुरी को पुनः जिलाध्यक्ष पिछड़ा वर्ग प्रकोठ नामित करने साथ ही आर डी निगम जिलाध्यक्ष प्रबुद्ध प्रकोठ समाजवादी पार्टी मैनपुरी को पुनः जिलाध्यक्ष प्रबुद्ध प्रकोठ नामित किये जाने पर सपा जिलाध्यक्ष देवेन्द्र सिंह यादव जी द्वारा फूलमाला एवं शॉल ओढ़ाकर जोशीला स्वागत किया गया। स्वागत श्रृंखला में सांसद प्रतिनिधि देवेन्द्र सिंह यादव एड, जिला उपाध्यक्ष मनोज यादव, जिला महासचिव रामनरायन बाथम, ज्योति मैसी जिलाध्यक्ष महिला सभा, राकेश ठाकुर, सुखवीर सिंह यादव, विस अध्यक्ष चन्द्रशेखर यादव विस महासचिव योगेन्द्र सिंह पाल, नि जिलाध्यक्ष लो वा रावल सिंह यादव आदि ने समाजवादी पार्टी के राट्रीय अध्यक्ष का आभार व्यक्त करते हुए नामित पदाधिकारियों को बधाई दी।

स्पैरो हाउस विषय पर शिविर का आयोजन

» उमाकांत शर्मा

बुढाना। डी ए वी डिग्री कॉलेज बुढ़ाना मुजफ्फरनगर में राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम के अन्तर्गत स्पैरो हाउस (गौरैया चिड़िया का घर) विषय पर एक दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया जिसमें दिन भर स्वयंसेवकों द्वारा श्रमदान किया गया तथा तैयार स्पैरो हाउस पर प्राइमर व पेंट किया गया। संगोष्ठी के माध्यम से भी स्वयंसेवकों को गौरैया चिड़िया की कम होती संख्या के कारणों (मोबाइल टावर, बढ़ता तापमान आदि) और स्पैरो हाउस की आवश्यकता से अवगत कराया गया। वरिष्ठ प्रवक्ता डॉ संगीता चौधरी ने स्वयंसेवकों को स्पैरो हाउस के निर्माण की अर्हताओं की जानकारी प्रदान की। दिसंबर 2020 से स्पैरो हाउस के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले लाइफ ग्रुप के कैप्टन जुबेर मिर्जा व वसीम ने स्पैरो हाउस निर्माण संबंधी अपने अनुभव साझा किए। साथ ही महाविद्यालय परिसर में अनेक स्पैरो हाउस लगाकर गौरैया चिड़िया के संरक्षण की दिशा में अपना योगदान प्रदान किया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय प्रबंधक अरविंद गर्ग, प्राचार्य डॉ प्रदीप कुमार, कार्यक्रम अधिकारी डॉ शिखा कौशिक व ध्रुव यादव का विशिष्ट सहयोग रहा।

कचहरी परिसर में चैकिंग व निरीक्षण

» मदरलैंड संवाददाता

मुजफ्फरनगर। कचहरी परिसर की सुरक्षा के दृष्टिगत चौकी प्रभारी कचहरी द्वारा जनपदीय पुलिस बल, डॉग स्क्वायड व एल आई यू टीम के साथ जनपद में स्थित कचहरी परिसर में सघन चैकिंग अभियान चलाया गया। डॉग स्क्वॉड व एल आई यू टीम ने स्थानीय पुलिस बल के साथ मुजफ्फरनगर कचहरी परिसर में खडे वाहनों एवं संदिग्ध वस्तुओं की जांच की साथ ही परिसर के आसपास घूम रहे संदिग्ध व्यक्तियों से पूछताछ की गई तथा वहां मौजूद व्यक्तियों से अपील की गयी कि कोई भी संदिग्ध व्यक्ति वस्तु दिखने पर तत्काल पुलिस को सूचना दे।

कई बसपा नेताओ को प्रमोद त्यागी ने सपा में किया शामिल

» सरताज अहमद

मुजफ्फरनगर। समाजवादी पार्टी के जिला मीडिया प्रभारी साजिद हसन ने सपा के प्रोग्राम की जानकारी देते हुए बताया कि सपा कार्यालय पर सपा जिलाध्यक्ष प्रमोद त्यागी एडवोकेट की अध्यक्षता व सपा जिला महासचिव जिया चौधरी के संचालन में आयोजित मीटिंग में कई पुराने बसपा नेताओ कार्यकर्ताओ ने बसपा को छोड़कर सपा में होने की घोषणा की। सपा जिलाध्यक्ष प्रमोद त्यागी एडवोकेट ने घोषणा करते हुए कहा कि सपा हाईकमान के निर्देश पर आज बसपा के थानाभवन विधानसभा प्रभारी राकेश सैनी एडवोकेट नेअपने साथी बसपा पदाधिकारी कार्यकर्ता आशु शर्मा, अमित कुमार सैनी, विमलकांत व सचिन कुमार पाल ने बसपा को छोड़कर सपा में आस्था जताते हुए पार्टी की सदस्यता ग्रहण की है। बसपा छोड़कर सपा की सदस्यता ग्रहण करने वाले राकेश सैनी एडवोकेट ने कहा कि यूपी में बड़े बदलाव के साथ सपा मजबूती के साथ सत्ता में आने जा रही है बसपा ने भाजपा के निरंकुश शासन के सामने समर्पण कर दिया है। इस दौरान मुख्यरूप से सपा के जिला कोषाध्यक्ष सचिन अग्रवाल, सपा जिला उपाध्यक्ष सोमपाल भाटी, विनयपाल प्रमुख, राजीव बालियांन, ठाकुर सुखपाल सिंह, असद पाशा, अजित सिंह बबलू प्रमुख, सपा नेता अमरनाथ पाल, युवा सपा नेता डॉ इसरार अल्वी, प्रधान शाहरजा नकवी, सुमित पंवार बारी आदि मौजूद रहे।

आगनबाडी केन्द्रो पर पोषण वाटिका का निर्माण कराय जाये : जिलाधिकारी

» अवनीश त्यागी

बिजनौर। जिलाधिकारी रमाकान्त पाण्डेय ने जिला कार्यक्रम अधिकारी को निर्देश देते हुए कहा कि जनपद के समस्त आंगनबाडी केन्द्रो पर पोषण वाटिका का निर्माण कराया जाना सुनिश्चित किया जाये। उन्होने मुख्य चिकित्साधिकारी एवं जिला कार्यक्रम अधिकारी को निर्देश देते हुए कहा कि जन्म लेने वाले प्रत्येक बच्चे का वजन जाँच लिया जाये और अतिकुपोषित बच्चो को समय से एनआरसी में एडमिट कराते हुए समस्त सुविधाऐं उपलब्ध करायी जाये। उन्होने कहा कि एनिमिया मुक्त भारत के लिए सरकार कटिबद्व है जिसके लिए सरकार द्वारा पर्याप्त मात्रा में आयरन युक्त दवाईया उपलब्ध कराई गयी है, ताकि गभर्वती महिलाओं को आयरन की कमी न हो सके। उन्होने स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियो को निर्देश देते हुए एनिमिया के लिऐ जो दवाईया उपलब्ध है उन्हे गर्भवती महिलाओं में समय से बटवाना सुनिश्चित करे। जिलाधिकारी श्री पाण्डेय स्थानीय विकास भवन के सभागार में विकास कार्यो, जिला स्वच्छता समिति, कन्या सुमंगला योजना एवं जिला पोषण समिति की समीक्षा करते हुए उपस्थित अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दे रहे थे।

उन्होने स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि कन्या सुमंगला योजना के अन्तर्गत जनपद में जन्म लेनी वाली कन्याओं का आवेदन और उनका टीकाकरण पूरी गुणवत्ता के आधार पर कराना सुनिश्चित करे। उन्होने जिला कार्यक्रम अधिकारी, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी, जिला विद्यालय निरीक्षक एवं समस्त खण्ड विकास अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि कन्या सुमंगला योजना के अन्तर्गत अधिक से अधिक आवेदन कराना सुनिश्चित करे ताकि जनपद की कन्याओं को इस योजना का लाभ समय से मिल सके।

बेटों की तरह बेटियों को पढ़ायें-डौली माहौर

मदरलैंड संवाददाता, हाथरस। क्षेत्र के गांव फरौली में आज जन शिक्षा एवं जन सुरक्षा के अंतर्गत एक कार्यक्रम संयोजक प्रेम शंकर गांधी जन संपर्क प्रमुख के संयोजन में आयोजित किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि भाजपा ब्रज क्षेत्र की क्षेत्रीय मंत्री एवं पूर्व पालिक-ाध्यक्ष श्रीमती डौली माहौर एवं बासुदेव माहौर ब्रज क्षेत्र उपाध्यक्ष अनु. मोर्चा ने भाग लिया एवं अध्यक्षता श्रीमती उमा कुमारी द्वारा की गई। कार्यक्रम में भाजपा ब्रज प्रदेश मंत्री श्रीमती डौली माहौर ने नारी शिक्षा एवं सुरक्षा पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज के समय में नारी के लिए शिक्षा बहुत आवश्यक है। सभी से अनुरोध किया कि बेटियों को पढ़ाना उतना ही आवश्यक है जितना कि बेटों को। कार्यक्रम में डौली माहौर ने सभी छात्राओं को पैन देकर उत्साह वर्धन किया। ओमप्रकाश आर्य ने कु. दीप शिखा को 51 रुपए का पुरस्कार दिया। ओम-प्रकाश आर्य एवं गांधी जी ने डौली माहौर एवं बासुदेव माहौर का शॉल ओढ़ाकर एवं माला पहनाकर सम्मान किया। कार्यक्रम में बाबू सिंह, गजेंद्र पाल सिंह, ओमप्रकाश सेंगर, चंद्रपाल सिंह, रामदयाल सिंह, भूरी सिंह, प्रेमशंकर, ज्योति प्रसाद गोला, प्रेमपाल सिंह, जगन सिंह, विनोद कुमार आदि उपस्थित थे। संचालन ओम प्रकाश आर्य ने किया। अंत में कार्यक्रम संयोजक प्रेमशंकर गांधी ने सभी का आभार व्यक्त किया।

मिशन मोदी अगेन के जिलाध्यक्ष पर जानलेवा हमला

» मदरलैंड संवाददाता

नूरपुर। ब्लॉक के पास एक होटल पर भाजपा नेता मिशन मोदी अगेन मंच के जिलाध्यक्ष जुगनू चौधरी पर कुछ हमलावरों ने जानलेवा हमला करते हुए बुरी तरह से मारा पीटा। घायल नेता को प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र पर प्राथमिक उपचार के बाद हालत गंभीर देखते हुए बिजनौर जिला अस्पताल रेफर कर दिया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने तीन हमलावरों को गिरफ्तार कर लिया है। जानकारी के अनुसार नूरपुर कस्बे के मोहल्ला चौधरियन निवासी जुगनू चौधरी भारतीय जनता पार्टी के मिशन मोदी अगेन मंच के जिलाध्यक्ष है। जुगनू चौधरी के भाई पूर्व सभासद सचिन चौधरी ने थाने में दी गई तहरीर में कहा है कि मेरा भाई भाजपा नेता जुगनू चौधरी सोमवार की रात करीब 9:30 बजे पार्टी के काम से वापस अपने घर आ रहे थे कि इस दौरान जब वह ब्लॉक चौराहे के पास स्थित अन्नपूर्णा होटल पर पानी लेने के लिए रुके तो वहां पहले से ही मौजूद मनीष कुमार पुत्र दिग्विजय सिंह निवासी गांव नाहर सिंह, विशाल पुत्र अनिल कुमार निवासी गांव रावटी तथा सूर्य प्रताप पुत्र जयप्रकाश निवासी गांव सुनगढ़ लाठी-डंडे सरिया तथा धारदार हथियार से जान से मारने की नियत से हमला करना शुरू कर दिया। आरोप है कि इस दौरान हमलावरों के दो अन्य साथियों ने भाजपा नेता के गले से सोने की चेन तथा जरूरी कागजात की लेकर फरार हो गए। तहरीर में कहा कि वहां मौजूद लोगों ने उसे बचाया लेकिन वह गाली गलौज करते हुए जान से मारने की धमकी देते हुए वहां से फरार हो गए। सूचना पर पहुंची पुलिस ने तीनों हमलावरों को पकड़ लिया। गंभीर रूप से घायल भाजपा नेता को उपचार के लिए नजदीक में ही स्थित प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र लाया गया।

एम.एल.डी.वी. में हुआ सड़क सुरक्षा सेमिनार

» नीरज चक्रपाणि

हाथरस। श्यामकुंज स्थित एम. एल. डी. वी. पब्लिक इण्टर कालेज में सी बी एस ई के निदेर्शानुसार ह्यह्यसड़क सुरक्षा जीवन रक्षाह्लह्ल इवेन्ट का शुभारम्भ सी ओ सिटी रूचि गुप्ता द्वारा दीप प्रज्ज्वलन कर किया गया। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुये मुख्य अतिथि ने सड़क सुरक्षा के निदेर्शों का छात्र-छात्राओं से कड़ाई से पालन करने का आह्वान करते हुये कहा यदि वह वेपरवाह बन गये तो हमें बहुत बड़ी कीमत उन्हें चुकानी पड़ेगी। सड़क ऐक्सीडेंट में जब कोई अपने को खोता है तो उसके दर्द को वह स्वयं ही अनुभूत करता है। इस अवसर पर निधि, कोमल, वैष्णवी, पूर्णिमा, विशाल, अनिका, रिया, दीपाली, हर्षा, स्नेहा, पायल, नेहा, महक, अनुष्का, दीक्षा, तनिष्का, हर्षिता, देवांशी, गौरी, शिवी, अद्वितीय, लव, तान्या, सलौनी, गगन, पूजा, चित्रांशी, देव, प्रियांशु, केशव, नमन, छवि, अनिष्का, नन्दनी, प्राची, राधिका, वृधि, नीरज, आयुष, जोगेन्द्र, शोभित, सुरभी, करिश्मा, पारूल, आदि छात्र-छात्राओं के सड़क सुरक्षा से सम्बंधित उत्कृष्ट विचारों, कविताओं, नुक्कड़ नाटक, पोस्टर-प्रदर्शनी, चाटर्स एवं शानदार रंगोली ने दर्शकों को मंत्र-मुग्ध कर दिया।कार्यक्रम को सफल बनाने में डिप्टी डायरेक्टर कुमुद कुमार गुप्ता, कॉर्डिनेटर शैलकान्ता गुप्ता, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के जिला प्रमुख आलोक गुप्ता, हर्षित गुप्ता (एडवोकेट), कल्पना शर्मा, पूनम वार्ष्णेय, कल्पना कुमारी, सुमन वार्ष्णेय, निधि शर्मा, आई. के. राना, पुनीत गुप्ता, राजेन्द्र प्रसाद, मनीष कुमार, कमल दुबे, रविकान्त वार्ष्णेय, मोहिता गुप्ता, नीरज सागर, लवी वार्ष्णेय, नीरज सोनी, अंकित वार्ष्णेय, बबिता भारद्वाज, पुनीत वार्ष्णेय, सुनील गौतम, हरीश शर्मा, पवन शर्मा, दिव्या कूलवाल, मोहक गुप्ता, आदि का सहयोग रहा।कार्यक्रम की अध्यक्षता राज्य अध्यापक पुरस्कार से सम्मानित संस्था के डायरेक्टर स्वतंत्र कुमार गुप्त ने की। कार्यक्रम का संचालन सारिका सोनी एवं शाजिया रफीक खान द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। अन्त में प्रधानाचार्या नीरू गुप्ता ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

मण्डलायुक्त की अध्यक्षता में मण्डलीय उद्योग बन्धु समिति की बैठक सम्पन्न

» शंकरदेव तिवारी

आगरा। मण्डलायुक्त अमित गुप्ता की अध्यक्षता में आज आयुक्त सभागार में मण्डलीय उद्योग बन्धु समिति की बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में बताया गया कि यू पी सी डा के औद्योगिक क्षेत्र सिकन्दरा, साईट-सी, स्थित फैक्ट्रियों में जलभराव की समस्या के निस्तारण हेतु रेलवे लाईन एवं एन एच -2 पर बॉक्स कल्बर्ट बनाया जाना है, इस सम्बन्ध में बॉक्स कल्बर्ट को रेलवे लाइन के नीचे पुश किये जाने की कमिश्नर ऑफ रेलवे सेफ्टी उत्तर पूर्व सर्किल से अनुमति प्राप्त हो गई है, जिस पर मण्डलायुक्त ने रेलवे से समन्वय कर शीघ्र कार्यवाही कराने के निर्देश दिये। बैठक में औद्योगिक क्षेत्र मथुरा के साईट-बी की अधिकतर सड़कों के खराब होने के सम्बन्ध में बताया गया कि टेंडर आदि की प्रक्रिया पूर्ण हो गई है व शीघ्र ही कार्य प्रारम्भ कर दिया जायेगा। औद्योगिक क्षेत्र मथुरा के साईट-बी में विद्युत लाईन व ट्रान्सफार्मर न होने के सम्बन्ध में बताया गया कि आगणन मुख्यालय स्वीकृत हेतु प्रेषित किया गया है, जिस पर मण्डलायुक्त ने एक सप्ताह में आगणन स्वीकृत कराते हुए कार्य प्रारम्भ करने के निर्देश क्षेत्रीय प्रबन्धक यू पी सी डा को दिये।

मुख्यमंत्री अभ्युदय योजना की तैयारियों के सम्बन्ध में बैठक सम्पन्न

» मदरलैंड संवाददाता

आगरा। नगर निगम ब्वायज इण्टर कालेज एवं गर्ल्स हाईस्कूल, राजकीय इण्टर कालेजं, आगरा कालेज, सेंटजोंस कालेज तथा डा भीमराव आम्बेडकर विश्वविद्यालय साक्षात कक्षाओं हेतु चिन्हित। सिविल सेवा परीक्षा, पी सी एस, जे ई ई, नीट, एन डी ए, सी डी एस आदि की प्रतिभाशाली तथा उत्साही विद्यार्थियों को निःशुल्क कोचिंग दिया जायेगा।मण्डलायुक्त अमित गुप्ता की अध्यक्षता में मुख्यमंत्री अभ्युदय योजना की तैयारियों के सम्बन्ध में बैठक सम्पन्न हुई।बैठक में उप निदेशक, समाज कल्याण द्वारा बताया गया कि मुख्यमंत्री अभ्युदय योजना के अन्तर्गत प्रतियोगी परीक्षाओं यथा- सिविल सेवा परीक्षा, पी सी एस, जे ई ई, नीट, एन डी ए, सी डी एस इत्यादि हेतु प्रतिभाशाली तथा उत्साही विद्यार्थियों को निःशुल्क साक्षात प्रशिक्षण/ ऑनलाइन प्रशिक्षण/सलाह प्रदान किया जायेगा। 10 फरवरी 2021 से पंजीकरण शुरू होगा एवं 16 फरवरी 2021 को मुख्यमंत्री जी द्वारा इस योजना को शुरू किया जायेगा। मण्डल स्तर पर राष्ट्रवीर दुगार्दास राठौर नगर निगम ब्वायज इण्टर कालेज ताजगंज, नगर-निगम गर्ल्स हाईस्कूल ताजगंज, राजकीय इण्टर कालेज पंचकुइयां, आगरा कालेज, सेंटजोंस कालेज तथा डा भीमराव आम्बेडकर विश्वविद्यालय को साक्षात कक्षाओं हेतु चिन्हित किया गया है।मण्डलायुक्त ने सभी आवश्यक व्यवस्थाओं को समय से पूर्ण करने के निर्देश सम्बन्धित अधिकारियों को दिये। बैठक में विषय विशेषज्ञ अध्यापकों को नियुक्त करने एवं नये आई ए एस, आई पी एस एवं पी सी एस अधिकारियों द्वारा लेक्चर दिये जाने आदि पर विचार-विमर्श किया गया।

आर सी के प्रकरणों में सख्ती बरतें और संबंधितो से शतप्रतिशत वसूली करें: रमाकांत पाण्डेय

» मदरलैंड संवाददाता

बिजनौर। जिलाधिकारी रमाकांत पाण्डेय ने सभी उप जिलाधिकारियों को निर्देश दिए कि आर सी के प्रकरणों में सख्ती बरतें और संबंधितो से शतप्रतिशत वसूली करना सुनिश्चित करें। उन्होंने यह भी निर्देश दिए कि उनकी अध्यक्षता में प्रत्येक शुक्रवार को तहसीलदार एवं उपजिलाधिकारियों की बैठक का आयोजन किया जाएगा, जिसमें वसूली सहित अन्य महत्वपूर्ण मुद्दों के निस्तारण पर चर्चा की जाएगी। उन्होंने स्पष्ट करते हुए कहा कि वसूली कार्य में किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाशत नहीं की जाएगी। उन्होने यह भी निर्देश दिए कि सभी अधिकारी कर करेत्तर से संबंधित विभागीय लक्ष्य को शत प्रतिशत पूरा करना सुनिश्चित करें और प्रर्वतन कार्य में गतिशीलता लाते हुए प्रभावी कार्य करें, ताकि किसी भी स्तर पर करापवंचन का कार्य किया जाना सम्भव न हो सके। उन्होंने उप जिलाधिकारी तथा विभागीय अधिकारियों को निर्देश दिए कि 20-20 बड़े बकायादारों की सूची तैयार करें और प्रभावी रूप से राजस्व वसूली की कार्यवाही करना सुनिश्चित करें।जिलाधिकारी कैम्प कार्यालय कक्ष में आयोजित कर-करेत्तर एवं स्टाफ राजस्व बैठक की अध्यक्षता करते हुए उपस्थित अधिकारियों को निर्देश दे रहे थे।

उन्होंने निर्देश दिए कि कर वसूली का कार्य पूरी गंभीरता और सजगता के साथ सम्पादित किया जाए और लक्ष्य के सापेक्ष मासिक और वार्षिक प्रगति सुनिश्चित की जाए और किसी भी अवस्था में करापवंचन न होने पाए। उन्होंने राजस्व से संबंधित विभागीय अधिकारियों को निर्देश दिए कि पूरी गंभीरता के साथ वसूली के लक्ष्य को शत प्रतिशत रूप से पूरा करना सुनिश्चित करें। समीक्षा के दौरान विद्युत, आबकारी, सिंचाई, बाटमाप, खनिज विभाग द्वारा विभागीय लक्ष्य के सापेक्ष संतोषजनक कार्य किया गया।अवसर पर अपरजिलाधिकारी वि/रा अवधेश कुमार मिश्र, प्रशासन विनोद कुमार गौड़, उप जिलाधिकारी विक्रमादित्य सिंह मलिक, अतिरिक्त जिला मजिस्टेज्ट परमानन्द झा सहित सभी उपजिलाधिकारी, तहसीलदार तथा राजस्व से संबंधित अन्य अधिकारी मौजूद थे।

गरीब बच्चों को अधिकारी बनने का सपना पूरा करेगी योगी सरकार

» अर्जुन वार्ष्णेय

अलीगढ़। मण्डलायुक्त गौरव दयाल की अध्यक्षता में कमिश्नरी सभागार में मुख्यमंत्री अभ्युदय योजना के सम्बन्ध में बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में एएमयू समेत महाविद्यालयों, सरकारी एवं गैर सरकारी इंजीनियरिंग विद्यालयों, व्यावसायिक कॉलेजों एवं शिक्षा व समाज कल्याण से जुड़े अधिकारियों व निजी क्षेत्र के कोचिंग सेन्टर संचालकों द्वारा प्रतिभाग किया गया। मण्डलायुक्त ने कहा कि दूर-दराज इलाकों में रहने वाले गरीब तबके प्रतिभाशाली एवं उत्साही विद्यार्थी जो अपने सुनहरे भविष्य का सपना तो देखते हैं परन्तु आर्थिक परेशानियों के चलते उनका सपना पूरा नहीं हो पाता है, ऐसे में सरकार द्वारा संज्ञान लेते हुए प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में लगे छात्र-छात्राओं के लिए मुख्यमंत्री अभ्युदय योजना किसी वरदान से कम साबित नहीं होगी। उन्होंने बताया कि योजना का शुभारम्भ 16 फरवरी बसन्त पंचमी को मा0 मुख्यमंत्री जी द्वारा किया जाएगा। संयुक्त निदेशक माध्यमिक शिक्षा जितेन्द्र मलिक ने बताया कि सीबीएसई स्कूलों के विभिन्न पदाधिकारियों से वार्ता कर वह शीघ्र ही नॉलेज बैंक रखने वाले विषय विशेषज्ञों का चयन कर पैनल को उपलब्ध कराएंगे। बेसिक शिक्षा अधिकारी लक्ष्मीकांत पाण्डेय ने बताया कि विभाग में ऐसे कई उच्च शिक्षा प्राप्त सहायक अध्यापक हैं जो अपनी प्रतिभा का जौहर दिखाना चाहते हैं, उनका चयन कर पैनल में सम्मिलित किया जाएगा।

संक्षिप्त समाचार

चंडीगढ़ पुलिस ने दो भगोड़ों को किया गिरफ्तार

मदरलैंड संवाददाता, चंडीगढ़। सालों-साल से गायब दो भगोड़े आरोपी चंडीगढ़ पुलिस के हाथ लगे हैं। इनमें से एक 8 साल और दूसरा चार साल के करीब का भागा हुआ है। थाना-34 पुलिस ने इन्हें अलग-अलग जगह से दोबारा गिरफ्तार किया है। भगोड़े आरोपियों में से एक एमडीसी कॉलोनी पंचकूला का रहने वाला 32 साल का अकाश बाबू और अखनूर जेएंडके रहने वाला अंकुश वर्मा बताया जाता है। फिलहाल, पुलिस दोनों को अब फिर से अदालत में पेश करेगी और आगे कार्रवाई को अंजाम देगी। सन 2011 में थाना 34 के प्रभारी इंस्पेक्टर राजीव कुमार की सुपर विजन में बनाई गई टीम ने भगोड़े आरोपी अकाश बाबू को गिरफ्तार किया था। आरोपी पर धारा 379, 411 के तहत मामला दर्ज हुआ था।बाद में आरोपी अकाश बाबू के कोर्ट में पेश न होने के चलते अदालत ने 18 दिसंबर 2013 को इसे भगोड़ा घोषित कर दिया था। जिसे अब थाना 34 पुलिस ने दोबारा से पकड़ लिया। थाना 34 पुलिस के मुताबिक आरोपी अंकुश वर्मा के खिलाफ 13 अगस्त 2016 को धारा 380 ,420 ,120 बी के तहत मामला दर्ज हुआ था और आरोपी बहुत से समय से कोर्ट में अपनी पेशी नहीं दे रहा था जिसके चलते कोर्ट ने इसे भगोड़ा घोषित कर दिया था जिसे अब थाना 34 पुलिस ने दोबारा से गिरफ्तार कर लिया। फिलहाल, भागे हुए और अदालत की तौहीन करने वाले आरोपियों को पकड़ना थाना 34 पुलिस के लिए बड़ी कामयाबी है।

हरियाणा में 5 डिग्री पर आया नारनौल का पारा

चंडीगढ़। हरियाणा के मौसम में लगातार बदलाव हो रहा है। मौसम वैज्ञानिकों के अनुसार, फरवरी में दो पश्चिमी विक्षोभ असर दिखा सकते हैं। इससे बारिश हुई तो पारा नीचे आएगा, लेकिन अब ज्यादा ठंड की संभावना कम है। नारनौल में रात का पारा 0.2 डिग्री बढ़कर 5.2 डिग्री हो गया है। यह करनाल में 6 और हिसार में 6.6 डिग्री दर्ज किया गया। मौसम विभाग के अनुसार, राज्य में मौसम के आमतौर पर 9 फरवरी तक परिवर्तनशील मगर खुश्क रहने की संभावना है। पिछले दिनों हरियाणा में सक्रिय पश्चिमी विक्षोभ ने ओलावृष्टि और बारिश दोनों ने ठंड बढ़ाने का काम किया। पश्चिमी विक्षोभ के प्रभाव के कारण पहाड़ों बर्फबारी हो रही है।
पहाड़ी क्षेत्रों से उत्तर पश्चिमी हवाएं जब मैदानी क्षेत्रों की तरफ चलती हैं तो वह तापमान गिराने का काम करती हैं। इसमें मुख्य रूप से रात्रि तापमान में गिरावट देखने को मिलती है।

व्यक्ति बिना तलाक कर सकता है दूसरी शादी पर महिला नहीं : हाईकोर्ट

चंडीगढ़। मुस्लिम पुरुष पहली पत्नी को तलाक दिए बिना दूसरी शादी कर सकता है, लेकिन महिला को यह अधिकार नहीं है। मुस्लिम महिला को दूसरी शादी करनी है तो मुस्लिम पर्सनल लॉ या मुस्लिम विवाह अधिनियम 1939 के तहत पहले तलाक देना होगा। यह फैसला पंजाब एंड हरियाणा हाईकोर्ट ने प्रेमी जोड़े की प्रोटेक्शन याचिका पर सुनवाई के बाद जस्टिस अलका सरीन की कोर्ट ने सुनाया है। हरियाणा के मेवात (नूंह) जिले से संबंधित एक मुस्लिम प्रेमी जोड़े ने विवाह के बाद हाईकोर्ट से सुरक्षा के लिए याचिका दाखिल की थी। उन्होंने हाईकोर्ट को बताया कि दोनों पहले ही विवाहित हैं। मुस्लिम महिला का आरोप था कि उसकी शादी इच्छा के खिलाफ की गई थी, इसलिए अब वह अपने प्रेमी से शादी कर रह रही है। हाईकोर्ट को बताया गया कि दोनों के पारिवारिक सदस्य शादी के खिलाफ हैं और जान से मारने और संपत्ति से बेदखल करने की धमकी दे रहे हैं। वकील ने बताया कि प्रेमी जोड़ा मुस्लिम है और मुस्लिम धर्म के अनुसार एक से ज्यादा विवाह की छूट है। इस पर बेंच ने सवाल उठाते हुए कहा कि शादी गैर-कानूनी है, क्योंकि मुस्लिम व्यक्ति पत्नी को तलाक दिए बिना एक से अधिक बार शादी कर सकता है, लेकिन अगर महिला को दूसरी शादी करनी है तो मुस्लिम पर्सनल लॉ या मुस्लिम विवाह अधिनियम 1939 के तहत पहले तलाक लेना अनिवार्य है।

माल रोड और रिज मैदान की सैर की तथा स्कीइंग का भी लुत्फ उठाया

शिमला। बॉलीवुड अभिनेत्री उर्वशी रौतेला इन दिनों शिमला में हैं। उर्वशी अपनी मां के साथ घुमने आई हैं। उन्होंने शिमला में बर्फ तथा माल रोड और रिज मैदान की सैर की और स्कीइंग का भी लुत्फ उठाया। इस दौरान उर्वशी ने कहा कि वह किसान आंदोलन का समर्थन करती हैं। किसान आंदोलन पर पॉप स्टार रिहाना के ट्वीट और बॉलीवुड के कलाकारों की टिप्पणियों पर उर्वशी ने कहा कि सबका अपना-अपना नजरिया है। रिहाना ने सिर्फ इतना कहा है कि इसके बारे में बात होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि वह कुछ प्रोजेक्ट कैंसल करने के बाद ही शिमला आई हैं। इससे पहले वह सनम रे की शूटिंग के लिए शिमला आई थीं, लेकिन उस दौरान ज्यादा घूमने का मौका नहीं मिल सका था। उर्वशी ने बताया कि वह हिमाचल की खूबसूरती की कायल हैं और मौका मिलते ही शिमला आने के लिए बेताब रहती हैं। उर्वशी का जन्मदिन 25 फरवरी को है।

पीयू में सम्पन्न हुई संस्कृत वर्कशॉप

» विनोद कुमार

चंडीगढ़। पंजाबी विश्वविद्यालय संस्कृत विभाग द्वारा केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय (राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान), जनकपुरी, नई दिल्ली के सौजन्य से छन्द एवं अलंकार की उपयोगविधि पर एक सप्तदिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला में लगभग 50 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया, जिनमें कॉलेज, विश्वविद्यालय के अध्यापक, शोधच्छात्र और पी.जी. के छात्र भी थे। ऑनलाइन के साथ साथ विभाग के उन प्रतिभागियों ने भी कोरोना नियमों का पालन करते हुए इसमें ऑफलाइन भी भाग लिया, जिनके पास विशेष रूप से हरियाणा में नेटवर्क की समस्या के कारण ऑनलाइन कक्षा में बाधा आ रही थी। प्रथम दिन राष्ट्रपति सम्मानित, पद्मश्री प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र ने दो विशिष्ट व्याख्यानों में संस्कृत की समृद्ध काव्यपरम्परा और आधुनिक काव्यलेखन का विस्तृत विवरण सामने रखा। इसके पश्चात डॉ. नरेश बत्रा (अम्बाला), डॉ. विक्रम कुमार (चण्डीगढ), प्रो. सतीश कुमार कपूर (जम्मू), प्रो. रबीन्द्र कुमार पण्डा (बड़ौदा, गुजरात) तथा प्रो. जगदीश प्रसाद सेमवाल (होश्यारपुर) के विशेष व्याख्यान व संवाद हुए। प्रो. वी. के. अलंकार ने प्रतिदिन व्याख्यान के साथ अभ्यास सत्र में प्रतिभागियों को छन्द व पद्य लेखन का अभ्यास कराया और अलंकारों के लोकभाषा में प्रयोग के उदाहरणों से वाक्य में प्रयुक्त अलंकारों का अभ्यास कराया।

समापन भाषण कोल्हान विश्वविद्यालय, चाईबासा, झारखण्ड के कुलपति प्रो. गंगाधर पण्डा द्वारा दिया गया। प्रो. पण्डा ने कालिदास साहित्य के उदाहरणों से अलंकारों की विस्तृत व्याख्या की।

छात्रों ने इस कार्यशाला के दौरान प्रतिदिन श्लोक लिखकर दिखाए और अलग अलग अलंकारों का प्रयोग करके दिखाया।

केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली ने इस कार्यशाला की स्वीकृति मार्च 2020 में दी थी, किन्तु कोरोना के कारण तब सम्भव नहीं हो पाया था। संस्कृत विभाग सहयोग के लिए केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, जनकपुरी, नई दिल्ली का आभारी है।

चंडीगढ़ विकास महामंच द्वारा सरस्वती पूजन समारोह 16 को

» मदरलैंड संवाददाता

चंडीगढ़। ग्राम दरिया में आयोजित होने वाले 27वां सरस्वती पूजन समारोह के लिए वार्ड नंबर 9 ग्राम दरिया के बच्चों की रिहर्सल ब्लेज डांस स्टूडियो के कोरियोग्राफर विलिस ननरिया की देखरेख में किया जाएगा। यह समारोह 16 फरवरी को होगा। विलिश ने बताया कि सभी बच्चे सरस्वती माता की वंदना पर नृत्य प्रस्तुत करेंगे। ये पेट्रियोटिक सॉन्ग पर भी अपनी प्रस्तुति देंगे जिसके बारे में आगे जानकारी देते हुए आयोजक चंडीगढ़ विकास महामंच के अध्यक्ष सुनील कुमार गुप्ता ने बताया कि संस्कृतिक कार्यक्रम के दौरान आने वाले सभी मुख्य अतिथियों द्वारा ग्राम दरिया वार्ड नंबर 9 के सैकड़ों बच्चों को पुरस्कृत किया जाएगा। आयोजक सुनील कुमार गुप्ता ने बताया कि अगर कोई भी और बच्चा वार्ड नंबर 9 में से कार्यक्रम के दौरान अपनी परफॉर्मेंस देना चाहता है तो वह स्टेज के माध्यम से दे सकता है।

हवा की तरह समाज सेवा करके सभी के प्राणों का आधार बनें: नूतन कुमारी सान फाउंडेशन

» मदरलैंड संवाददाता

चंडीगढ़। व्यक्ति को समाज सेवा हवा की तरह करके सभी के प्राणों का आधार बनना चाहिए। सान फाउंडेशन की नूतन कुमारी ने कहा कि हवा बिना दिखाई दिए प्रत्येक जीव की सेवा करके सब के प्राणों का माध्यम बनती है। इससे सीख लेकर दूसरों की मदद करते वक्त व्यक्ति को लाचारी का प्रदर्शन किए बिना अपनी जिम्मेदारी निभाना चाहिए।

सान फाउंडेशन ने यह अभियान मंगलवार को लगभग 100 से अधिक समाज के निचले वर्ग के लोगों को लाभान्वित करने हेतु शुरू किया। सान फाउंडेशन शहर के विभिन्न हिस्सों में समाज के गरीब और मजदूरों को मुफ्त कम्बल ब्जैकेट्स वितरित करता रहता है व जानकारी देते हुए फाउंडेशन की नूतन कुमारी व सान फाउंडेशन के सचिव मृत्युंजय कुमार , जो बिहार के शेखपुरा के जवाहर नवोदय विद्यालय के पूर्व छात्र हैं ने यह जानकारी देते हुए बताया की कमजोरों व जरूरतमंदों की मदद करना पुण्य कार्य है , इस कड़ाके की ठण्ड से लोगों को बचाना हम सबकी नैतिक जिम्मेदारी है । यही सच्ची समाज सेवा है जिससे असहायों की मदद करने से आत्मा की संतुष्टि मिलती है ।

उन्होंने कहा की आर्थिक रूप से कमजोर लोगों को गर्म कपड़ों की व्यवस्था कर पाना कठिन होता है , ऐसे में आर्थिक रूप से सम्पन्न लोगों को मदद के लिए बढ़चढ़ कर हिस्सा लेना चाहिए। सान फाउंडेशन जरूरतमंदों के लिए समाज के सम्रद्ध वर्ग को जागृत करने का अलख जगा रही है।

बिलासपुर में फैला डायरिया, 16 ट्रेनी नर्सों सहित 30 पहुंचे अस्पताल

बिलासपुर। हिमाचल प्रदेश के बिलासपुर शहर में डायरिया फैला है। डियारा सेक्टर, हाउसिंग बोर्ड तथा बिलासपुर क्षेत्रीय अस्पताल के नर्सिंग स्कूल में डायरियां के 30 मामले के सामने आए है। इसको लेकर स्वास्थ्य विभाग ने टीमों को स्थानीय शहर के डियारा सेक्टर भेजा तथा स्थिति का जायजा लिया। स्वास्थ्य विभाग की टीमों ने लोगों को घर-घर जाकर ओआरएस तथा जरूरी दवाईयां वितरित की। विभागीय टीम ने लोगों को अपने घरों के आस पास की सफाई रखने व बार बार हाथ साफ रखने का आग्रह किया। अभी तक कोई भी रोगी अस्पताल में भर्ती नहीं है।

बिलासपुर क्षेत्रीय अस्पताल परिसर में स्थित नर्सिंग स्कूल में 15 प्रशिक्षु नर्सें भी डायरियां की चपेट में आई है। डायरिया फैलने की बजह आईपीएच विभाग के टैंक से आने वाली पानी की सप्लाई और बदलते मौसम को माना जा रहा है। स्वास्थ्य विभाग के एमईआई पूर्ण चंद ने कहा कि विभागीय टीमों ने लोगो को घर-घर जाकर ओआरएस व दवाईयां वितरित कर दी है। बिलासपुर क्षेत्रीय अस्पताल के चिकित्सा अधीक्षक डा एनके भारद्धाज ने कहा कि बिलासपुर क्षेत्रीय अस्पताल परिसर में स्थित नर्सिंग स्कूल में 15 प्रशिक्षु नर्सों को भी डायरिया की शिकायत है, लेकिन अब स्वास्थ्य विभाग ने पानी के सैंपल भी लिए है तथा खाना सप्लाई करने वालों को साफ-सफाई रखने की हिदायत दी है। अभी तक यहां पर कोई भी रोगी उपचाराधीन नहीं है।

मंडी में 14.154 किलो चरस के साथ तस्कर गिरफ्तार

मंडी। हिमाचल प्रदेश के मंडी जिला पुलिस ने 14 किलो 154 ग्राम चरस के साथ चरस तस्कर को गिरफ्तार किया। मिली सूचना पर पुलिस की टीम ने गलमा के पास नाकेबंदी की और स्कार्पियो गाड़ी को रोककर उसकी तलाशी ली तो उसमें से चरस की भारी भरकम खेप बरामद हुई। गाड़ी में सवार देवी सिंह को गिरफ्तार कर लिया गया। गाड़ी में एक अन्य व्यक्ति भी सवार था, जो मौके से भाग गया है। पुलिस उसकी तलाश कर रही है।

एसपी मंडी शालिनी अग्निहोत्री ने बताया कि आरोपी के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज कर कार्रवाई शुरू कर दी गई है। आरोपी को पकड़ने के बाद पुलिस ने टीम गठित कर आरोपी के घर जाकर छापेमारी की। घर पर की गई छापेमारी में पुलिस को 1 लाख 3 हजार नकद, गहने, डिजिटल तराजू, जमीन के कागजात, गाड़ी के कागजात, जीवन बीमा के कागजात, खाली मोबाईल फोन के डिब्बे और कुछ सिम कार्ड बरामद हुए हैं।

मुख्यमंत्री ने प्रदेश सरकार को भरपूर समर्थन देने के लिए लोगों का आभार जताया

शिमला। मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर ने आज यहां बजट 2021-22 के लिए कांगड़ा और हमीरपुर जिला के विधायकों की विधायक प्राथमिकता की बैठक के पहले सुबह के सत्र की अध्यक्षता करते हुए कहा कि वार्षिक बजट से हर साल योजना की बैठक आयोजित की जाती है ताकि विधायकों के सुझावों और प्राथमिकताओं को बजट में शामिल किया जा सके। उन्होंने कहा कि अपने तीन वर्षों के कार्यकाल के दौरान वर्तमान राज्य सरकार ने सुनिश्चित किया है कि विधायकों की विकासात्मक आकांक्षाओं के अनुरुप नीतियों और कार्यक्रमों को तैयार किया जाए।

उन्होंने कहा कि कोविड-19 महामारी ने पूरे विश्व की अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है। प्रदेश के विधायकों ने इस महामारी से लड़ने के लिए अपने वेतन का एक बड़ा हिस्सा दान करने के अलावा अपने-अपने

क्षेत्र के लोगों को सीएम कोविड फंड के प्रति उदारता से दान करने के लिए प्रेरित किया, जो प्रशंसनीय है।

जय राम ठाकुर ने कहा कि देश में फ्रंटलाइन योद्धाओं को कोविड-19 के लिए स्वदेशी वैक्सीन दी जा रही है जो वैज्ञानिकों की कड़ी मेहनत और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा प्रदान किए गए सक्षम नेतृत्व के कारण संभव हो पाया है। राज्य के लोगों ने प्रदेश सरकार को अपना पूर्ण सहयोग और समर्थन दिया है और भाजपा सरकार ने राज्य में लोकसभा की सभी चार सीटों सहित उपचुनावों में भी विजय प्राप्त की है। उन्होंने कहा कि पंचायती राज संस्थाओं और शहरी स्थानीय निकायों के चुनाव परिणामों में भी ज्यादातर सीटों पर भाजपा समर्थित उम्मीदवारों ने जीत हासिल की है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार ने पिछले तीन वर्षों के दौरान कई कल्याणकारी और विकासात्मक योजनाएं आरम्भ की हैं। गृहिणी सुविधा योजना के तहत हर घर में मुफ्त गैस कनेक्शन सुनिश्चित किए गए हैं और राज्य में कोई भी व्यक्ति धन की कमी के कारण चिकित्सा उपचार से वंचित न रहे, इसके लिए हिमकेयर योजना चलाई गई है। उन्होंने कहा कि जन मंच और मुख्यमंत्री हेल्पलाइन-1100 ने जनता की शिकायतों का त्वरित निवारण किया है। गंभीर रोगों से ग्रसित रोगियों के जरूरतमंद परिवारों को सहारा योजना राहत प्रदान कर रही है।

उन्होंने कहा कि नाबार्ड के अन्तर्गत विधायक प्राथमिकताओं के लिए वर्ष 2020-21 में 926.24 करोड़ रुपये की 251 परियोजनाएं स्वीकृत की गई हैं। इस धनराशि में से 565.52 करोड़ रुपये सड़कों व पुलों के निर्माण जबकि 360.72 करोड़ रुपये लघु सिंचाई एवं पेयजल योजनाओं के लिए मंजूर किए गए हैं। उन्होंने कहा कि प्रदेश की पूर्व सरकार के पहले तीन वर्ष के कार्यकाल में वार्षिक योजना आकार के लिए 13 हजार 300 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया था।

ऑड-ईवन रोल नंबर से दी गई विद्यार्थियों को आने की इजाजत

शिमला। हिमाचल में कोरोना महामारी के लम्बे अंतराल के बाद एक बार फिर कॉलेजों में रौनक लौटी है। यहां कॉलेज करीब 11 महीनों बाद खुले हैं। नियमित कक्षाएं शुरू कर दी गईं। अब छात्रों को कोविड नियमों का पालन करते हुए कॉलेज आना होगा। राजधानी के संजौली स्थित सेंटर ऑफ एक्सिलेंस कॉलेज में पूरे कैंपस समेत सभी कमरों को सैनिटाइज किया गया। कॉलेज प्रबंधन ने फैसला किया है कि सोशल डिस्टेंसिग का पालन कराने के लिए छात्रों पर ऑड-ईवन का फॉर्मूला लागू किया जाएगा। हर रोज इसी तरह ही नियमित कक्षाएं लगेंगी।

दूर-दराज के क्षेत्रों को देखते हुए हॉस्टल भी खोले जाएंगे। छात्रों और अभिभावकों को अंडरटेकिंग देनी पड़ेगी। प्रशासन ने फैसला किया है कि बड़े कमरों में दो और छोटे कमरे में केवल एक ही छात्र को रहने की अनुमति दी जाएगी। कोविड के नियमों की कड़ाई से पालना करनी होगी। कॉलेज के प्रिंसिपल चंद्रभान मेहता ने बताया कि इस संबंध में स्टाफ और छात्र संगठनों से बैठक की गई है।

केंद्र के कृषि कानूनों को पंजाब में लागू करने का सुझाव आहलूवालिया ने दिए थे

चंडीगढ़। पंजाब के सीएम अमरिंदर सिंह ने राज्य को कोविड-19 के बाद वित्तीय संकट से उबारने के लिए एक समिति गठित की थी। इस समिति की अध्यक्षता उन्होंने मोंटेक सिंह अहलूवालिया को सौंपी थी। मोंटेक सिंह आहलूवालिया, मनमोहन सिंह की सरकार में योजना आयोग के उपाध्यक्ष रह चुके हैं। मोंटेक सिंह अहलूवालिया के नेतृत्व वाली समिति ने अपना पहली रिपोर्ट पंजाब सरकार को अगस्त महीने में ही सौंप दी थी। उस दौरान 74 पन्ने की इस रिपोर्ट में आहलूवालिया ने सरकार को ऐसे सुझाव दिए थे जो केंद्र की मोदी सरकार की नीतियों से मेल खाते हैं। लेकिन दिक्कत अमरिंदर सिंह के लिए रही क्योंकि वह खुलकर केंद्र की नीतियों का विरोध करते रहे हैं।

इतना ही नहीं, अहलूवालिया के नेतृत्व वाली कमेटी ने केंद्र सरकार के कृषि कानूनों और बिजली संशोधन बिल 2020 की खुली वकालत करते हुए इसे राज्य में लागू करने का सुझाव दिया था। हालांकि, पंजाब सरकार शुरू से ही दोनों ही कानूनों का लगातार

विरोध करती रही है और इन दोनों कानूनों को राज्य में किसी भी कीमत पर लागू नहीं करने का ऐलान कर चुकी है। इस समिति ने किसानों के लिए खुली मंडी, किसानों को दी जा रही बिजली सब्सिडी समाप्त करने जैसी चीजों भी सिफारिशें की थी। समिति राज्य के आर्थिक स्थिति को पटरी पर लाने के लिए 3 चरणों में अपनी सिफारिश देगी।

इन सबके बीच, मोंटेक सिंह अहलूवालिया की अध्यक्षता वाली कमेटी की सिफारिशों को पंजाब सरकार ने खारिज कर दिया है। पंजाब के मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह ने एक के बाद एक ट्वीट कर मोंटेक सिंह अहलूवालिया की कृषि क्षेत्र को ले की गई सिफारिशों को खारिज करने की बात कही है। मुख्यमंत्री ने अपने ट्वीट में कहा कि कृषि क्षेत्र पर मोंटेक सिंह अहलूवालिया की कमेटी की सिफारिशों को अस्वीकार करके मैंने, मेरे और मेरी सरकार का रुख स्पष्ट कर दिया है। अमरिंदर सिंह ने साफ तौर पर कहा कि ऐसी कोई भी सिफारिश जो किसानों के हित में नहीं है उसे पंजाब में लागू नहीं किया जाएगा। उन्होंने कहा कि समिति का कार्य सिफारिशें करना है उसे स्वीकार या अस्वीकार करना मेरी सरकार का काम है।

मोटापे को हलकेपन से लेना हो सकता है खतरनाक: डा. अमित गर्ग

» मदरलैंड संवाददाता

चंडीगढ़। मोटापे को हलकेपन से नही लेना चाहिए। उन्होंने कहा कि हाल ही में किए गए शोधों से यह साबित होता है कि यदि किसी व्यक्ति को मोटापे के अलावा कोई और बीमारी नहीं है तो उसे भी गंभीर कोविड बीमारी होने का रिस्क ज्यादा होता है। असंयमित मधुमेह, नींद न आने (स्लीप एपनिया) की बीमारी को झेल रहे मरीज जिनका वजन भी ज्यादा हो उन्हें सांस की कई तरह की दिक्कतों का सामना करना पडता है जिसके कारण उनकी मौत तक हो सकती है।

एक पत्रकार सम्मेलन को संबोधित करते हुए डाक्टर अमित गर्ग ने कहा कि उन व्यक्तियों में जिनका बाडी मास इंडेक्स तीस से ज्यादा होता है उनके लिए कोविड होने पर ज्यादा जटिलताएं होने का खतरा पैदा हो जाता है। हाल की शोधों से यह भी साबित होता है कि मोटापा शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को कमजोर करता है, जिससे बीमारियां होने का और ज्यादा खतरा पैदा हो जाता है।

डॉक्टर गर्ग ने बताया कि मोटे लोग समस्या पैदा होने के पहले ही स्वतप्रेरित होकर बेरियाटिक सर्जरी के बारे में डाक्टरों से सलाह ले सकते हैं। ज्यादातर मरीज बेरियाट्रिक सर्जरी के बारे में तब सलाह लेते हैं जब उनको टाइप 2 डायबिटीज या फिर स्लीप एपनीया की बीमारी हो जाती है या डाक्टर उनके घुटने बदलने की सर्जरी करने से इनकार कर देते हैं। इसलिए मरीजों को चाहिए कि वे खुद ही अपने स्तर पर बेरियाट्रिक सर्जरी के बारे में सलाह ले। यदि किसी व्यक्ति का लगातार वजन बढता है तो उसे डाक्टरों से तुरंत सलाह लेना चाहिए।

डॉक्टर गर्ग ने कहा कि वे अपने अनुभवों से कह सकते हैं कि ज्यादातर मरीज आर्थिक चिंताओं के कारण मोटापा के इलाज से बचते हैं। लेकिन अब बीमा कंपनियां भी मोटापे के इलाज में मदद कर रही हैं। उन्होंने कहा कि हालांकि मोटापे के इलाज के बारे में बड़े पैमाने पर भ्रामक सूचनाएं फैली हैं लेकिन सही व वैज्ञानिक तरीके से इलाज कराया जाए तो यह बहुत प्रभावी है। 40 से ज्यादा बीएमआई या 35 से ज्यादा बीएमआई वाले मरीज जिन्हें मोर्बिडीटीज हैं उन मरीजों के लिए सर्जरी सबसे अच्छा विकल्प है।

नई आईआरडीएआई रेगुलेशन के अनुसार बीमा कंपनियों को भी इसके इलाज का खर्चा देने के लिए बाध्य कर दिया गया है।

शार्प ने उद्योग के सबसे स्मार्ट फुटप्रिंट्स में से एक के साथ, फ्री टू फिट कलर मल्टीफंक्शनल प्रिंटर सी-क्यूब आईटी प्रस्तुत किया

» मदरलैंड संवाददाता

चंडीगढ़। अपने अद्वितीय प्रौद्योगिकीय उत्पादों व समाधानों के लिए पूरी दुनिया में मशहूर, शार्प कॉर्पोरेशन, जापान के पूर्ण स्वामित्व की भारतीय अनुषंगी ने ऑफिस में उपयोग के लिए कंपैक्ट स्मार्ट कलर मल्टीफंक्शनल प्रिंटर (एमएफपी), बीपी-30सी25जैड के लॉन्च की घोषणा की। सी-क्यूब आईटी नाम का यह प्रिंटर अपनी तरह का सबसे छोटा बिजनेस कॉपियर है और खासकर एसएमई, शिक्षा, हैल्थकेयर, बीएफएसआई, कानूनी एवं कॉर्पोरेट कामों के लिए डिजाईन किया गया है। बीपी-30सी25जैड का अधिकतम खुदरा मूल्य 2,92,379 रु. है और यह सभी प्रमुख मेट्रो एवं टियर1, 2 और 3 बाजारों में शार्प के विस्तृत डीलर नेटवर्क के पास उपलब्ध है।

शार्प के बीपी-30सी25जैड में नियमित आकार के एमएफपी की सभी खूबियां स्टाईलिश डिजाईन के साथ छोटे पैकेज में उपलब्ध हैं।

बीपी-30सी25जैड बिल्ट-इन 100 शीट ह्यरिवर्सिंग सिंगल पास फीडर के साथ कलर एवं ब्लैक/व्हाईट में 25 पेज प्रति मिनट तक की प्रिंट स्पीड प्रदान करता है, जिसके कारण जानकारी साझा करना बहुत आसान और तीव्र हो जाता है। इस ए3 साईज कलर एमएफपी की मुख्य विशेषताओं में 7 इंच का टच पैनल, 5जीबी रैम, 128जीबी एसएसडी, फौलो मी प्रिंट, 'इमेज प्रिव्यू' एवं फीचर एक्सपैंडेबिलिटी, जैसे ऑफिस डायरेक्ट प्रिंट, डेटा सिक्योरिटी, ओसीआर, यूज ऑथेंटिकेशन, 'फैक्स एक्सपैंशन किट' एवं 'ड्युअल नेटवक, सपोर्ट आदि हैं।

वर्चुअल लॉन्च के अवसर पर, शिंजी मिनातोगवा, मैनेजिंग डायरेक्टर, शार्प बिजनेस सिस्टम्स (इंडिया) प्राईवेट लिमिटेड ने कहा, ह्यह्यइस चुनौतीपूर्ण समय में भारत में व्यवसाय की निरंतरता सुनिश्चित करने के लिए शार्प का योगदान अग्रिम पंक्ति में रहकर ऑफिस का संचार आसान, ज्यादा प्रभावशाली और सुरक्षित बनाने के लिए है। बीपी30सी25जैड ऑफिस की दैनिक जरूरतों, विभिन्न व्यवसायिक परिदृश्यों, अनेक तरह के वर्क स्टाईल एवं कॉर्पोरेट सुरक्षा की मांगों के लिए उपयुक्त है और इसके स्वामित्व का खर्च कम है।

धर्मशाला से पठानकोट जा रही बस पेड़ से टकराई, कई लोग घायल

कांगड़ा। हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले में सुबह एचआरटीसी की एक बस हादसा के शिकार हो गई। ये हादसा शाहपुर के सिंहवा के पास हुआ। घटना करीब डेढ़ दर्जन लोगों को हल्की चोटें आई हैं जबकि 5 गंभीर घायल हैं, जिन्हें शाहपुर के सिविल हॉस्पिटल में भर्ती करवाया गया है। चश्मदीदों के मुताबिक ये घटना उस वक़्त घटित हुई जब बस धर्मशाला से पठानकोट जा रही थी और सामने से आते हुये एक ट्रक को अपास देते वक्त चानक से ओवरटेक करती एक कार को बचाने में घटना ग्रस्त हो गई।

चश्मदीदों के मुताबिक पहले बस चालक ने बस को सामने एक सफेदे के पेड़ से टकराने की कोशिश की मगर उस वक़्त बस अनियन्त्रित हो गई और खाई में जा गिरी।

newsdesk@motherlandvoice.org
editor@motherlandvoice.org

चमोली त्रासदी: जानकर भी अनजान होने का परिणाम

अब इसे त्रासदी कहें या हादसा या फिर आप बुलाई आपदा जो भी, लेकिन सच यही है कि 2013 में भी इसी उत्तराखण्ड की केदरानाथ त्रासदी की रोंगटे खड़ी कर देने वाली तस्वीरें और रिपोर्ट्स चल चित्र जैसे घूमने लग जाती हैं. 16 जून 2013 की रात को उत्तराखण्ड ही क्या पूरा देश कभी भूल नहीं सकता. कुदरत के कहर की वैसी ही भयावह तस्वीरें फिर सामने हैं । फर्क बस इतना कि तबाही तो जमकर हुई लेकिन संतोष इसी बात का है कि तब के मुकाबले अब बहुत कम लोग काल कलवित हुए । हालाकि सटीक आंकड़ा आने में अभी समय लगेगा । लेकिन नुकसान की तस्वीरों ने तब केदारनाथ का जो डरावना सच दिखाया था लगभग वैसा ही अब है ।

ऋतुपर्ण दवे

तो क्या चमोली में जो कुछ हुआ वह जलवायु परिवर्तन का नतीजा है या बेहद विकसित और साधन संपन्न होती दुनिया के लिए अभी भी चेत जाने की दस्तक? कुछ भी कहें लेकिन सच यह है कि अब से 8 महीने पहले ही वैज्ञानिकों ने आगाह कर दिया था और इसको लेकर जर्नल साइंस एडवांस 2019 में एक रिसर्च भी छपी थी जिसमें बड़े इलाके में ग्लेशियरों के तेजी से पिघलने तथा इसको लेकर 40 वर्षों के अध्ययन जिसमें सैटेलाइट सर्वेक्षण और तस्वीरों के विश्लेषण का नतीजा भी शामिल है में अंदेशा जताया गया था कि ग्लोबल वार्मिंग से हिमालय के ग्लेशियर पिघल रहे हैं । इसे अनदेखा किया गया । आँकड़े और अध्ययन बताते हैं कि पिछले 25 वर्षों यानी 1975 से 2000 तक के मुकाबले 2000 से 2016 तक वहाँ का तापमान लगभग एक डिग्री सेल्सियस बढ़ा है. जहाँ वर्ष 2000 तक यानी बीते 25 वर्षों में केवल ग्लेशियरों से चैथाई मीटर तक बर्फ पिघलती थी वहीं 2000 के बाद पिघलन दर दो गुनी से भी ज्यादा हो गई ।स्वाभाविक है कि सारा कुछ ग्लोबल वार्मिंग का खेल है. लेकिन हैरानी है कि गुपचुप ग्लेशियर पानी में तब्दील होते रहे और हुक्मरान व अफसरान सब बेखबर रहे ! उन्हीं ग्लेशियरों का नतीजा रविवार को अपने रौद्र रूप में सात साल, सात महीने, 25 दिन बाद फिर सामने आया. इस बार भी देवभूमि उत्तराखंड ही फिर निशाना बनी ।

अब इसे त्रासदी कहें या हादसा या फिर आप बुलाई आपदा जो भी, लेकिन सच यही है कि 2013 में भी इसी उत्तराखण्ड की केदरानाथ त्रासदी की रोंगटे खड़ी कर देने वाली तस्वीरें और रिपोर्ट्स चल चित्र जैसे घूमने लग जाती हैं. 16 जून 2013 की रात को उत्तराखण्ड ही क्या पूरा देश कभी भूल नहीं सकता. कुदरत के कहर की वैसी ही भयावह तस्वीरें फिर सामने हैं । फर्क बस इतना कि तबाही तो जमकर हुई लेकिन संतोष इसी बात का है कि तब के मुकाबले अब बहुत कम लोग काल कलवित हुए । हालाकि सटीक आंकड़ा आने में अभी समय लगेगा । लेकिन नुकसान की तस्वीरों ने तब केदारनाथ का जो डरावना सच दिखाया था लगभग वैसा ही अब है । तब सरकारी आंकड़ों में 4000 से ज्यादा मानव मौतों की बात दर्ज है वहीं असल आँकड़ा 10000 हजार से ऊपर बताया जाता है. चमोली हादसे पर जान-माल का नुकसान तबके मुकाबले कम है जिसे ज्यादा सतर्कता बरत और कम किया जा सकता था ।

दुनिया के तीसरे ध्रुव के नाम से पहचाने जाने वाले हिमालय को लेकर जितनी जानकारी है उससे यह संकट खत्म होने से रहा क्योंकि न तो ज्यादा डेटा है और न ही रिसर्च. आर्कटिक और अंटार्टिका के बाद दुनिया का तीसरा ध्रुव इसी हिमालय क्षेत्र को हिन्दू कुश भी कहते हैं. जो हिमालय क्षेत्र अफगानिस्तान, बांग्लादेश, भूटान, चीन, भारत, किर्गिजस्तान, मंगोलिया, म्याँमार, नेपाल, पाकिस्तान, ताजिकिस्तान और उज्बेकिस्तान तक यानी लगभग 5 मिलियन वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैला है. विशेषताओं की बात करें तो इस पूरे क्षेत्र में सांस्कृतिक रूप से संपन्न एक बड़ी आबादी रहती है. हाँ, यही वो अकेला क्षेत्र है जो ध्रुवीय क्षेत्रों से अलग बाहर की दुनिया में सबसे ज्यादा बर्फ इकट्ठा करता है इसीलिए इसको द थर्ड पोल भी कहते हैं. ऐसे में घूम फिरकर वही सच्चाई सामने आ जाती है कि हिमालय के ग्लेशियरों में जो चल रहा है उसकी क्या वजह है और उसे कैसे रोका जा सकता है? इस पर न तो कोई प्रमाणित शोध ही है और न ही पूरी गंभीरता से कुछ किया गया दिखता है ।

हालाकि इस बार सर्दियों में यह हादसा हुआ है जिस पर कई लोगों को आश्चर्य होना स्वाभाविक है. यह भी सच है कि पिछले काफी दिनों से वहाँ पर मौसम बिगड़ा हुआ था और जबरदस्त बर्फबारी हो रही थी । हो सकता है कि इससे उस पूरे इलाके में फिसलन भी बढ़ गई हो जिसके चलते कोई बर्फ की चट्टान खिसक गई हो । लेकिन यह सब कयास ही हैं ।

चमोली का सच वैज्ञानिक शोध का विषय है. लेकिन सवाल वही कि कि हम हादसों से कब सीख लेंगे? यूँ तो ग्लेशियरों पर ग्लोबल वॉर्मिंग यानी जलवायु परिवर्तन के असर को लेकर लंबे समय से और बेहद विस्तार से अध्ययन किया जा रहा है जिससे ही पता चला कि हिमालय के हिंदुकुश क्षेत्र में पारा बढ़ रहा है जिससे वैश्विक तापमान की वृध्दि का असर ज्यादा ऊंचाई पर होने से हिमालय पर कुछ ज्यादा ही हो रहा है. कुछ महीने पहले ही इंटरनेशनल सेंटर फॉर इंटिग्रेटेड माउंटेन डेवलपमेंट यानी आईसीआईएमओडी की हिंदुकुश हिमालय असेसमेंट रिपोर्ट में आशंका जताई गई थी कि साल 2100 तक अगर वैश्विक उत्सर्जन में कमी नहीं आई तो हिमालय के ग्लेशियर्स का काफी हिस्सा (दो-तिहाई तक) पिघल जाएगा।

यकीनन चमोली या केदारनाथ जैसी त्रासदी ग्लोबल वॉर्मिंग का नतीजा तो है ही, लेकिन यह भी सही है कि एशियाई देशों में लकड़ी और कोयला भी बहुतायत में जलाए जाने का सीधा असर वायुमण्डल में कार्बन बढ़ जाने से होता है। जब यही प्रदूषित धुएँ के बादल पर्वतों के ऊपर छा जाते हैं तो सौर्य ऊर्जा को तेजी से सोखते हैं। इसके चलते पहाड़ों पर जमीं बर्फ भी खूब पिघलने लगती है. अलकनंदा-धौलीगंगा नदियों में इस मौसम में बाढ़ तपोवन क्षेत्र में ग्लेशियर में हुई टूट की वजह से आई जिससे पूरे क्षेत्र में जहाँ तबाही मची वहीं निजी स्वामित्व वाली 130 मेगावाट की ऋषि गंगा पनबिजली प्रोजेक्ट जहाँ पूरी तरह तबाह हो गया है वहीं निमार्णाधीन 520 मेगावॉट की तपोवन विष्णुगाड जल विद्युत परियोजना को भी भारी नुकसान हुआ है। अमूमन जब ग्लेशियर के पिघलने से बने हिमनद एकाएक झील में तब्दील हो जाते हैं तो काफी पानी जमा हो जाता है और जमें हुई बर्फ को थामें ग्लेशियर या तो वजन से या फिसलन से टूट जाते हैं। इन्हीं वजहों से एकाएक भारी मात्रा में पानी निकलता है और वह बाढ़ का शक्ल ले लेता है. चूंकि ग्लेशियर काफी ऊँचे स्थानों पर होते हैं ऐसे में काफी ऊंचाई पर होने वाली इन घटनाओं के चलते ऐसी बाढ़ की भयावहता और नुकसान ज्यादा होने की आशंका रहती है. चमोली में भी ऐसा हुआ. ग्लेशियर कब, क्यों और कैसे टूटते हैं इसके कई कारण हो सकते हैं. जैसा कि कटाव, पिघला हुआ या जमा हुआ पानी का भारी दबाव, बर्फ या चट्टानों का स्खलन या बर्फ के नीचे भूकंप के झटके।

यह तब भी हो सकता है जब पास में ग्लेशियर का कोई बड़ा हिस्सा टूटने की वजह से हिमनद से बनी झील में जमा पानी की भारी मात्रा अपने स्थान से खिसकने लग जाए। हालाकि ग्लेशियरों का सामान्य और परंपरागत तौर पर पिघलना उतना हानिकारक नहीं है जितना वायुमंडल में प्रदूषण के चलते से तेजी से पिघलना है। चमोली में यही हुआ।

यह लेखक की निजी राय है

संपादकीय

वार्ता की पहल

कृषि कानूनों के खिलाफ 75 दिन से आंदोलन कर रहे किसान नेता एक बार फिर सरकार से बातचीत करने को तैयार हो गए हैं। उन्होंने यह फैसला प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अपील के बाद लिया। मोदी ने सोमवार को राज्यसभा में किसान नेताओं से अपील की थी कि विरोध खत्म कर बातचीत के लिए आगे आएं। इसके बाद संयुक्त किसान मोर्चा के नेताओं ने कहा कि वे अगले दौर की बातचीत के लिए तैयार हैं, सरकार उन्हें मीटिंग का दिन और समय बता दे। इससे पहले पीएम मोदी ने राज्यसभा में कहा, मैं देख रहा हूं कि पिछले कुछ समय से इस देश में नई जमात पैदा हुई है। एक नई बिरादरी सामने आई है- आंदोलनजीवी। आप देखेंगे कि आंदोलन चाहे वकीलों का हो, स्टूडेंट्स का हो, मजदूरों का हो, हर आंदोलन में ये जमात नजर आएगी। ये आंदोलन के बिना जी नहीं सकते। हमें इन्हें पहचानना होगा। इस बयान पर किसान नेताओं ने आपत्ति जताई है। किसानों और सरकार के बीच अब तक 12 दौर की बातचीत हुई है, लेकिन कोई हल नहीं निकला। किसान इस बात पर अड़े हैं कि सरकार को तीनों कृषि कानून वापस लेने चाहिए। वहीं सरकार कह रही है कि वह कानूनों में बदलाव करने को तैयार है और किसान चाहें तो तीनों कानून डेढ़ साल तक होल्ड भी किए जा सकते हैं। दोनों के बीच आखिरी मीटिंग 22 जनवरी को हुई थी। अब तक दोनों ही पक्ष जिस तरह से अपनी-अपनी जिद पर अड़े हुए हैं, उससे कोई सकारात्मक संकेत नहीं मिलता। हठधर्मिता का ऐसा रुख किसी भी तरह से परिपक्वता का परिचायक नहीं कहा जा सकता। सरकार बार-बार स्पष्ट शब्दों में इस बात को दोहरा रही है कि कुछ भी हो, कानून वापस नहीं लिए जाएंगे। दूसरी ओर किसान संगठनों ने भी ठान लिया है कि जब तक सरकार इन कानूनों को वापस नहीं ले लेती तब तक आंदोलन खत्म करने का सवाल ही नहीं उठता। रही बात एमएसपी की तो प्रधानमंत्री से लेकर सरकार के मंत्री अगर बार-बार कह रहे हैं कि वह खत्म नहीं होगी तो किसान नेताओं को भरोसा करना होगा। माना कि किसान भले अपनी जायज मांगों को लेकर लड़ रहे हों, लेकिन इस आंदोलन को लेकर जिस तरह की राजनीति हो रही है, वह भी गंभीर चिंता की बात है। आए दिन पक्ष-विपक्ष के नेता एक दूसरे पर किसान हितों के साथ खिलवाड़ करने, किसानों को बहकाने और आंदोलन को हवा देने के जो आरोप-प्रत्यारोप लगा रहे हैं, उनसे यही संदेश जा रहा है कि यह किसानों का आंदोलन कम, राजनीतिक खींचतान ज्यादा है। 26 जनवरी को लाल किले में हुई हिंसा के बाद किसान संगठन ही आपस में बंट गए हैं। ज्यादातर किसान संगठन नए कृषि कानूनों को जहां किसान हितों के खिलाफ बता रहे हैं, वहीं कुछ किसान संगठन इसके समर्थन में उतर आए हैं। सवाल है कि इन कानूनों को लेकर किसानों के मन में जो भय और आशंकाएं हैं, उन्हें सरकार क्यों नहीं दूर कर पा रही है। अगर सरकार एमएसपी और मंडियों को खत्म नहीं करने का भरोसा लिख कर देने को तैयार है तो क्यों नहीं वह किसानों को यह समझा पा रही है कि एमएमपी को कानूनी जामा पहनाने में अड़चनें क्या हैं। किसान आंदोलन लंबा खिंचने से आमजन को भारी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। दिल्ली से सटे राज्यों की सीमा पर आवाजाही एक तरह से ठप है। राज्यों के बीच होने वाली सामान आपूर्ति पर असर पड़ा है, कच्चे माल की कमी से दिल्ली की औद्योगिक गतिविधियां ठप पड़ चुकी हैं। किसानों ने राष्ट्रीय राजमार्गों पर आवाजाही अवरुद्ध कर रखी है।

भारत देश और उसकी गौरव गाथा

दीप्ति डांगे

**'जब जीरो दिया मेरे भारत ने
भारत ने मेरे भारत ने
दुनिया को तब गिनती आयी'**

ये केवल एक गाना नही बल्कि भारत की वो गौरव गाथा है जिसपर हम सभी भारतीयों को गर्व करना चाहिए।ये वो भारत जो ईरान की छोर से लेकर इंडोनेशिया के छोर तक फैला हुआ था ज्ञान और वैभव में अद्वितीय, दुनिया की सबसे पुरानी सभ्यता वाला देश।वो देश जिसके बिना न धर्म की कल्पना की जा सकती है और न विज्ञान की।

भारत का इतिहास सिंधु घाटी की सभ्यता के जन्म के साथ माना जाता हूं।सिंधु घाटी की सभ्यता जो विश्व का सबसे पहला ज्ञात स्थायी और मुख्य रूप से नगरीय आबादी का उदाहरण है। इसका विकास 3500 ई॰पू॰ से 1800 ई॰पू॰ तक हुआ ।सिंधु घाटी सभ्यता दक्षिण एशिया के पश्चिमी हिस्से में फली फूली, जिसे आज पाकिस्तान और पश्चिमी भारत कहा जाता है।

सिंधु घाटी की सभ्यता मूलतः एक शहरी सभ्यता थी और यहां रहने वाले लोग एक सुयोजनाबद्ध और सुनिर्मित कस्बों में रहा करते थे, जो व्यापार और खेती करते थे और व्यापार का एक मुख्य केंद्र हुआ करता था। मोहन जोदाड़ो और हड़प्पा के भग्नावशेष दर्शाते हैं कि उस समय के ये शहर वैज्ञानिक दृष्टि से बनाए गए थे और इनकी देखभाल अच्छी तरह की जाती थी। यहां चौड़ी सड़कें और एक सुविकसित निकास प्रणाली थी। घर पकाई गई ईंटों से बने होते थे और इनमें दो या दो से अधिक मंजिलें होती थी। यहां के निवासियों को अनाज, गेहूं और जौ उगाने की कला ज्ञात थी, जिससे वे अपना मोटा भोजन तैयार करते थे। तांबे, कांसा एवं टिन से उपकरणों और शस्त्रों का निर्माण कर अन्य नगरों के साथ इसका विक्रय किया करते थे। घाटी के बड़े नगर हड़प्पा, लोथल, मोहनजोदड़ो और राखीगढ़ी थे।

साक्ष्यों से पता चलता है कि उस समय वहां के निवासी ऊनी तथा सूती कपड़े पहनते थे। ब्रिटिश काल में हुई खुदाइयों जिसमे भवनों के टूटे हुए हिस्से और अन्य वस्तुएं जैसे कि घरेलू सामान, युद्ध के हथियार, सोने और चांदी के आभूषण, मुहर, खिलौने, बर्तन आदि दर्शाते हैं कि इस क्षेत्र में लगभग पांच हजार साल पहले एक अत्यंत उच्च विकसित सभ्यता फली फूली। वर्ष 1500 बी सी तक हड़प्पन सभ्यता का अंत हो गया। सिंधु घाटी की सभ्यता के नष्ट हो जाने का कारण लगातार बाढ़ और अन्य प्राकृतिक विपदाओं का आना जैसे कि भूकंप आदि। भारत दुनिया का इकलौता ऐसा देश है जिसे सोने की चिड़िया के नाम से पुकारे जाने का गौरव प्राप्त है। क्योंकि, भारत प्राकृतिक संसाधनों, सांस्कृतिक, धार्मिक और आर्थिक दृष्टि से काफी समृद्ध राष्ट्र है, जिसने विश्व भर के शासकों और व्यापारियों को अपनी ओर आकर्षित किया। इतिहास के पन्ने आज भी भारत की समृद्धि को बयां करते हैं, तब चाहे वह हड़प्पा सभ्यता से संबंधित हों या फिर राजवंशी युग, मुगल काल या औपनिवेशिक भारत से संबंधित हों। 17वीं शताब्दी में भारत में व्यापार सोने के सिक्कों के माध्यम से किया जाता था। सिंधु घाटी

सिंधु घाटी की सभ्यता मूलत: एक शहरी सभ्यता थी और यहां रहने वाले लोग एक सुयोजनाबद्ध और सुनिर्मित कस्बों में रहा करते थे, जो व्यापार और खेती करते थे और व्यापार का एक मुख्य केंद्र हुआ करता था ।मोहन जोदाड़ो और हड़प्पा के भग्नावशेष दशार्ते हैं कि उस समय के ये शहर वैज्ञानिक दृष्टि से बनाए गए थे और इनकी देखभाल अच्छी तरह की जाती थी। यहां चौड़ी सड़कें और एक सुविकसित निकास प्रणाली थी। घर पकाई गई ईंटों से बने होते थे और इनमें दो या दो से अधिक मंजिलें होती थी। यहां के निवासियों को अनाज, गेहूं और जौ उगाने की कला ज्ञात थी, जिससे वे अपना मोटा भोजन तैयार करते थे। तांबे, कांसा एवं टिन से उपकरणों और शस्त्रों का निर्माण कर अन्य नगरों के साथ इसका विक्रय किया करते थे। घाटी के बड़े नगर हड़प्पा, लोथल, मोहनजोदड़ो और राखीगढ़ी थे।

सभ्यता के उत्खनन से अनेक सामग्रियां प्राप्त हुयी जिनमें विभिन्न धातुओं से (विशेष रूप से सोने से) तैयार आभूषण भी शामिल थे। इसके साथ ही आभूषण पहनी हुयी मूर्तियां भी प्राप्त हुई हैं। जो भारत की समृद्धि दशार्ता है। इसी के कारण विदेशी आक्रान्ताओं और अंग्रेजों ने इस देश को अपना गुलाम बनाया और इस देश की अकूत संपत्ति यहां से लूटकर ले गये।भारत की भव्यता ओर समृद्धि निम्न उदाहरणों से पता चलता है- मयूर सिंहासन की कीमत में दो ताज महल का निर्माण किया जा सकता था।लेकिन साल 1739 में फारसी शासक नादिर शाह ने एक युद्ध जीतकर इस सिंहासन को हासिल कर लिया था। कोहिनूर हीरे का बजन 21.6 ग्राम है और बाजार में इसकी वर्तमान कीमत 1 अरब डॉलर के लगभग आंकी जाती है। आजकल यह ब्रिटेन के महारानी के मुकुट की शोभा बढ़ा रहा है। महमूद गजनी ने पेशावर के युद्ध में जयपाल को हराकर किले से 4 लाख सोने के सिक्के लूटे और एक सिक्के का वजन 120 ग्राम था. इसके अलावा उसने राजा के लड़कों और राजा जयपाल को छोड़ने के लिए भी 4.5 लाख सोने के सिक्के लिए थे। इस प्रकार उसने आज के समय के हिसाब से लगभग 1 अरब डॉलर की लूट सिर्फ राजा जयपाल के यहाँ की थी. जबकि इस समय भारत में जयपाल जैसे बहुत से धनी राजा थे।

महमूद गौरी ने गुजरात स्थित सोमनाथ मंदिर लूट कर वह से 2 मिलियन दिनारों की लूट की जिसकी अनुमानित कीमत आज की तारीख में 45 करोड़ रुपये के लगभग बैठती है। उस समय के हिसाब से यह बहुत बड़ी लूट थी। वर्ल्ड गोल्ड काउंसिल ने कुछ समय पहले एक आकलन में कहा था कि भारत में अभी भी 22,000 टन सोना लोगों के पास है जिसमें लगभग 3,000-4,000 टन सोना भारत के मंदिरों में अभी भी है. एक अनुमान के मुताबिक भारत के 13 मंदिरों के पास भारत के सभी अरबपतियों से भी ज्यादा धन है. यदि मंदिर के आंकड़ों के हिसाब से देखा जाये तो भारत कल भी सोने के चिड़िया था और आज भी है।

भारत के कुछ मंदिरों में इतना सोना रखा हुआ है कि कुछ राज्यों की पूरी आय भी मंदिरों की आय से कम है। अगर वर्ष 2018-19 के आंकड़े देखें तो पता चलता है कि केरल सरकार की वार्षिक आय 1.03 लाख करोड़ है जो कि केरल के पद्मनाभस्वामी मंदिर के किसी गर्भ गृह के एक कोने में ही मिल जायेगा। ईसा की पहली सदी से भारत विश्व का सबसे बड़ा विनिर्माण केंद्र था। जो स्थल मार्ग और जल मार्ग दोनो के द्वारा विश्व मे किया जाता था।विश्व की जो भी आवश्यकता थी वह भारत के पास पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध थी। भारत वस्त्र, मसाले, मोती, चीनी और लोहे के हथियारों का एक प्रमुख निर्यातक था। इसके अलावा कपास, चावल, गेहूं, चीनी जबकि मसालों में मुख्य रूप से हल्दी, काली मिर्च, दालचीनी, जटामांसी इत्यादि शामिल थे. इसके अलावा आलू, नील, तिल का तेल, हीरे, नीलमणि आदि के साथ-साथ पशु उत्पाद, रेशम, चर्मपत्र, शराब और धातु उत्पाद जैसे ज्वेलरी, चांदी के बने पदार्थ आदि का भी निर्यात करता था। 600 इ.उ के आस-पास महाजनपदों ने चांदी के सिक्के के साथ सिक्का प्रणाली शुरू की थी। ग्रीक के साथ-साथ पैसे पर आधारित व्यापार को अपनाने वाले पहले देशों में भारत का स्थान अग्रणी था। लगभग 350 ईसा पूर्व, चाणक्य ने भारत में मौर्य साम्राज्य के लिए आर्थिक संरचना की नींव डाली थी। मुगलों के शासन शुरू करने से पहले, भारत 1 A.D और 1000 A.D के बीच दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था थी।जब मुगलों ने 1526-1793 के बीच भारत पर शासन किया, इस समय भारत की आय (17.5 मिलियन पाउंड), ग्रेट ब्रिटेन की आय से अधिक थी. वर्ष 1600 A.D में भारत की प्रति व्यक्ति GDP 1305 डॉलर थी जबकि इसी समय ब्रिटन की प्रति व्यक्ति GDP 1137 डॉलर, अमेरिका की प्रति व्यक्ति GDP 897 डॉलर और चीन की प्रति व्यक्ति GDP 940 डॉलर थी. इतिहास बताता है कि मीर जाफर ने 1757 में ईस्ट इंडिया कंपनी को 3.9 मिलियन पाउंड का भुगतान किया था। 1500 अ.ऊ के आस-पास दुनिया की आय में भारत की हिस्सेदारी 24.5% थी जो कि पूरे यूरोप की आय के बराबर थी। लेकिन जब अंगेज भारत को छोड़कर गए तो भारत का विश्व अर्थव्यवस्था में योगदान मात्र 2 से 3% रह गया था, लेकिन आज भारत विश्व की पांचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है।

यह लेखक की निजी राय है

जंग जारी कृषि कानून: खून से खेती या खेती का खून....

ओमप्रकाश मेहता

करीब पचहत्तर दिनों से कथित कृषि काले कानून को लेकर जारी किसान आंदोलन को लेकर सरकार की तल्खी बढती जा रही है, सरकारी प्रशासन जहां दिल्ली के प्रवेश द्वारों पर नुकीलें सरिये गाड़ रहा है, वहीं केन्द्रीय कृषि मंत्री जी का संसद में क्रोध चरम पर पहुंच रहा है और उनकी टिप्पणियों को संसद की कार्यवाही से हटाना पड़ रहा है, वहीं यदि आंदोलनरत किसानों की कार्यशैली ठीक सरकारी प्रशासन की निर्मम कार्यवाही के बिल्कुल उलट है। आंदोलनरत किसान नेता कटीले तारों व नुकीले सरियों की जगह मिट्टी डलवाकर फूलों व अनाज के पौधों रोप रहे है। जहां तक केन्द्र सरकार का सवाल है, वह 26 जनवरी को घटित लाल किला काण्ड से अभी भी इतनी डरी-सहमी है कि वह किसानों के प्रत्येक कदम पर पुलिस व सुरक्षाकर्मियों की छावनियां स्थापित कर रही है, सरकार की इसी परेशानी को भांप कर किसान नेता राकेश टिकैत ने शनिवार को घोषित तीन घण्टे के राजमार्गीय चक्का जाम से दिल्ली, उत्तरप्रदेश व उत्तराखण्ड को मुक्त कर दिया।

अब तक किसानों के इस आंदोलन को कांग्रेस सहित करीब दो दर्जन छोटे-बड़े प्रतिपक्षी दलों का समर्थन था, यद्यपि इन्हें आंदोलनरत किसानों ने उनके

साथ मंच साझा भी नहीं करने दिया, संसद में भी प्रतिपक्षी दल किसान आंदोलन का खुलकर समर्थन कर रहे है, किंतु अब एक आश्चर्यजनक तथ्य यह सामने आ रहा है कि केन्द्र में सत्तारूढ़ भाजपा को भी इस आंदोलन की राजनीतिक दृष्टिकोण से चिंता सताने लगी है, क्योंकि पंजाम-हरियाणा का जाट समुदाय इस आंदोलन से जुड़ा है जो पंजाब-हरियाणा में भाजपा का मुख्य आधार वोट है, शायद इसी तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए अब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इस किसान आंदोलन के सुखद समापन के बारे में गंभीर चिंतन शुरू कर दिया है, किंतु देश महसूस कर रहा है कि इस विवाद को लेकर पिछले ढ़ाई महीने में कृषि मंत्री जी इतने अधिक परेशान हो गए है कि उनकी तल्खी अब खुलकर सामने आने लगी है, शायद कृषि मंत्री के इसी रूख के कारण किसान आंदोलन के प्रमुख किसान नेता राकेश टिकैत ने अब सीधे-सीधे प्रधानमंत्री जी से ही विवाद के बारे में चर्चा करने की ठान ली है, उन्होंने यह कहते हुए कृषि मंत्री को और चिढ़ा दिया कि कृषि मंत्री वही बोलते है जो उनके अधिकारी उन्हें लिखकर दे देते है, इसलिए अधिकारियों का कथन मंत्री के मूंह से सुनने की अपेक्षा अब प्रधानमंत्री से ही इस बारे में चर्चा होगी।

जो भी हो, किंतु अब यह तय है कि किसान संगठन और सरकार दोनों ही चाहते है कि इस आंदोलन का सुखद समापन हो, शायद इसीलिए किसान नेता राकेश टिकैत ने सरकार को विवादित कानूनों को वापस लेने की आठ महीनों की मोहलत दे दी है और कहा है कि सरकार दो अक्टूबर ह्लगांधी जयंतीह्व तक तीनों विवादित कृषि कानून वापस ले ले, वर्ना उसके बाद चालीस लाख ट्रेक्टरों की रैली पूरे देश में भ्रमण कर आंदोलन को तीव्र करने की अलख जगाएगी और तब तक किसानों का शांतिपूर्ण आंदोलन भी जारी रहेगा।

अब देश पर राज कर रही भाजपा की सबसे बड़ी और अहम् चिंता यह है कि वह किसानों के आंदोलन से निपटे, अपने वोट समेटे या पश्चिम बंगाल सहित पांच राज्यों में निकट भविष्य में ही होने वाले विधानसभा चुनावों की रणनीति को अंजाम दे?

इस प्रकार किसान आंदोलन अब सरकार व सत्तारूढ़ दल दोनों के ही लिए अच्छा खासा ह्लसिरदर्दह्व बन चुका है, क्योंकि अब इस आंदोलन को विदेशी समर्थन भी मिलने लगा है, अमेरिका के बाद रूस और अब संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी किसानों के समर्थन में भारत सरकार को सीख दी है, इसलिए अब जरूरी हो गया है कि कृषि मंत्री जी को खेती और खून का तालमेल करने के बजाए तल्खी छोड़ शांति से आंदोलन के सुखद समापन के बारे में गंभीर चिंतन करना चाहिये।

यह लेखक की निजी राय है

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक व संपादक संजय कुमार उपाध्याय द्वारा हैल्थ ऑफ भारत व दैनिक अमन प्रेस आर. जेड.-138, रविनगर एक्सटेंसन, नियर पार्क हॉस्पिटल, न्यू दिल्ली-110018 से मुद्रित एवं एस-503ए स्कूल ब्लॉक, शक्करपुर दिल्ली-110092 से प्रकाशित। सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा दिल्ली न्यायालय में ही किया जाऐगा। संपादकः संजय कुमार उपाध्याय। आर.एन.आई नं. DELHIN/2019/78266

newsdesk@motherlandvoice.org
editor@motherlandvoice.org

मदरलैण्ड वॉइस 07
नई दिल्ली, बुधवार 10 फरवरी 2021

दोनों देशों के द्विपक्षीय संबंधों को शीर्ष पर ले जाने के इच्छुक बाइडन और मोदी

वॉशिंगटन। अमेरिका के नव निर्वाचित राष्ट्रपति जो बाइडन और भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने फोन पर चर्चा कर दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संबंधों को नई ऊंचाइयों पर ले जाने की इच्छा व्यक्त की और उसके लिए एक महत्वाकांक्षी प्रारूप तय किया। दोनों नेताओं ने कोविड-19 से मिलकर मुकाबला करने पर सहमति जताई तथा जलवायु परिवर्तन पर आपसी साझेदारी को नया स्वरूप देने पर प्रतिबद्धता जाहिर की। बाइडन और मोदी ने दोनों देशों की जनता के फायदे के लिए वैश्विक अर्थव्यवस्था के पुनर्निर्माण तथा वैश्विक आतंकवाद के खतरे का मिलकर सामना करने पर भी सहमति प्रकट की। व्हाइट हाउस ने यह जानकारी दी। बातचीत का ब्यौरा देते हुए व्हाइट हाउस ने कहा कि दोनों नेताओं ने हिंद प्रशांत क्षेत्र में मुक्त व्यापार को बढ़ावा देने के वास्ते नजदीकी सहयोग को जारी रखने पर

सहमति जताई। इसमें नौवहन की स्वतंत्रता, क्षेत्रीय अखंडता औ 'क्वाड' के जरिये मजबूत क्षेत्रीय अवसंरचना का निर्माण शामिल है।

बातचीत के दौरान बाइडन ने विश्व भर में लोकतांत्रिक संस्थानों की रक्षा के अपने संकल्प को रेखांकित किया और कहा कि लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति साझा प्रतिबद्धता भारत अमेरिका संबंधों का आधार है। इसमें कहा गया, ह्वाइसके अलावा दोनों नेताओं ने इस बात पर जोर दिया कि बर्मा में लोकतांत्रिक प्रक्रिया और कानून का पालन होना चाहिए। दोनों नेताओं ने कई वैश्विक मुद्दों पर बातचीत की प्रकिया को जारी रखने और आने वाले समय में भारत तथा अमेरिका के संबंधों को आगे ले जाने पर सहमति जताई। बाइडन और मोदी के बीच फोन पर हुई बातचीत के बाद अमेरिका में भारत के राजदूत तरनजीत सिंह संधू ने कहा, ह्वासहयोग के लिए हमारा महत्वाकांक्षी एजेंडा है और आने वाले दिनों में आप कामकाज होता देखेंगे।

संधू ने कहा, हम भारत-अमेरिका रणनीतिक साझेदारी को आगे ले जाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। इसके साथ ही हम कोविड-19, अर्थव्यवस्था में सुधार, स्वच्छ ऊर्जा और जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद से मुकाबला, हिंद-प्रशांत क्षेत्र में सहयोग जैसी क्षेत्रीय और वैश्विक चुनौतियों से निपटने के लिए समान विचारधारा वाले देशों के साथ मिलकर काम करने के लिए प्रतिबद्ध हैं ह्ल अमेरिका में राष्ट्रपति पद के लिए तीन नवंबर को हुए चुनाव के बाद बाइडन और मोदी के बीच फोन पर यह दूसरी बार वार्तालाप हुई। संधू ने कहा कि हाल के दिनों में विदेश मंत्री डॉ. एस जयशंकर, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल ने अपने अमेरिकी समकक्षों से बातचीत की थी जो बहुत अच्छी और दूरगामी दृष्टिकोण वाली रही।

तख्तापलट के बाद म्यांमार की सैन्य सरकार ने कर्फ्यू लगाया

यांगून। म्यांमार में सैन्य सरकार के तख्तापलट के बाद जारी विरोध प्रदर्शनों के मद्देनजर सैन्य सरकार ने दो बड़े शहरों में कर्फ्यू लगा दिया और पांच से ज्यादा लोगों के एक जगह पर इकट्ठा होने पर रोक लगा दी। यांगून और मांडले के लिए यह आदेश जारी किया है। इसके तहत जनता से जुड़ी पाबंदियां भी लगाई गई है।

अन्य क्षेत्रों के लिए भी ऐसे ही आदेश की संभावनाएं हैं। आदेश के तहत पांच से ज्यादा लोगों के इकट्ठा होने पर पाबंदी रहेगी और गाड़ियों की रैली पर भी रोक लगाई गई है। दोनों शहरों में रात आठ बजे से तड़के चार बजे तक कर्फ्यू लागू रहेगा।

ये आदेश अगले नोटिस तक प्रभावी रहेंगे। आदेश में कहा गया है कि कानून का उल्लंघन करने वाले लोगों के गैरकानूनी कदमों के जवाब में यह फैसला किया गया है। तख्तापलट के विरुद्ध सोमवार को प्रदर्शन तेज हो गया तथा देश के कई और हिस्सों में फैल गया।

पुलिस ने म्यांमार की राजधानी में सैंकड़ों प्रदर्शनकारियों पर पानी की बौछारें की जो सेना से निर्वाचित अधिकारियों के हाथों में सत्ता सौंपने की मांग कर रहे थे। देश के उत्तर, दक्षिणपूर्वी और पूर्वी क्षेत्रों से भी प्रदर्शन की खबर है।

रिश्तों में पैदा हुई खटास, भारत और जापान के साथ संयुक्त साझेदारी समझौते से बाहर निकला श्रीलंका

कोलंबो। हाल की दो घटनाओं से लग रहा है कि श्रीलंका के साथ भारत के संबंध प्रभावित हुए हैं। पिछले हफ्ते श्रीलंका, भारत और जापान के साथ एक संयुक्त साझेदारी समझौते से बाहर निकल गया है। इस समझौते के तहत कोलंबो बंदरगाह पर बहुप्रतीक्षित ईस्ट कंटेनर टर्मिनल (ईसीटी) विकसित करना था, लेकिन इस फैसले ने नई दिल्ली और टोक्यो दोनों को चौंका दिया है। उसी दिन सेंट्रल बैंक ऑफ श्रीलंका (सीबीएसएल) ने 400 मिलियन अमेरिकी डॉलर की करेंसी स्वैप फैसेलिटी लौटा दी।

श्रीलंका को यह कोविड-19 के चलते लगाए गए लॉकडाउन के दौरान अपनी आपातकालीन जरूरतों को पूरा करने के लिए जुलाई 2020 में मिला था। ईसीटी सौदा दो वर्षों से विवादों में घिरा हुआ है। नवंबर 2019 में गोटबाया राजपक्षे के श्रीलंका के राष्ट्रपति बनने के बाद और उनके बड़े भाई व पूर्व राष्ट्रपति महिंदा राजपक्षे ने अगस्त 2020 के संसदीय चुनाव में अपनी पार्टी को दो-तिहाई जीत के लिए नेतृत्व किया। श्रीलंका से रिश्तों पर पकड़ बनाए रखने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नई दिल्ली में गोटबाया राजपक्षे की मेजबानी की। श्रीलंका के विदेश मामलों के मंत्री दिनेश गनवार्डन ने भी रिश्ते को मजबूत करने के लिए नई दिल्ली दौरे पर आए।

विदेश मंत्री एस जयशंकर और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजित डोभाल ने श्रीलंका को चीन के जाल में न फंसने से मनाने के लिए कोलंबो का दौरा किया। श्रीलंका सरकार ने दोहराया कि भारत उसका निकटतम पड़ोसी और एक परिवार है, जबकि चीन सिर्फ एक दोस्त है। ईसीटी सौदे से बाहर निकलने के बाद भी पीएम महिंद्रा राजपक्षे ने एक ही रुख को बनाए रखते हुए कहा कि श्रीलंका का भारत के साथ संबंध अभी भी मजबूत है।

राजपक्षे ने कहा हमारे भारत के साथ स्वस्थ संबंध हैं। इस निवेश परियोजना के बारे में कई विचार हैं। राज्य की संपत्ति बेचना इस सरकार की नीति नहीं है। काफी बौद्ध भिक्षुओं ने इसका विरोध किया।

हालांकि भारत और जापान ने श्रीलंका से कहा है कि वह ईसीटी परियोजना में भागीदारी के बारे में प्रतिबद्धता का सम्मान करे। श्रीलंका ईसीटी परियोजना में किसी अन्य देश के न होने और घरेलू उधार पर ही बनाने का फैसला किया है। दूसरी ओर कोविड-19 के चलते लगाए गए लॉकडाउन से श्रीलंका को तगड़ा झटका लगा है और उसकी अर्थव्यवस्था संकट में है। स्थानीय विशेषज्ञों को लगता है कि श्रीलंका परियोजना को अपने दम पर पूरा करने की स्थिति में नहीं है।

चीन अपने पारंपरिक प्रतिद्वंद्वियों और पड़ोसियों भारत और जापान को मात देने के लिए पिछले दरवाजे से आ सकता है। पिछले 15 सालों में चीन ने श्रीलंका के इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट्स में भारी निवेश किया है। हर जगह चीन मौजूद है।

संक्षिप्त समाचार

अमेरिका-चीन ने मारे गए लोगों के प्रति संवेदना जताई, घायलों के शीघ्र स्वस्थ्य की कामना की

वॉशिंगटन। उत्तराखंड में हिमखंड टूटने की दर्दनाक आपदा में मारे गए लोगों के प्रति अमेरिका और चीन ने संवेदना जताई और घायलों के शीघ्र स्वस्थ्य होने की कामना की। अमेरिकी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता नेड प्राइस ने कहा, ह्वइस चुनौतीपूर्ण वक्त में हमारी संवेदनाएं हमारे भारतीय मित्रों और साझेदारों के साथ हैं। इस घटना में मारे गए लोगों के परिवारों और मित्रों के प्रति गहरा शोक व्यक्त करते हैं और हम बचाव कार्यों की सफलता तथा घायलों के शीघ्र स्वस्थ्य होने की उम्मीद करते हैं। अमेरिकी सांसद टोनी काडेर्नास ने भी घटना पर दुख व्यक्त किया है। उन्होंने ट्वीट किया, ह्वभारत के लोगों के लिए प्रार्थना कर रहे हैं। हम जलवायु परिवर्तन के विनाशकारी प्रभावों को देख रहे हैं। यह ऐसा संकट नहीं है, जिसकी हम अनदेखी कर सकें। इस ओर कदम उठाए जाने की जरूरत है। उधर, चीन के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता वांग वेनबिन ने यहां एक मीडिया ब्रीफिंग में कहा, ह्वहमने गौर किया है कि उत्तर भारत में बड़े पैमाने पर बाढ़ आई थी। हम पीड़ितों और शोक संतप्त परिवारों और घायलों के प्रति संवेदना व्यक्त करना चाहते हैं। उन्होंने एक सवाल के जवाब में कहा, ह्वहमें उम्मीद है कि लापता लोगों को जल्द बचा लिया जाएगा। गंगा की सहायक नदियों धौली गंगा, ऋषि गंगा और अलकनंदा नदियों में अचानक आई बाढ़ से ऊंचाई वाले पर्वतीय क्षेत्रों में व्यापक तबाही हुई है।

श्री श्री रविशंकर को अमेरिका की यूनिवर्सिटी ने दी मान्यता

वाशिंगटन। भारतीय आध्यात्मिक गुरु श्री श्री रविशंकर को अमेरिका के एक प्रख्यात विश्वविद्यालय ने 'वैश्विक नागरिकता दूत' के तौर पर मान्यता दी है। विश्वविद्यालय ने रविशंकर को उनके शांति कार्यों, मानवीय कार्यों, आध्यात्मिक गुरु और वैश्विक अंतरधार्मिक नेता के तौर पर काम करने के लिए यह सम्मान दिया है। सोमवार को जारी एक वक्तव्य के अनुसार, ह्यनार्थईस्टर्न यूनिवर्सिटी सेंटर फॉर स्पिरिचुअल्टी, डायलॉग एन्ड सर्विसह्ल ने रविशंकर को पिछले सप्ताह वैश्विक नागरिकता दूत के तौर पर मान्यता दी। विश्वविद्यालय में कार्यकारी निदेशक और आध्यात्मिक सलाहकार (चैपलेन) अलेक्जेंडर लेवेरिंग कर्न ने कहा, हम श्री श्री के आभारी हैं। वैश्विक नागरिकता दूत कार्यक्रम शुरू करने के लिए इससे बेहतर कुछ नहीं हो सकता था। हम एक प्रसन्नचित्त मानवीय कार्यकर्ता से वार्ता करेंगे और उनसे सीखेंगे। उन्होंने हमारे सर्वोत्तम साझा मानवीय मूल्यों को जीवन में उतारा है।

सात साल लग सकते हैं कोरोना से छूटकारे में

वॉशिंगटन। ब्लूमबर्ग के वैक्सीन कैलकुलेटर के मुताबिक, उसकी गणना बताती है कि कोरोना वायरस के खात्मे में अभी सात साल का समय और लग सकता है। इस गणना में टीकाकरण की रफ्तार को आधार बनाया गया है। यानी जिस तेजी से दुनियाभर में टीकाकरण अभियान चलाया जा रहा है, उसके मुताबिक सभी देशों को अपनी 75 फीसदी आबादी को टीका लगाने में सात साल का वक्त लग जाएगा। बता दें कि 75 पर्सेंट आबादी को टीका लगने का मतलब हर्ड इम्यूनिटी तक पहुंच जाना है। ऐसा होने पर वायरस का फैलाव रुक जाता है। रिपोर्ट के मुताबिक, दुनिया में रोजाना 40 लाख से ज्यादा लोगों को टीका लगाया जा रहा है। अभी तक अमेरिका में अपनी जनसंख्या के 8.7 फीसदी हिस्से को टीका लगाया गया है।

कोरोना वायरस ने पूरी दुनिया के सैलानियों की यात्राएं प्रभावित कीं

फ्रैंकफर्ट। वैश्विक महामारी कोरोना वायरस के कहर ने पूरी दुनिया के घुम्मकड़ों की पंसीदीदा वार्षिक यात्राओं पर रोक लगा दी। चाहे चीन में चंद्र नववर्ष पर अपने घर जाने वाले कारखाना श्रमिक हों, वसंत की छुट्टियों पर घूमने जाने वाले अमेरिकी छात्र अथवा ईस्टर पर यात्रा पर जाने वाले जर्मनी या ब्रिटेन के लोग हों। सभी की यात्राएं कोरोना वायरस के कारण रद्द हो गईं हैं। वायरस के नए प्रकार के डर से आवागमन पर नए प्रतिबंध लगाये गए हैं। ये प्रतिबंध ऐसे समय लगे हैं जब लोगों का जीवन दोबारा पटरी पर लौट रहा था। इसका सीधा प्रभाव एयरलाइंस, होटल, रेस्तरां और पर्यटन स्थलों पर पड़ेगा जो पिछले एकवर्ष से अधिक समय से महामारी के कारण मुश्किलों से जूझ रहे हैं। इससे उन देशों की अर्थव्यवस्था को पटरी पर लौटने की गति धीमी होगी जहां की अर्थव्यवस्था काफी हद तक पर्यटन पर आधारित है। अमेरिका में कॉलेज छात्रों को घूमने जाने से हतोत्साहित करने के लिए वसंत की छुट्टियां रद्द कर रहे हैं। ब्लूमिंगटन में इंडियाना विश्वविद्यालय ने सामान्य छुट्टियों को तीन दिन के 'स्वास्थ्य अवकाश' से बदल दिया है। इसके चलते जैकी सिल्वेस्टर ने अपना 21 वां जन्मदिन लास वेगास में मनाने की योजना रद्द कर दी।

म्यांमार में सैन्य शासन का विरोध कर रहे लोगों पर पानी की बौछारें की गयीं। - फोटो

दक्षिण अफ्रीकी स्ट्रेन पर कम असरदार है ये वैक्सीन

लंदन। कोरोना वायरस ट्रायल के शुरूआती नतीजे में ऑक्सफर्ड यूनिवर्सिटी-आस्ट्राजेनेका की वैक्सीन दक्षिण अफ्रीका में पाए गए वेरियंट पर कम असरदार है। यह ट्रायल सिर्फ 2,026 लोगों पर किया गया था और इसमें कम गंभीर बीमारी के प्रति सीमित असर देखा गया। इन लोगों को म्यूटेट हो चुके वायरस से इन्फेक्शन हुआ था। कंपनी का कहना है कि अब नए वायरस के लिए इसी वैक्सीन को तैयार किया जाएगा और जल्द ही यह तैयार हो जाएगी।

दक्षिण अफ्रीका की यूनिवर्सिटी ऑफ दविटवॉटर्सरैंड और ऑक्सफर्ड की स्टडी के दौरान किसी की मौत नहीं हुई और न ही अस्पताल में भर्ती कराया गया। अभी स्टडी के नतीजे पब्लिश नहीं हुए हैं। कंपनी के प्रवक्ता का कहना है कि इस छोटे पहले चरण के ट्रायल में शुरूआती डेटा में बी 1.351 दक्षिण अफ्रीकी वेरियंट के कारण कम गंभीर बीमारी के खिलाफ सीमित असर देखा गया है। हालांकि, अभी गंभीर बीमारी और अस्पताल में भर्ती किए गए लोगों पर इसके असर को स्टडी नहीं किया जा सका है। इस स्टडी में शामिल वॉलंटिअर्स की औसतन उम्र 31 साल रही जिसमें आमतौर पर लोग इन्फेक्शन का शिकार नहीं होते हैं। महामारी के इतने महीने में कोरोना वायरस हजारों बार म्यूटेट हुआ है लेकिन वैज्ञानिकों को तीन वेरियंट्स को लेकर चिंता है जो पहले से ज्यादा संक्रामक हैं। इनमें ब्रिटेन के केंट, दक्षिण अफ्रीका और ब्राजील के वेरियंट शामिल हैं। इनमें से दक्षिण अफ्रीकी वेरियंट वैक्सीन के खिलाफ प्रतिरोधी मालूम पड़ रहा है और दुनिया के कई हिस्सों में पाया जा चुका है।

वहीं, जॉनसन ऐंड जॉनसन और नोवावैक्स ने भी बताया है कि उनकी वैक्सीनें नए स्ट्रेन के खिलाफ असरदार नहीं हैं। इसी तरह मॉडर्ना नए वेरियंट के लिए बूस्टर शॉट तैयार कर रही हैं जबकि फाइजर-बायोएनटेक की वैक्सीन भी कम असरदार मिली है। ब्रिटेन ने ऑक्सफर्ड की वैक्सीन की 10 करोड़ खुराकें खरीदी हैं और लाखों लोगों को वैक्सिनेट किया जा रहा है। दूसरी ओर, सफर न करने वाले लोगों में वेरियंट के 11 मामले सामने आने से कम्यूनिटी ट्रांसमिशन का खतरा पैदा हो गया है जिसके चलते टेस्टिंग तेज की जा रही है।

FBI के लिए काम कर चुका है कैपिटल हिल हिंसा का आरोपी, 19 जनवरी से है गिरफ्त में

वाशिंगटन। अमेरिका में पिछले महीने कैपिटल (संसद परिसर) पर हुए हमले में चरमपंथियों का नेतृत्व करने के आरोपी व्यक्ति को दशकों तक अति गोपनीय और सुरक्षित दस्तावेजों तक पहुंचने की अनुमति मिली हुई थी और वह पहले संघीय जांच ब्यूरो (एफबीआई) में काम कर चुका है। आरोपी के वकील ने सोमवार को यह जानकारी दी। अधिकारियों का कहना है कि वह 'ओथ कीपर्स' समूह का सदस्य है। थॉमस काल्डवेल के वकील थॉमस प्लॉफचान ने अदालत में दायर किए गए एक दस्तावेज में लिखा कि काल्डवेल ने, नौसेना से सेवानिवृत्त होने के बाद 2009 से 2010 के बीच एफबीआई में सेक्शन प्रमुख के तौर पर काम किया था। प्लॉफचान ने न्यायाधीश से आग्रह किया कि उसके मुवक्किल को मुकदमे के दौरान जेल से रिहा कर दिया जाए। बचाव पक्ष ने कहा कि काल्डवेल 'ओथ कीपर्स' का सदस्य नहीं है और उसे 1979 से अति गोपनीय सूचनाओं को प्राप्त करने की अनुमति मिली है।

कोरोना संकट का इस्तेमाल एक ऐसी दुनिया के निर्माण में करें जो अधिक न्यायसंगत और विश्वसनीय हो : पोप फ्रांसिस

रोम। पोप फ्रांसिस ने दुनियाभर की सरकारों से अनुरोध किया है कि वे कोरोना संकट का इस्तेमाल एक ऐसे विश्व के निर्माण के क्रांतिकारी अवसर के रूप में करें जो, आर्थिक और पर्यावरणीय तौर पर अधिक न्यायसंगत हो और जिसमें सभी के लिए बुनियादी स्वास्थ्य देखभाल की गारंटी हो।

पोप फ्रांसिस ने वार्षिक विदेश नीति संबोधन के दौरान यह टिप्पणी की। यह कार्यक्रम दो सप्ताह पहले होना था, लेकिन पोप के बीमार पड़ने की वजह से टालना पड़ा था। फ्रांसिस ने पोप के आधिकारिक निवास अपोस्टोलिक पैलेस में सरकारों के प्रतिनिधियों से गरीबों को कोरोना वायरस का टीका मुहैया कराने के लिए वैश्विक पहल में योगदान देने को कहा।

उन्होंने कहा कि बीमार आर्थिक

मॉडल, गरीबों और पृथ्वी का शोषण करता है। उन्होंने कहा कि एक नई तरह की कोपर्निकन क्रांति की जरूरत है, जो अर्थव्यवस्था को लोगों की सेवा में लगा सके, ना कि लोग अर्थव्यवस्था की सेवा करें। 16वीं सदी की कोपर्निकन क्रांति में कहा गया था कि सूर्य ब्रह्मांड के केंद्र में है न की पृथ्वी। उन्होंने कहा कि इस तरह की क्रांतिकारी नई अर्थव्यवस्था जीवन लाए न कि मौत, समावेशी हो न कि लोगों को हाशिये पर डालने वाली, मानवीय हो न कि अमानवीय, पर्यावरण का ख्याल रखे न कि इसको खराब करे।

फ्रांसिस ने बार-बार विश्व से अपील की है कि वह महामारी को एक ऐसे मौके के तौर पर इस्तेमाल करे जो वैश्विक अर्थव्यवस्था की फिर से कल्पना करे जिसमें मुनाफे से अधिक लोगों एवं पृथ्वी को अहमियत दी जाए। पोप ने अपने भाषण में सभी के लिए बुनियादी स्वास्थ्य देखभाल मुहैया कराने का आह्वान किया। उन्होंने सीरिया में युद्ध को खत्म करने की अपील करते हुए कहा कि 2021 में इसको 10 साल हो जाएंगे। फ्रांसिस ने अंतरराष्ट्रीय समुदाय से ईमानदारी और साहस के साथ संघर्ष के कारणों को हल करने और समाधान की तलाश करने की गुजारिश की।

पत्रकार के सिर कलम की वारदात, जिसके आरोपी की रिहाई पर अमेरिका ने पाकिस्तान को दी खुलेआम धमकी

वाशिंगटन। एक पत्रकार की निर्मम हत्या का वीडियो 2002 में सुर्खियों में रहा था। उस दौर में कत्ल का वीडियो रिकॉर्ड करना और फिस सोशल मीडिया पर उसे भेज कर दुनिया को डराना, चौंकाना उस वक्त का पहला बड़ा मामला था। बाद में भले ही आईएसआईएस ने बहुत सारी इस तरह की घटनाओं को अंदाम दिया। अमेरिकी पत्रकार डेनियल पर्ल का गला काटते हुए एक वीडियो शूट किया गया था। अब इस घटना के करीब 18 साल बाद इससे जुड़ी एक बड़ी खबर आई है। पाकिस्तान सरकार ने पत्रकार डेनियल पर्ल की हत्या के मुख्य आरोप रहे उमर सईद को रिहा करने के बाद अब सरकारी रेस्ट हाउस में रखने का आदेश दिया है। कोर्ट के आदेश के बाद पाकिस्तान सरकार को बीते दिनों उमर सईद को रिहा करना पड़ा। कोर्ट के इस आदेश के बाद उसे विश्राम गृह में स्थानांतरित कर दिया गया। बता दें कि उमर सईद शेख की रिहाई वाले निर्णय के बाद पाकिस्तान के इस कदम ने अमेरिका को नाराज कर दिया था। अमेरिका ने इस पर अपनी नाराजगी भी जाहिर की थी। जिसके बाद पाकिस्तान ने तुरंत सईद को अपनी कस्टडी में लेने का ढोंग करने लगा। एक्सप्रेस ट्रिब्यून के अनुसार अलकायदा आतंकी उमर सईद शेख को जेल से कराची केंद्रीय कारागार में एक नविर्मित रेस्ट हाउस में शिफ्त किया जा गया। ऐसे में आज हम आपको अमेरिकी पत्रकार डेनियल पर्ल की कहानी सुनाते हैं। जिनकी आतंकियों ने पाकिस्तान में निर्मम हत्या कर दी थी।

डेनियल पर्ल न्यू जर्सी अमेरिका में पैदा हुए। उनकी मां ईराकी यहूदी और पिता इजरायली यहूदी थे। डेनियल के पास नागरिकता इजरायल और अमेरिका दोनों की थी। पत्रकारिता की पढ़ाई करने के बाद अमेरिकी अखबार वॉल स्ट्रीट जर्नल ज्वाइन किया। साल 2000 में डेनियल पर्ल का ट्रांसफर भारत में कर दिया जाता है। उन्हें साउथ एशिया का ब्यूरो चीफ बनाकर भारत भेजा जाता है। 9/11 की घटना के बाद पर्ल 12 सितंबर को करांची पहुंचते हैं। उस वक्त तक ये बात साफ हो गई थी कि ये आतंकी हमला है और इसके पीछे अलकायदा का हाथ है। अलकायदा का बेस उस वक्त अफगानिस्तान में था। डेनियल पर्ल इस्लामाबाद पहुंचकर 9/11 के सिलसिले में स्टोरी निकालने की कोशिश में जुट जाते हैं। इसी दौरान एक खबर आती है कि रिचर्ड रीड 22 दिसंबर को अमेरिकी एयरलाइंस के विमान जो पेरिस से उड़ान भरने के लिए निकली थी। उसे हवा में ही उड़ाने की साजिश रची गई।

रिचर्ड रीड ने अपने जूते में बम फिट किया था। हालांकि वो अपने मिशन में कामयाब नहीं हो पाया। जिसके बाद अमेरिकी एजेंसियां उसके पीछे पड़ी थी। रिचर्ड रीड का लिंक करांची के धार्मिक नेता शेख मुबारक अली गिलानी से जुड़ा था।

दिल्ली के 24 अकबर रोड से क्या है म्यांमार की नजरबंद आंग सांन सू का कनेक्शन

म्यांमार । म्यांमार में मजदूर देशव्यापी हड़ताल पर चले गए हैं। म्यांमार में चुनी गई नेता आंग सान सू की रिहाई और देश में लोकतंत्र की बहाली के लिए तीसरे दिन भी विरोध प्रदर्शनों का दौर जारी है। वहीं विरोध प्रदर्शनों को देखते हुए म्यांमार की राजधानी नेपीडन में प्रशासन ने पानी की बौछार करने वाली गाड़ियों को तैनात कर दिया गया है। लेकिन ये कम ही लोगों को पता है कि आंग सान सू का बचपन राजधानी दिल्ली के 24 अकबर रोड में गुजरा है। यह 1960 के दशक में बर्मा हाउस कहलाता था। म्यांमार के भारत के राजदूत को यही बंगला सरकारी आवास के रूप में आवंटित किया जाता था। तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के निर्देश पर 24 अकबर रोड को बर्मा हाउस कहा जाने लगा था। तब म्यांमार की राजदूत दा खिन केय और जवाहर लाल नेहरू के बीच बेहद मधुर संबंध थे। दा खिल केय की पुत्री हैं आंग सान सू। दिल्ली में रहते हुए आंग का बचपन राजीव और संजय गांधी के साथ बीता था। नोबेल पुरस्कार विजेता आंग सान सू की स्कूल और कॉलेज की पढ़ाई भी दिल्ली में ही हुई। उन्होंने जीसी एंड मेरी स्कूल में पढ़ाई पूरी करने के बाद 1964 में लेडी श्रीराम कॉलेज से ग्रेजुएशन किया। दो वर्षों के लिए सू की हिमाचल प्रदेश की राजधानी शिमला में इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस स्टडीज में बतौर फेलो रहीं। 1988 में सू अपने वतन वापस लौट गईं।

करीब 42 साल से कांग्रेस का दफ्तर

जनवरी 1978 की बात है और सर्दियों का महीना चल रहा था जब पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की अध्यक्षता वाली कांग्रेस पार्टी ने शोभन सिंह व 20 अन्य कर्मचारियों के साथ 24 अकबर रोड में एंट्री की। लुटियंस में टाइप श्कक बंगला, 24 अकबर रोड आंध्र से राज्यसभा सांसद वेंकटस्वामी का था। जब ज्यादातर कांग्रेस नेता इंदिरा से दूरी बनाए रखते थेष तब वेंकटस्वामी इंदिरा गांधी के साथ थे।

1978 के विभाजन ने इंदिरा कांग्रेस के पास कुछ भी नहीं था। तत्कालीन कार्यालय सचिव सद्दीक अली ने इंदिरा को कोई आधिकारिक रिकॉर्ड, कागजात या किताबें सौंपने से मना कर दिया था। इंदिरा को अपनी पार्टी के अमूल्य अभिलेखागार को खोने का बहुत दुख हुआ। लेकिन साल 1989 में प्रचंड बहुमत के साथ सत्ता में लौटीं तो नियति को ही सच मान लिया और उन्होंने पार्टी के पुराने कार्यालय मान लिया।

कोरोना संक्रमित महिलाओं के दिल के दौरे से मरने की आशंका पुरुषों से 9 गुना ज्यादा

लंदन। जिन मरीजों को कोरोना का संक्रमण हो चुका है, उनके दिल के दौरे से मरने की आशंका ज्यादा है। यह खुलासा किया है स्वीडन के साइंटिस्ट्स ने। इसके मुताबिक अगर कोई महिला कोरोना संक्रमित होती है तो उसे अस्पताल में इलाज के दौरान या रिकवरी के बाद हार्ट अटैक की आशंका बढ़ जाती है, साथ ही इसकी वजह से मौत की भी। स्वीडन के शोधकताओं ने बताया कि कोरोना संक्रमित महिलाओं को दिल के दौरे से मरने की आशंका पुरुषों की तुलना में नौगुना ज्यादा है। यह स्टडी यूरोपियन हार्ट जर्नल में प्रकाशित हुई है। इसमें 1946 कोरोना मरीजों की जांच की गई जो रिकवरी के बाद अस्पताल के बाहर दिल के दौरे से मरे। जबकि, 1080 कोरोना मरीजों की स्टडी की गई जो इलाज के दौरान अस्पताल में दिल के दौरे से मारे गए। शोधकताओं ने कहा कि हमनें यह स्टडी उस समय की जब कोरोनावायरस अपने पीक पर था। जो लोग कोरोना से रिकवर होकर अस्पताल से घर चले गए थे, उनके 30 दिन के अंदर दिल के दौरे से मरने में 3.4 गुना बढ़ोतरी हुई। जबकि वहीं अस्पताल में भर्ती कोरोना संक्रमित लोगों की दिल के दौरे से मरने में 2.3 गुना बढ़ोतरी हुई।

न्यूजीलैंड की संसद में बवाल

स्पीकर ने आदिवासी सांसद को टाई न पहनने पर हाउस से निकाला

ऑकलैंड । न्यूजीलैंड की संसद के स्पीकर ट्रेवर मलार्ड ने आदिवासी सांसद रावीरी वेइटिटि को सदन से निकाल दिया। रावीरी का कसूर सिर्फ इतना था कि वे बिना टाई पहने सरकार से सवाल पूछना चाहते थे। स्पीकर ने कुछ दिन पहले भी रावीरी से कहा था कि अगर वे सरकार के किसी मंत्री से सवाल पूछना चाहते हैं तो उन्हें नियमों के मुताबिक, टाई पहनना होगा।

रावीरी माओरी आदिवासी जनजाति से ताल्लुक रखते हैं। वे सदन में इसका एक लॉकेट पहनकर आए थे। स्पीकर ने उन्हें अपने चैम्बर में भी बुलाकर समझाया था, लेकिन वे सुझाव मानने तैयार नहीं थे। उन्होंने कहा- स्पीकर के बर्ताव को सहन नहीं किया जा सकता।

गुलामी की निशानी पहनने से इनकार

NZHERALD की एक रिपोर्ट के मुताबिक, संसद से निकाले जाने के बाद रावीरी ने कहा- हम जनजातिय लोगों को अपनी परंपरा से प्यार है। हम यही लॉकेट पहनेंगे। गुलामी का प्रतीक पहनने पर मुझे ऐतराज है।

मंगलवार को संसद का प्रश्नकाल

चल रहा था। रावीरी ने एक सवाल पूछना चाहा। स्पीकर मलार्ड ने उन्हें रोक दिया। कहा- आप बैठ जाइए। सवाल वही सांसद पूछ सकता है जिसने टाई पहनी हो। रावीरी ने फिर कोशिश की। इस बार भी मलार्ड ने उन्हें रोक दिया। दोनों की बहस हुई। इसके बाद मलार्ड ने इस माओरी समुदाय के सांसद को सदन से निकाल दिया। निकलने के पहले रावीरी ने माइक पर कहा- मुद्दा टाई का नहीं, हमारी सांस्कृतिक पहचान का है।

रावीरी के साथ यह दूसरी बार हुआ

पिछले साल भी संसद सत्र के दौरान स्पीकर ने रावीरी को नियमों का पालन करने की चेतावनी दी थी। इस बार संसद से निकाले जाने के बाद उन्होंने कहा- टाई पहनने का नियम पुराना हो चुका है।

newsdesk@motherlandvoice.org
editor@motherlandvoice.org

खैरथल नगरपालिका मंडल की प्रथम बैठक का आयोजन

बैठक में 56.74 करोड़ रुपए का बजट सर्वसम्मति से पारित

» मदरलैंड, हीरालाल भूरानी

खैरथल में नगरपालिका बोर्ड की पहली बैठक में 56.74 करोड़ रुपए का बजट सर्वसम्मति पारित किया गया।

किशनगढ़बास में संभागीय आयुक्त की बैठक में ईओ के भी शामिल होने जाने की वजह से मात्र पैंतालीस मिनट तक चली बोर्ड की बैठक में विधायक दीपचंद खेरिया द्वारा नवीन डंपिंग यार्ड की चार दीवारी का निर्माण करवाने शहर के सार्वजनिक पार्को, सभी प्रमुख चौराहों व पालिका भवन का रेनोवेशन करवाने के प्रस्ताव पारित किये गये।

नगरपालिका के ईओ शुभम्गुप्ता ने बताया कि चेयरमैन हरीश रोघा, वाइस चेयरमैन वरुण डाटा सहित उपस्थित वार्ड पार्षदों ने विकास के मुद्दों पर चर्चा करते हुए बाजारों में नालों व नालियों पर हो रहे अतिक्रमण को हटाने के प्रस्ताव रखे जिन्हे पारित किया गया।

उन्होंने बताया कि पालिका क्षेत्र में सार्वजनिक प्रकाश और सफाई व्यवस्था पर विशेष ध्यान देने की बात कही गई जबकि इस नगरपालिका के अन्यत्र सेवा दे खैरथल पालिका के कर्मचारियों को वापिस बुलाने का निर्णय लिया गया।

बैठक में वार्ड पार्षद सुमित रोघा, हेमराज मूलानी, हरविंद्र सिंह यादव, नारायण छंगाणी, कर्ण सिंह चौधरी, उदयसिंह यादव, विनोद वलेचा, विक्की चौधरी, पवन वासु, आदि द्वारा अपने विचार व्यक्त करते हुए क्षेत्र के विकास पर चर्चा की तो कुछ पार्षदों ने लिखित में समस्याओं की जानकारी देते हुए उनके निदान कराने के प्रस्ताव रखे हैं जिनको प्राथमिकता से निष्पादित करने का फैसला लिया गया। इस अवसर पर सभी शाखाओं के प्रभारियों सहित आर आईं नारायण गुप्ता, सहायक अभियंता जाटव, कनिष्ठ अभियंता मोतीलाल वर्मा, सुबेसिंह यादव आदि मौजूद रहे।

खैरथल नगरपालिका बोर्ड की बैठक में चर्चा करते विधायक व चेयरमैन एवं पार्षद।

लूट का किया पदार्फाश पांच आरोपी गिरफ्तार

» मदरलैंड, शिवचरण

थानागाजी। उपखंड क्षेत्र के थाना नारायणपुर पुलिस ने दो दिन पूर्व दुकान बढा कर घर जा रहे दुकानदार से मारपीट कर की गई लूट के आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है।

थानाधिकारी सुरेश कुमार ने बताया कि आमने-सामने दुकान होने के कारण बिक्री को लेकर इर्ष्या रखने वालें दुकानदार ने अपने रिश्तेदारों की मदद से दूसरे दुकानदार पर हमला करा कर लूट की घटना को अंजाम दिलाया गया।

जिसका मुकदमा दर्ज कर मुखबिर की सहायता से आरोपियों की गिरफ्तारी की गई आरोपियों के कब्जे से लूटी गई रकम करीब साढे चार हजार रूपए की बरामद की गई, साथ ही हमला कराने वालें दुकानदार को भी गिरफ्तार किया।

मारपीट एवं लूट मे गिरफ्तार आरोपी अनित, सतवीर, विक्रम में अनित यादव पुलिस में कांस्टेबल के पद पर पुलिस आयुक्तालय जयपुर में तैनात हैं।

बढते अपराध ओर पुलिस कर्मियों का अपराध में सामिल होने का जिले में दूसरा मामला सामने आया हाल हीं के दिनों में गौ-तस्करी के आरोप में एक पुलिस कर्मी पहले भी गिरफ्तार हो चुका है जो जयपुर पुलिस लाइन में तैनात था।

संक्षिप्त समाचार

सुनील कुमार शर्मा ने प्रदेश सचिव पद से सौंपा इस्तीफा

मदरलैंड संवाददाता, नारायणपुर। कस्बा के सुनील कुमार शर्मा ने अखिल भारतीय ब्राह्मण परिषद युवा प्रकोष्ठ राजस्थान के प्रदेश सचिव पद से पारिवारिक कारणों के चलते पद से अखिल भारतीय ब्राह्मण परिषद के राष्ट्रीय संयोजक श्रीराम इंदौरिया एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष केशव कुमार शर्मा को पत्र भेजकर इस्तीफा सौंपा। सुनील कुमार शर्मा का कहना है कि कार्य की व्यवस्तता होने के कारण संगठन में समय नहीं दे पा रहे हैं इसलिए अपनी स्वेच्छा से त्यागपत्र देकर अखिल भारतीय ब्राह्मण परिषद के उज्जवल भविष्य की कामना की गई।

निबंध चित्रकला प्रतियोगिता का किया जाएगा आयोजन

मदरलैंड, महावीर प्रसाद। तिजारा राजस्थान सरकार द्वारा चलाये जा रहे राष्ट्रीय सडक सुरक्षा माह अभियान के तहत। महात्मा गांधी जीवन दर्शन समिति तिजारा (राजस्थान सरकार) की ओर से निबंध व चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा। प्रतियोगिता आयोजक देशपाल यादव ने बताया कि ऑनलाइन निबंध चित्रकला प्रतियोगिता के साथ दिनांक 13-02-2021 को समय प्रातः10 से 1:00 बजे तक कक्षा 9 से 12 व महाविद्यालयो के विधार्थी भाग ले सकते हैं। निबंध प्रतियोगिता कक्षा 9-10 विषय सुरक्षा-जीवन रक्षा। कक्षा 9-10 विषय सडक सुरक्षा से संबंधित। कक्षा 11-12 विषय सुरक्षा के साथ समझौता-दुर्घटना को न्यौता। महाविद्यालय स्तर पर विषय राष्ट्रीय सडक सुरक्षा पर आनलाइन निबंध, ड्राईंग प्रतियोगिता का तहसील स्तरीय आयोजन किया जायेगा। प्रतिभागी छात्र छात्राओं अपनी प्रविष्टि दिनांक 13-02-2021 दोपहर 2 बजे तक अपनी प्रविष्टि निम्न वाट्सएप न. 7727087763 पर भेज सकते है। ड्राईंग सीट पर प्रतिभागि अपना नाम, कक्षा, विधालय का नाम फोन जरूर अंकित करे। विजेता प्रतिभागियों को प्रशंस्ति पत्र देकर सम्मानित किया जायेगा।

समर्थकों संग ब्रज चौरीसी की परिक्रमा कर 8 मार्च को अपना जन्मदिन मनाएंगी वसुंधरा राजे

जयपुर। राजस्थान बीजेपी में प्रदेश अध्यक्ष सतीश पूनिया और पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे के बीच शक्ति प्रदर्शन की अनोखी जंग चल रही है। सतीश पूनिया पिछले कुछ दिनों से लाव-लश्कर के साथ धार्मिक स्थलों की यात्रा से शक्ति प्रदर्शन कर रहे हैं। दूसरी ओर, पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे आठ मार्च को अपना जन्मदिन ब्रज चौरीसी की परिक्रमा यानी गोवर्धन पर्वत की परिक्रमा से मनाने की तैयारी कर रही है। गोर्वधन पर्वत की 84 कोस यानी 268 किलोमीटर का परिक्रमा पथ राजस्थान हरियाणा और यूपी तीन राज्यों से गुजरता है, राजस्थान के हिस्से के 82 किलोमीटर के पथ का विकास राजे ने मुख्यमंत्री रहते हुए 300 करोड़ खर्च से कराया था। राजे के करीबी बीजेपी नेता और पूर्व मंत्री यूनूस खान ने कहा कि राजे के कार्यकाल में परिक्रमा पथ तैयार हुआ, उसकी उपेक्षा हो रही है। राजे ही बीजेपी में लोकप्रिय चेहरा है और 2023 में उनकी जरूरत है। दूसरी तरफ सतीश पूनिया ने कहा कि पार्टी में नेतृत्व को लेकर कोई जंग नहीं है। अब राजे समर्थक परिक्रमा पथ की राजे की यात्रा और जगह-जगह स्वागत कराकर संदेश देना चाहते हैं कि बीजेपी में अब भी सबसे लोकप्रिय चेहरा राजे ही है।

मानव सुरक्षा संगठन भारत के पदाधिकारियों की मीटिंग का हुआ आयोजन

» मदरलैंड, गिर्राज प्रसाद सोलंकी

लक्ष्मणगढ़। मानव अधिकार सुरक्षा संगठन भारत के पदाधिकारियों की मीटिंग का आयोजन हीरानंद आईटीआई कॉलेज पर किया गया।

प्रदेश अध्यक्ष अशोक योगी के नेतृत्व किया गया। मीटिंग में आने वाली 18 तारीख को होने वाले संगठन द्वारा कार्यक्रम के उपलक्ष में चर्चा की गई।

जिला कलेक्टर व जिला पुलिस अधीक्षक के मुख्य अतिथि होंगे कार्यक्रम

कार्यक्रम के संयोजक मुकेश गोयल ने बताया कि 18 फरवरी 2021 को होने वाले कार्यक्रम में जिला स्तरीय महिला सशक्तिकरण के मुख्य अतिथि जिला कलेक्टर अलवर व अध्यक्ष पुलिस अधीक्षक अलवर होंगे।

मीटिंग में रमेश आहूजा, राधे श्याम अहूजा, संतोष महिवाल, समाजसेवी ब्लड डोनर व्याख्याता सगीता गौड़, सोनू सिंह, गजेंद्र सिंह करणी सेना, रेखा शर्मा, रेणुका यादव, ब्रजमोहन, रामबाबू शर्मा (पत्रकार) एवं तहसील अध्यक्ष बहरोड थानागाजी किशनगढ़ आदि उपस्थित रहे।

चांदी का मुकुट पहनाकर किया सम्मान

» मदरलैंड, अशोक भारद्वाज

कठूमर। ग्राम सौंख में संरपच श्रीभान चौधरी के नेतृत्व में नदबई विधायक जोगिंदर सिंह अवाना व नदबई नपा चेयरमैन हरबती सिनसिनवार का स्वागत किया गया।

सौंख निवासी भूपेंद्र सिंह चौधरी ने बताया कि नदबई की नगर पालिका चेयरमैन हरबती सिनसिनवार के पैतृक गांव सौंख में रविवार को नदबई विधायक जोगिंदर सिंह अवाना व नदबई नगरपालिका चेयरमैन हरवती सिनसिनवार का सौंख संरपच श्रीभान चौधरी के नेतृत्व में ग्रामवासियों द्वारा चांदी का मुकुट पहनाकर एवं साफा बांधकर व शॉल ओढ़ाकर स्वागत किया गया। इस दौरान विधायक जोगिंदर सिंह व नदबई नगर पालिका की चेयरमैन ने हर संभव ग्राम वासियों का सहयोग करने का आश्वासन दिया। इस मौके पर नदबई नगर पालिका के अनेक पार्षदगण एवं भदिरा सरपंच बलबीर सिंह, अजय सरपंच कबई सहित सैकड़ों ग्रामीण मौजूद रहे।

अध्यापकों की कमी को लेकर छात्रों ने की स्कूल पर तालाबंदी व प्रदर्शन

शिक्षा विभाग के खिलाफ की नारेबाजी

» मदरलैंड, रेखचन्द्र भारद्वाज

भरतपुर। थाना क्षेत्र के गांव सहसन में मंगलवार की सुबह राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सहसन के विद्यार्थियों के द्वारा विद्यालय में रिक्त पड़े पदों को भरने की मांग करते हुए शिक्षा विभाग के खिलाफ नारेबाजी की व विद्यालय के मुख्य गेट पर ताला लगा दिया। विद्यालय के गेट पर ताला लगने की सूचना पर ब्लॉक मुख्य शिक्षा अधिकारी पहाड़ी नत्थल सिंह मौके पर पहुंचे और तालाबंदी कर रहे छात्रों को समझाइश कर विद्यालय के ताले खुलवाए।

मिली जानकारी के अनुसार क्षेत्र के गांव सहसन के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में करीब 600-700 के दरमियान विद्यार्थी अध्ययन करते हैं लेकिन विद्यालय में कई अध्यापकों व प्राध्यापकों के पद काफी दिनों से रिक्त पड़े हुए हैं जिसके कारण विद्यालय में अध्ययन करने वाले छात्र-छात्राओं को परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है और उनकी पढ़ाई बाधित हो रही है। कई बार रिक्त पड़े पदों को भरने की मांग के बावजूद अभी तक पदों को नहीं भरा गया है जिससे परेशान होकर मंगलवार की सुबह विद्यालय के छात्रों ने विद्यालय के मुख्य गेट पर ताला जड़ दिया और शिक्षा विभाग के खिलाफ नारेबाजी करने लगे। स्कूल पर तालाबंदी की सूचना पर ब्लॉक मुख्य शिक्षा अधिकारी पहाड़ी नत्थल सिंह मौके पर पहुंचे और प्रदर्शन कर रहे छात्रों से व गांव के प्रबुद्ध लोगों के साथ समझाइश कर विद्यालय का ताला खुलवाया व जल्द ही विद्यालय में व्यवस्था रिक्त पड़े पदों पर वैकल्पिक अथवा नियमित व्यवस्था किए जाने का आश्वासन दिया।

सुप्रीम कोर्ट के आदेश से अभिभावकों में घोर निराश

सड़कों पर विरोध दर्ज करवाएंगे अभिभावक

» मदरलैंड, संवाददाता

जयपुर। संयुक्त अभिभावक संघ ने मंगलवार को प्रेस विज्ञप्ति जारी करते हुए कहा कि 'सर्वोच्च न्यायालय के अंतरिम आदेश से अभिभावकों में घोर निराशा है। माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने केवल एक मत के आधार पर निर्णय देकर अभिभावकों के साथ कुठाराघात किया है। यह अंतरिम आदेश पूरी तरह से अभिभावकों के खिलाफ है क्योंकि इस आदेश में माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने जिन बच्चों और अभिभावकों एक दिन भी क्लास ऑनलाइन और ऑफलाइन के माध्यम से नही ली तो वह क्यो फीस दी, यह गंभीर तथ्य था जिस पर विचार होना चाहिए था। सर्वोच्च न्यायालय ने एक बार फिर अभिभावकों को शंका में डाल दिया यह मुद्दा जहां से शुरू हुआ था आज पुनः वही जाकर खड़ा हो गया है।

लीगल सेल मंत्री एडवोकेट अमित छंगाणी ने जानकारी देते हुए बताया कि माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने अपने अंतरिम आदेश में यह भी कहा है कि जो अभिभावक फीस जमा नही करवा पाएंगे उनके बच्चों की पढ़ाई बन्धित नही होगी, ना रिजल्ट रोक, ना प्रमोशन रोक सकते है जिसमें सबसे बड़ा कन्फ्यूजन खड़ा कर दिया गया है अगर ऐसी स्थिति में अगर कोई अभिभावक अगर फीस जमा नही करवा पाए तो उसके भविष्य की पढ़ाई का क्या होगा।

सर्वोच्च न्यायालय के अंतरिम आदेश से अभिभावक निराश ना होने, सभी कानूनी प्रकिया के तहत संघर्ष जारी रहेगा, अभिभावकों का पक्ष रखने के लिए सुप्रीम कोर्ट के सीनियर एडवोकेट को हायर करेगा संघ

संयुक्त अभिभावक संघ महामंत्री संजय गोयल ने कहा कि 'सर्वोच्च न्यायालय का आदेश केवल एक अंतरिम आदेश है, इस आदेश से किसी भी अभिभावक को हताश और निराश नही होना है। माननीय सर्वोच्च न्यायालय का हम सभी को सम्मान करना है और कानून के तहत जो प्रकिया व अधिकार हम सभी को प्राप्त है हमें उनका उपयोग करना चाहिए। सर्वोच्च न्यायालय में अभिभावकों का पक्ष रखने के लिए दरवाजे बंद नही हुए है सुप्रीम कोर्ट में पक्ष रखने के बहुत से मार्ग और द्वार निहित किये हुए है संयुक्त अभिभावक संघ उन सभी मार्गो और द्वारों को निहित करेगा। आगामी योजना में संयुक्त अभिभावक संघ सर्वोच्च न्यायालय के सीनियर अधिवक्ता को हायर करेगी और अभिभावकों का पुरजोर तरीके से पक्ष रखा जाएगा साथ ही सोमवार को सर्वोच्च न्यायालय के आदेश पर संयुक्त अभिभावक संघ सड़कों पर अपना विरोध दर्ज करवाएं जिसकी रूपरेखा बुधवार को तय कर दी जाएगी।

राष्ट्रपति से सम्मानित सीआईएसफ के जवानों का ग्रामीणों ने गॉव पहूॅचने पर किया सम्मान

» मदरलैंड, मयंक जोशी

बहरोड़। क्षेत्र के नंगल खोडिया गांव के निवासी कृष्ण कुमार यादव सहायक कमांडेंट सीआरपीएफ एवं नरेंद्र कुमार यादव सीआईएसफ दोनों सगे भाइयों का समस्त ग्राम वासियों ने मिलकर फूल माला एवं साफा पहनाकर स्वागत किया। आपको बता दें की आतंकवादियों से हुई मुठभेड़ में बहादुरी से मुकाबला किया था। साथ ही नक्सलवादियों से हुई मुठभेड़ में भी दोनों भाइयों ने बहादुरी का परिचय दिया और उनके पराक्रम वीरता को देखते हुए भारत के राष्ट्रपति ने वीरता पुरस्कार से सम्मानित किया। इसके पश्चात जब दोनों भाई छुट्टी पर गांव पहुंचे तो ग्रामीणों ने भी उनकी वीरता साहस का जिक्र करते हुए उन्हें सम्मानित किया। इस दौरान ग्राम पंचायत सरपंच वेद कुमार, उपसरपंच रमेश मित्तल, सूरजभान, राजू, राकेश, ख्याली, सतपाल यादव, सुबेसिंह सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

कुएं में गिरने से हुई मौत पुलिस की मौजूदगी में कुएं से निकाला शव

» मदरलैंड, अशोक भारद्वाज

कठूमर मसारी रोड स्थित कुएं में मंगलवार को एक व्यक्ति की गिरने से मौत हो गई। पुलिस की मौजूदगी में शव निकलवाया गया।

मसारी रोड पर स्थित कुए में मंगलवार को कस्बे के ही हरिजन बस्ती निवासी मुन्नी उर्फ कारे मेहतर उम्र करीब 45 वर्ष की दोपहर बाद कुएं में गिरने से मौत हो गई। कुएं में गिरने की सूचना पर लोगों का हुजूम उमड़ पड़ा। इधर सूचना पर कठूमर थाना पुलिस कर्मी भी मौके पहुंचे। इस दौरान कुऐ में कठूमर सरपंच शेर सिंह मीणा उतरे लेकिन सफलता हाथ नहीं लगने पर दुसरे प्रयास में जाटव बस्ती के 25 वर्षीय रिंकू जाटव कुएं में उतरा और बांस की डग्गी की सहायता से कारे को रस्सों की सहायता रेस्क्यू कर ऊपर निकाला गया। तब तक उस व्यक्ति की मौत हो चुकी थी। और इस मौके पर बताया कि पूर्व में भी दो बार मृतक व्यक्ति इस कुएं पर आकर के बैठ गया था। जिसे परिजन समझाइश कर ले गए थे। लेकिन इस बार हुए में गिरने से मौत हो गई।

सरपंचों की पांच दिवसीय कार्यशाला शुभारंभ

» मदरलैंड, संवाददाता

कठूमर पंचायत समिति सभागार पर पांच दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण आमुखीकरण कार्यशाला का सोमवार को विकास अधिकारी समय सिंह मीणा द्वारा दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ किया गया।

इंदिरा गांधी पंचायती राज एवं ग्रामीण विकास संस्थान जयपुर के निर्देशन में राजस्थान पंचायती राज आमुखीकरण प्रशिक्षण अभियान 2020-21 के तहत दिनांक 8 फरवरी से 12 फरवरी तक पांच दिवसीय आवासीय कार्यशाला का शुभारंभ हुआ। कार्यशाला में पंचायती राज विभाग एवं अन्य से संबंधित प्रशिक्षण दिया जाएगा। पंचायत समिति क्षेत्र के समस्त ग्राम विकास अधिकारी एवं समस्त सरपंच गण प्रशिक्षण ले रहे हैं। इस मौके पर अतिरिक्त विकास अधिकारी यशवंत शर्मा, सहायक विकास अधिकारी महेश शर्मा, विष्णु बंसल, योगेश सैनी, कैलाश जाटव, राजेश जाटव, शिवचरण मीणा, योगेश सैनी, पदम सिंह कृषि पर्यवेक्षक आदि के द्वारा प्रशिक्षण दिया गया।

विधानसभा में बजट को लेकर श्रम विभाग के अधिकारियों से किया श्रम मंत्री ने विचार-विमर्श

» मदरलैंड, देशबंधु जोशी

अलवर। श्रम राज्य मंत्री टीकाराम जूली ने 15 वी विधानसभा के छठे सत्र (बजट सत्र) की तैयारियों के संबंध में मंगलवार को श्रम विभाग के अधिकारियों से विचार विमर्श किया। बैठक में श्रम सचिव श्रम आयुक्त व अन्य विभागीय अधिकारी मौजूद रहे।

मंत्री जूली ने सभी अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि समस्त विभाग विधानसभा प्रश्नों का तय समायवधि में दिया जाना सुनिश्चित करे तथा प्रश्नों से संबंधित पूरक सामग्री समय उपलब्ध कराई जाए। मंत्री ने यह भी अधिकारियों को निर्देश दिए कि विभागीय अधिकारी यह भी सुनिश्चित करे की पूर्व का कोई आश्वासन ध्यानाकर्षण इत्यादि लंबित ना रहे। बैठक में विभाग द्वारा वर्तमान में किए जा रहे कार्यों की समीक्षा भी की गई तथा मुख्यमंत्री कार्यालय से प्राप्त पत्रों तथा विधायकों के प्रश्नों का उत्तर पूर्व गंभीरता से तय समय में प्रत्युत्तर दिया जाना सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने भवन व अन्य सँनिर्माण कर्मचारी मंडल में उपलब्ध बजट के संबंध में चर्चा की तथा सभी जिलाधिकारियों को निर्देश दिए कि पंजीयन एवं योजनाओं के आवेदन विशेष फोकस कर निस्तारित किए जाए तथा पेंडेंसी का शीघ्र निपटारा किया जाए।

बैठक में गत वर्ष कोरोना काल में विभाग के अधिकारियों द्वारा अपने जिले में जिला प्रशासन के निदेर्शानुसार प्रवासी श्रमिकों के कल्याण के लिए किए गए कार्य तथा आर्थिक मदद वेतन भुगतान से संबंधित परिवादो का निस्तारण तथा प्रवासी श्रमिकों को गंतव्य स्थान पर पहुंचाने की कार्यवाही के बारे में भी चर्चा की गई तथा विभाग के अधिकारियों द्वारा इस दौरान उल्लेखनीय कार्यों की सराहना भी की गई।

शराब की दुकान व गोदाम लूटने की फिराक में शामिल गिरोह का तीसरा आरोपी पकड़ा

» मदरलैंड, संवाददाता

खैरथल। स्थानीय थाना पुलिस द्वारा हरसौली में गत माह शराब की दुकान व गोदाम लूटने की योजना बनाते पकड़े गए आरोपियों का तीसरा साथी भी पुलिस की गिरफ्त में आ गया है।

पुलिस ने बताया कि अभी दो अन्य साथी बदमाशों की तलाश जोरों पर की जा रही है।

थानाधिकारी दारा सिंह ने बताया कि गत 17 दिसम्बर की शाम को हरसौली में शराब की दुकान और गोदाम को लूटने की फिराक में झाड़ियों में छुपकर योजना बनाते हुए बदमाशों को दबोचने की कार्रवाई की गई थी। जिसमें दो बदमाशों मोनू उर्फ सचिन सिंघल व अनिल गुर्जर को 315 बोर की लोडेड देशी कट्टे व लोहे की रॉड तीन लाठियां, मिर्च पाउडर का पैकेट, टार्च रस्सी आदि के साथ गिरफ्तार किया गया था जबकि तीन बदमाश भाग जाने में सफल हो गए। इनमें से एक गांव झाडका निवासी यशवंत उर्फ यशु जाट को गिरफ्तार किया गया है और उनके फरार दो अन्य साथी बदमाशों हेमंत उर्फ काला और नीलेश गुर्जर अभी फरार है जिनकी तलाश की जा रही है।

एनकेपी खानपुर में उपभोक्ताओ को वितरित किए पीवीसी राशन कार्ड

» मदरलैंड संवाददाता।

रुड़की। खाद्य नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता मामले विभाग तहसील लक्सर द्वारा नेशनल कन्या इण्टर कालेज खानपुर में पीवीसी राशन कार्ड वितरण का शुभारम्भ किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए एसडीएम लक्सर शैलेन्द्र सिंह नेगी ने कहा कि आधुनिक तकनीकि को जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से राशन कार्ड ऑनलाईन किये जा रहे है। इससे एक ओर जहॉ पारदर्शिता को बढावा मिलेगा वहीं वन नेशन, वन राशन कार्डद्ध के तहत उपभोक्ता कहीं से भी राशन ले सकेगा। उन्होंने विद्यालय में अनुशासन की भी प्रशंसा की। कहा कि नैतिक दृष्टि से छात्रों को उन्नत किया जा रहा है। छात्रों को अपने लक्ष्य निर्धारित कर जीवन में अनुशासन के साथ परिश्रम करने के लिये प्रोत्साहित किया। कहा कि कोई भी छात्र सकारात्मक मेहनत व लग्न से देश के सर्वोच्च पद पर आसीन हो सकता है। क्षेत्रीय खाद्य आपूर्ति अधिकारी ममता गवाडी ने कहा कि प्रत्येक राशन कार्ड धारक को पीवीसी राशन कार्ड उपलब्ध कराये जायेगे, इससे प्रत्येक राशन कार्ड धारक ऑनलाईन हो जायेगा। प्रधानाचार्य डॉ. घनश्याम गुप्ता ने अतिथियों का आभार जताते हुए कहा कि कालेज कक्षा 9 से 12 तक सर्वाधिक छात्र संख्या 1332 के साथ जनपद में प्रथम स्थान पर हैं। भावना, शालू, मानसी भाटी, हरप्रीत कौर, पायल, नेहा, रोशन, नर्गिस ने स्वागत गीत व सरस्वती वन्दना प्रस्तुत की। ग्राम तुगलपुर राशन कार्ड धारक नीलम, बिमलेश, मुनेश, राजकुमारी, उषा, बेबी, वर्षा, प्रियंका, कुसुंम, कविता, सुषमा व चंचल को एसडीएम ने पीवीसी राशन कार्ड वितिरित किये। ग्राम प्रधान तुगलपुर बलसिंह, ग्राम प्रधान खानपुर नरेश कुमार, राशन डीलर तुगलपुर महन्त गिरी, शेर सिंह, मुडाखेडा कला से राजेश, दल्लावाला से नरेन्द्र, चन्दपुरी से मदन, सुल्तानपुर से दिलशाल व जुबैर, ग्रमिण ऋषिपाल, मदन, भारती, शरण गिरी, योगेश, अमित, तेजपाल, गौरी शंकर, अरूण, बाबूराम, तेल्लूराम, एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी बलराम गुप्ता, सुरेशचन्द्र कवटियाल, मीनू यादव, विजय कुमार, अखिल कुमार, विशाल भाटी, ओमपाल सिंह उपस्थित रहे।

रुड़की से बरेली तक रवाना हुई वीर सपूतों को समर्पित विजय मशाल

» मदरलैंड संवाददाता।

रुड़की। रुदप्रयाग से होकर बंगाल अभियंता समूह एवं केंद्र रुड़की में पहुंची 1971 के वीर सपूतों को समर्पित विजय मशाल के सम्मान में 9 दिनों तक कई कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इसमे स्वागत समारोह, युद्ध स्मारक पर पुष्पांजलि, वीर नारी एवं भूतपूर्व सैनिकों के घरों पर मशाल का सम्मान, प्रशिक्षण बटालियन में मशाल का स्वागत, वीर नारी और शूरवीरों का सम्मान समारोह तथा बच्चों के लिए चित्रकला एवं सवाल-जवाब प्रतियोगिता शामिल रहे। मंगलवार को भव्य समारोह में बैंड की धुनों पर सैन्य घोड़ों की अगुवाई में 'भारत माता की जय' के गुंज के साथ विजय मशाल को झंडी दिखा कर बंगाल सैपर्स के युद्ध स्मारक से बरेली के लिए रवाना किया गया। इस मौके पर रूड़की स्टेशन के अधिकारी, सरदार साहिबान, जवान के साथ वरिष्ठ नागरिक एवं भूतपूर्व सैनिक भी मौजूद रहें। बता दें कि 1971 के वीर सपूतों को समर्पित विजय मशाल 1 फरवरी को रूद्रप्रयाग से बीईजी एण्ड सेंटर रूड़की पहुंची थी। 9 दिनों तक स्वर्णिम विजय मशाल रुड़की में रही। इस दौरान 1971 के वीर सपूतों को समर्पित विजय मशाल के सम्मान में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन हुआ।

संक्षिप्त समाचार

नगला में धार्मिक स्थल निर्माण से आक्रोश, एसडीएम से रोक की मांग

मदरलैंड संवाददाता, रुड़की। नन्दा कालोनी, नगला इमरती में चल रहे धार्मिक स्थल के निर्माण से कालोनीवासियों में आक्रोश पनप गया है। मंगलवार को कालोनीवासियों ने तहसील पहुंच एसडीएम से इस पर रोक लगाए जाने की मांग की। एसडीएम ने मामले में कोतवाली रुड़की को निर्देशित किया है। एसडीएम को दिए प्रार्थना-पत्र में नन्दा कालोनी निवासी विजय सिंह, शिव सिंह नेगी, देवेंद्र, सुरजन सिंह, प्रेम सिंह, महिपाल सिंह आदि ने बताया कि कालोनी में करीब 151 परिवार रहते हैं। इनमें से 150 परिवार एक ही समुदाय है। दूसरे समुदाय से केवल एक परिवार कालोनी में रहता है, उसके द्वारा ही कालोनी में धार्मिक स्थल का निर्माण कराया जा रहा है। जिसे लेकर दूसरे लोगों में आक्रोश पनप रहा है। कालोनीवासियों का कहना है कि धार्मिक स्थल के निर्माण से कलोनी में दूसरे और बाहरी लोगों की आवाजाही बढ़ जाएगी, जिससे कालोनी का माहौल खराब होने की आशंका है। लोगों के आक्रोश को देखते हुए भी निर्माण को हमेशा के लिए बंद कराए जाने की जरूरत है। एसडीएम ने कोतवाली रुड़की पुलिस को मामले में कार्रवाई के आदेश दिए हैं। उधर इस मामले को लेकर गौरक्षा विभाग विश्व हिंदू परिषद ने भी नाराजगी जताई है। संगठन ने निर्माण पर तत्काल रोक की मांग की है। देवेंद्र वर्मा का कहना है कि विरोध को देखते हुए दूसरे लोगों को धार्मिक स्थल का निर्माण तत्काल बंद करना चाहिए। प्रशासन को भी मामले में तत्काल संज्ञान लेना चाहिए।

लंढौरा में उखाड़े 3 दुकानों के शटर

मदरलैंड संवाददाता।, रुड़की। चोरों ने कस्बे में बाइक एजेंसी और दो अन्य दुकानों के ताले तोड़कर हजारों रुपए की नकदी व अन्य सामान चोरी कर लिया। एक ही रात में 3 दुकानों में चोरी होने की घटना से व्यापारियों में रोष व्याप्त है। दुकानदारों ने मामले की तहरीर पुलिस को दी है। कस्बा लंढौरा में जुनेद लक्सर मार्ग पर बाइक एजेंसी कर रखी है। बताया गया है कि रोजाना की भांति वह दुकान बंद कर घर चला गया। देर रात चोरों ने एजेंसी में सेंधमारी कर हजारों रुपए का सामान चोरी कर लिया। चोरों ने मेन बाजार स्थित झंडा चैक पर श्रंगार की दुकान का शटर उखाड़कर 20 हजार के नोटों के हार और गल्ले में रखी 15 हजार की नकदी चोरी कर ली। चोरी का सिलसिला यहीं खत्म नहीं हुआ चोरों ने बाइक एजेंसी के समीप स्थित टाइल्स की दुकान का शटर उखाड़कर सेंधमारी का प्रयास किया लेकिन यहां सफल नहीं हो पाए। चोरी का पता चलते ही दुकानदारों में रोष व्याप्त हो गया। दर्जनों दुकानदार मौके पर जमा हो गए। पीड़ितों जुनेद, दीपक व सैफ अली ने मामले की तहरीर पुलिस को दी। उपनिरीक्षक संजय गौड़ का कहना है कि आसपास के सीसीटीवी कैमरा को खंगाला जा रहा है। जल्द ही वारदात में शामिल चोरों को चिन्हित कर गिरफ्तार किया जाएगा।

अभियंता की फटकार के बाद दर्ज हुई शिकायत

मदरलैंड संवाददाता, रुड़की। जल संस्थान कर्मचारी को उपभोक्ता की शिकायत को अनसुना करना पड़ा भारी पड़ गया। उपभोक्ता की शिकायत पर सहायक अभियंता ने कर्मचारी को जमकर फटकार लगाई। नगर निगम परिसर में जल संस्थान कार्यालय में बढेड़ी बुजुर्ग निवासी पेयजल की समस्या को लेकर पंहुचा, लेकिन बुजुर्ग उपभोक्ता की शिकायत को किसी ने गंभीरता से नहीं लिया। जल संस्थान कर्मी ने शिकायत को पंजिका में भी नहीं चढ़ाया। इसके बाद उपभोक्ता सहायक अभियंता अरुण सोनी के पास पंहुचा। उसने अपनी समस्या रखी। उपभोक्ता की शिकायत नहीं लिखे जाने से खफा सहायक अभियंता ने कर्मचारी को जमकर फटकार लगायी। जिसके बाद कर्मचारी ने उपभोक्ता की शिकायत दर्ज की गई।

महिलाओं ने खोला ईओ के खिलाफ मोर्चा, कार्यालय पर प्रदर्शन

» मदरलैंड संवाददाता।

पिरान कलियर। नगर पंचायत ईओ के कई महीनों से कार्यालय नही आने से नाराज महिलाओं ने नगर पंचायत कार्यालय पर इक्कट्ठा होकर हंगामा किया और ईओ के खिलाफ नारेबाजी की। इस दौरान महिलाओं ने नगर पंचायत ईओ पर 5 माह से कार्यालय नही मिलने का आरोप लगाया। मंगलवार को कस्बे की सैकड़ों महिलाएं और पुरुष इकट्ठा होकर पिरान कलियर नगर पंचायत कार्यालय पहुँचे और कार्यालय का घेराव शुरू कर दिया। नगर पंचायत ईओ के खिलाफ विरोध प्रदर्शन कर नारेबाजी कर दी। ईओ पर 5 माह से कार्यालय में नहीं आने का आरोप लगाया। नगर पंचायत अध्यक्ष प्रतिनिधि शफक्कत अली ने किसी तरह महिलाओं को शान्त किया। महिलाओं का कहना है कि ईओ विनोद कुमार श्रेय पिछले करीब 5 माह से कार्यालय पर नही आ रहे हैं। वह बार बार अपने कामो के लिए नगर पंचायत कार्यालय आते है। लेकिन ईओ के यहां ने होने की बात कहकर लोटा दिया जाता हैं। जिस कारण शौचालय, मकानो के कागजात पर हस्ताक्षर नही हो रहे है। इसके अलावा अन्य काम भी नही हो पा रहे हैं। स्थानीय लोगो को परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। उन्होंने ईओ पर यह आरोप लगाया कि विकास के नाम पर भेदभाव किया जा रहा है। चेयरमैन प्रतिनिधि शफक्कत अली ने बताया कि नगर पंचायत क्षेत्र में करीब 1200 शौचालय सरकार द्वारा आवंटित हुए है, जो लाभार्थियों के फार्म भरकर जमा होने है, लेकिन ईओ के पिछले पांच महीनों से कार्यालय में नही आ रहे हैं। जिस कारण कार्यालय का कार्य बाधित हो रहा है। नगर पंचायत कार्यालय का बिजली का बिल भी जमा नही होने पर ऊर्जा निगम ने कार्यालय का बिजली का कनेक्शन भी काट दिया है। क्षेत्र के जनहित से जुड़े कार्यों में बाधा उतपन्न हो रही हैं। कार्यालय के बाबुओ से अस्थाई काम चलाया जा रहा हैं। ईओ से फोन पर संपर्क करने पर भी वह जवाब नही देते हैं। शहरी विकास मंत्री को भी उनकी कार्यशैली से कई बार अवगत कराया जा चुका हैं, लेकिन अभी तक कोई कार्रवाई नही की गई हैं। आज क्षेत्र की जनता परेशान होकर कार्यालय पर इकट्ठा होकर अपने गुस्से का इजहार किया हैं। उन्होंने महिलाओं को किसी तरह से समझाकर वापस भेज दिया हैं। जल्द ही ईओ विनोद कुमार श्रय को यहाँ से नही हटाया गया तो क्षेत्र की जनता को समझना हमारे बस में नही होगा। जनता सड़को पर उतरने को मजबूर होगी। इस दौरान अकबर प्रधान, मास्टर शहजाद ,शफीक चाचा ,रईस अहमद, मोहर्रम अली, कुर्बान अली, नूर फातमा ,गुन्नारा ,मिनिया ,शाहिदा, मीरजहां, अख्तरी, नसरीन मुन्नी ,बानो ,इमरान ,दिलशाना ,गुलिस्तां ,मोशिना, आशमा ,लैला, सन्नो, जोनी, नईमा, सलमा, इमराना, इसरत, खुशनुदा, कौसर, शाहिस्ता, तमन्ना, रूबी, रब्बानी, शाहीन, कम्मो, शाहिदा मौजूद रही।

शुगर मिल ने किया 7 दिसंबर तक का भुगतान

» मदरलैंड संवाददाता।

झबरेड़ा। इकबालपुर शुगर मिल ने वर्ष 2020-21 के बकाया गन्ना भुगतान की 8 दिन की एडवाइस संबंधित गन्ना समितियो को भेजी है। जिसका भुगतान जल्द किसानों के खातों में पहुंच जायेगा। धनश्री एग्रो प्रोडक्ट्स प्राइवेट लिमिटेड इकबालपुर शुगर मिल ने वर्ष 2020-21 का 7 दिसंबर तक का बकाया भुगतान कर दिया है।

मिल प्रबंधन ने 8 दिन के बकाया गन्ना भुगतान की एडवाइज इकबालपुर व अन्य गन्ना समितियो को भेज दी है। मिल के मुख्य महाप्रबंधक सुरेश शर्मा ने बताया है कि मिल प्रबंधन ने वर्ष 2020-21 में 8 दिसंबर से 15 दिसंबर तक पेराई के लिए खरीद किए गए गन्ने की 8 दिन के बकाया भुगतान 12 करोड़ 60 लाख की एडवाइज इकबालपुर समेत अन्य गन्ना समितियो को भेज दी है।

जल्द ही भुगतान धनराशि जल्द किसानों के खातों में पहुंच जाएगी। बताया कि मिल लगभग 45 हजार कुंतल की पेराई प्रतिदिन कर रहा है। यह आंकड़ा दिन पर दिन बढ़ रहा है क्योंकि क्षेत्रीय किसानों ने अब पौधा गन्ना फसल की कटाई शुरू कर दी है। उन्होंने किसानों से मिल को अधिक से अधिक गन्ना सप्लाई करने की अपील की और कहा कि मिल को गोला रहित साफ सुथरा गन्ना सप्लाई करें।

यह भी कहा कि किसानों का गन्ना भुगतान समय से पेराई सत्र 2019-20 की भांति संयुक्त एसक्रो खाते से किया जाएगा।

वाह री सियासत...जिसने आगे बढ़ाया उसके खिलाफ ही खोला मोर्चा

» मदरलैंड संवाददाता।

हरिद्वार। जिस पार्टी ने आगे बढ़ाया आज उसके खिलाफ ही पार्टी के एक कायकर्ता ने मोर्चा खोल दिया है। पार्टी सुप्रीमो से लेकर प्रदेशाध्यक्ष तक आरोपों की झड़ी लगा दी गई है। यही नहीं मामला थाने तक जा पहुंचा है। फिलहाल पुलिस मामले की जांच में जुटी है। उधर राजनीतिक गलियारों में भी यह मामला चर्चा का विषय बना है। लाठरदेवा निवासी भागमल व अन्य कुछ नेताओ को पिछले दिनों भाजपा से नजदीकियां सामने आने पर बसपा ने पार्टी से निष्कासित कर दिया था। सभी पर जिला पंचायत अध्यक्ष चुनाव में पार्टी से दगा कर भाजपा प्रत्याशी को वोट दिए जाने के आरोप हैं।

बताया जा रहा है कि निष्कासन से खफा भागमल ने बसपा हाईमान सुश्री मायावती और प्रदेशाध्यक्ष पर टिकट के नाम पर पैसे मांगने का आरोप लगा दिया है। झबरेड़ा थाने में दी तहरीर में भागमल ने प्रदेशाध्यक्ष नरेश गौतम पर बसपा सुप्रीमो के नाम से टिकट के नाम पर साढ़े आठ लाख रुपये ले जाने की बात कही है। जिस पर फिलहाल पुलिस जांच कर रही है। हालांकि पूरा मामला सियासी माना जा रहा है। प्रदेशाध्यक्ष नरेश गौतम ने आरोपो से इंकार किया है।

बता दें कि बसपा ने भागमल को दो बार जिला पंचायत सदस्य का टिकट देने के साथ ही 2017 में विधानसभा का टिकट भी दिया था। इसके बावजूद जिला पंचायत अध्यक्ष चुनाव में वह भाजपा प्रत्याशी के पक्ष में जा खड़े हुए थे। अब बसपा सुप्रीमो और प्रदेशाध्यक्ष पर आरोपों से मामला चर्चाओ में बना है।

पत्रकार ने लौटाया गिफ्ट किया फोन

» मदरलैंड संवाददाता।

रुड़की। गिफ्ट में मिले मोबाईल को एक पत्रकार ने लौटा दिया। मोबाईल का बिल न मिलने के कारण पत्रकार की ओर से यह कदम उठाया गया। बता दें कि दिल्ली से प्रकाशित हिंदी दैनिक समाचार पत्र मदरलैंड वाईस के उत्तराखण्ड ब्यूरो को एक बसपा नेता की ओर से मोबाईल गिफ्ट किया गया था, लेकिन इसका बिल नहीं दिया गया। कई बार मांगने के बावजूद बिल नहीं मिल सका। जिस पर परेशान होकर सोमवार को पत्रकार ने गिफ्ट किए गए मोबाईल को वापस कर दिया। चिन्हीत राज्य आंदोलनकारी एवं भाजपा किसान मोर्चा जिला मंत्री सतीश नेगी के मुताबिक साथी पत्रकार के साथ धोखा हुआ है। वहीं बसपा नेता का कहना है कि उन्होने ग्राम प्रधान के साथ सिविल लाइंस स्थित एक दुकान से मोबाईल पत्रकार को गिफ्ट के तौर पर देने को खरीदा था। इसमें मोबाईल बेचने वाले दुकानदार ने दो दिन बाद बिल दिए जाने की बात कही, लेकिन दुकानदार लगातार टरकाता ही रहा। बसपा नेता के मुताबिक अब वह ग्राम प्रधान के साथ जाकर मोबाईल वापस करेगें। सिसौना में मुंगलवार को संत शिरोमणी रविदास की प्रतिमा स्थापित की गई। इस अवसर पर रिटायर्ड बीएसएनएल एसडीओ एवं समाजसेवी प्रेम सिंह ने कहा कि संत रविदास ने सब धर्मो को अध्यात्म का मार्ग दिखाया। सब धर्मो के कल्याण को काम किया।

एएसडीएम नेमौके पर पहुंचकर कराई जल निकासी

» मदरलैंड संवाददाता।

झबरेड़ा। झबरेडा-शीतलपुर मार्ग पर मेड बांधकर भर रहे तालाब के पानी को एएसडीएम ने मौके पर पहुंचकर सुचारू करा दिया। झबरेडा स्थित झबरेडा सीतलपुर मार्ग पर नगर से आ रहे रोजमर्रा के पानी से मार्ग पर बने तालाब के ओवरफ्लो होने से मार्ग पर जलभराव हो गया था। साइड में किसानों ने खेतों में और कब्रिस्तान में जा रहे पानी को रोकने के लिए मेड बांध दी थी। कस्बे के पानी की निकासी न होने के कारण प्रतिदिन गांव व नगर वासियों को आने जाने के लिए परेशानी का सामना करना पड़ रहा था। पानी की निकासी के लिए शासन प्रशासन से गुहार लगाई गई। मंगलवार को एएसडीएम पूर्ण सिंह राणा मौके पर पहुंचे और मार्ग पर लगाई गई मेड हटवाई। एएसडीएम ने नगर पंचायत को निर्देश दिए हैं कि वह तालाब की चारों ओर की मेड दोबारा ऊची करके बनाए तथा तालाब की सफाई व खुदाई कराई जाए। कहा कि जो तालाब में पट्टे काटे गए हैं उनको निरस्त कर तालाब का चैड़ीकरण किया जाए। उन्होंने किसानों व मुस्लिम समाज के लोगों से कहा कि वह अपने खेतों और कब्रिस्तान के किनारे अपनी मेड बांध लें परंतु सार्वजनिक मार्ग न रोकें ।मार्ग पर जलभराव से आमजन को परेशानी न उठानी पड़े। उन्होंने पुलिस को भी आदेश दिया कि कोई भी सार्वजनिक मार्ग को न रोके। अगर कोई सार्वजनिक मार्ग रोकने का कार्य करता है तो उसके खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाए।

कार्यकत्री को किया फ्रीज डोनेट

» मदरलैंड संवाददाता।

झबरेड़ा। हीराहेड़ी आंगनबाड़ी सेक्टर सुपरवाइजर ने हरिद्वार में बनाए गए सोशल सर्विस ग्रुप के माध्यम से आंगनबाड़ी कार्यकत्री को शादी के अवसर पर फ्रिज डोनेट किया है। ग्राम हीराहेड़ी आगनबाड़ी सेक्टर सुपरवाइजर रिचा गर्ग द्वारा हरिद्वार स्थित इंदु एनक्लेव में फ्रेंड्स इन हैंड ग्रुप के नाम से एक सोशल सर्विस ग्रुप बनाया हुआ है। जिसके माध्यम से वह जरूरतमंद लोगों की सहायता करती हैं। रिचा गर्ग ने बताया कि हीराहेडी आंगनबाड़ी सेक्टर क्षेत्र में आने वाले गांव डेलना निवासी आंगनबाड़ी कार्यकर्ती अंजू की फ्रेंडस इन हैंड ग्रुप द्वारा फ्रीज डोनेट किया गया है। कुछ समय पूर्व आंगनबाड़ी कार्यकर्ती अंजू के माता पिता का निधन हो गया था। अंजू ने फ्रेंड्स इन हैंड ग्रुप का आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद दिया। कहा कि फ्रेंड्स इन हैंड ग्रुप आगे भी समय-समय पर ऐसे जरूरतमंद लोगों का सहयोग करता रहेगा।

हकीमपुर में बड़े भाई ने छोटे भाई को उतारा मौत के घाट

» मदरलैंड संवाददाता।

रुड़की। हकीमपुर तुर्रा गांव मे जेठ और भाभी के बीच खाना देने को लेकर हुए विवाद में बीच-बचाव करने आए छोटे भाई को बड़े भाई ने धारदार हथियार से हमला कर मौत के घाट उतार दिया। वारदात से जहां परिजनों में कोहराम मच गया वही गांव में भी सनसनी फैल गई। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए सिविल अस्पताल भेज दिया है। पुलिस ने मुकदमा दर्ज करने के साथ ही आरोपित को हिरासत में ले लिया है। पिरान कलियर थाना अंतर्गत हकीमपुर तुर्रा निवासी सुक्कड़ और धर्मपाल दो सगे भाई हैं। करीब 10 साल पहले सुक्कड़ की पत्नी की मौत हो गई थी। तभी से सुक्कड़ अपने छोटे भाई धर्मपाल के साथ रहता था और वहीं खाना खाता था। सुक्कड़ शराब पीने का आदि था। सोमवार देर रात सुक्कड़ शराब के नशे में घर पहुंचा। सुक्कड़ ने भाभी से खाना मांगा। जिस पर भाभी ने कुछ देर रुकने के लिए कहा। इतना सुनते ही नशे में धुत सुक्कड़ आग बबूला हो गया और भाभी के साथ मारपीट करने लगा। जेठ और भाभी के बीच हो रही मारपीट देख धर्मपाल बीच-बचाव करने के लिए आ गया। तभी सुक्कड़ ने घर में रखा धारदार हथियार उठाकर छोटे भाई पर वार शुरू कर दिए। धर्मपाल लहूलुहान होकर जमीन पर गिर गया और वहीं दम तोड़ दिया। इस बीच आरोपित सुक्कड़ ने किसी को घर में घुसने नहीं दिया। घंटों बाद किसी ने मामले की सूचना पुलिस को दी। कलियर थानाध्यक्ष जगमोहन रमोला पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। हत्या से जहां परिवार में कोहराम मच गया वहीं ग्रामीण घटना को लेकर सन्न रह गए। पुलिस ने मौके से आरोपित सुक्कड़ को हत्या में प्रयुक्त छुरी के साथ हिरासत में ले लिया। पुलिस ने आरोपित के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है।

परीसिमन ने तोड़े सपने, बसपा, कांग्रेस ने उठाए सवाल

» मदरलैंड संवाददाता।

हरिद्वार। पंचायतो में हुए परीसिमन ने चुनावी तैयारियों में जुटे कई नेताओ के सपने तोड़ दिए हैं। सियासी गणित बिगड़ने से दावेदारों ने चुनाव से पहले ही अपने कदम पीछे खींचने शुरू कर दिए हैं। उधर बसपा, कांग्रेस नेताओ ने परीसिमन को लेकर सवाल उठा दिए हैं। बसपा के पूर्व जिलाध्यक्ष मास्टर योगराज सिंह ने कहा कि भाजपा शासित त्रिवेंद्र सरकार ने जानबूझकर परीसिमन को अपने नेताओ के अनुरूप कराया है। सरकार के दबाव में यह परीसिमन किया गया है। उन्होने सवाल उठाते हुए कहा कि इसमें कहीं भी एकरूपता नहीं है, लेकिन वोट जनता को ही देना है, सरकार का यह एजेंडा भी जनता कामयाब नहीं होने देगी। किसान, मजदूर, युवा और छोटे व मझोले कारोबारी पहले ही सरकार द्वारा दिए जा रहे जख्मों से घायल हैं। चुनाव में भाजपा को इसका जवाब वोटर देगें। वहीं जिला पंचायत सदस्य विजयपाल सिंह ने कहा कि प्रदेश सरकार जानबुझकर कांग्रेस, बसपा के मौजुदा जिला पंचायत सदस्यों के क्षेत्रों को बदलवा रही है। कहा कि सरकार के दबाव में अधिकारी भी इस पर ध्यान नहीं दे पा रहे हैं। उन्होने इसे लोकतंत्र के खिलाफ बताया। कहा कि सरकार ने परीसिमन ने अपनी मनमानी चलाई है, लेकिन जनता इसका जवाब भाजपा को जरूर देगी। उन्होने आरक्षण को लेकर भी सरकार की मंशा को घेरा। कहा कि आरक्षण भी सरकार अपनी मंशा के अनुरूप ही कराएगी। दौलतपुर के जिला पंचायत सदस्य भूप सिंह ने भी परीसिमन पर सवाल खड़े किए। कहा कि सरकार की मंशा विपक्षी जिला पंचायत सदस्यों के क्षेत्रों को बदलवाकर उन्हे चुनाव लड़ने से रोकने का है, लेकिन सरकार की यह मंशा पूरी नहीं होगी। भाजपा नेताओ को चुनाव में मूह की खानी पड़ेगी, क्योकिं वोट तो हरिद्वार की जनता को ही देना है। इसमें कोई बाहर से नहीं आने वाला है।

नौनीहालो में दिखी विशिष्ट नृत्य प्रतिभा

» मदरलैंड संवाददाता।

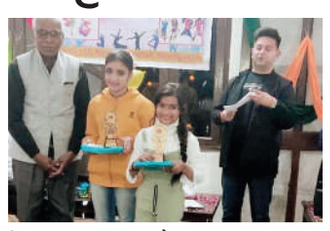

हरिद्वार। शांतिपुरम कल्याण समिति, जगजीतपुर द्वारा नृत्य प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें दो आयु वर्गों के प्रतिभागियों ने नृत्य कला का प्रदर्शन किया। प्रथम आयु वर्ग, 5 से 9 वर्ष में परी ने प्रथम, विराज पराशर ने द्वितीय व तृतीय स्थान वर्णिका शुक्ला ने प्राप्त किया। वहीं द्वितीय आयुवर्ग, 10 से 15 वर्ष में प्रथम स्थान संचन बिष्ट, द्वितीय स्थान हिमानी सिंह तथा तृतीय स्थान कशिश ने प्राप्त किया। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए पं आर. मण्डवाल ने कहा कि इस प्रकार के आयोजन का उद्देश्य क्षेत्र में रह रहेद्य बच्चों की प्रतिभाओं को समाज के सामने लाना है। इस तरह के आयोजन कराने के सूत्रधार डा0 दुर्गेश त्यागी बधाई व साधुवाद दिया। कार्यक्रम के आयोजक डा0 दुर्गेश त्यागी ने कहा कि नौनीहालो में अपार प्रतिभा समाहित है, जिन्हें समाज के सामने लाने व उनकी प्रतिभा को निखारने के उद्देश्य से यह आयोजन किया गया है। इस प्रकार के कार्यक्रम भविष्य में भी आयोजित किये जाने चाहिए। जिससे कि क्षेत्र के बच्चों को अपनी कला प्रस्तुत करने का मंच उपलब्ध हो सकें। उन्होंने कहा कि कोई भी सकारात्मक प्रयास बच्चों का मार्ग दर्शन करने में सहायक होता है। कार्यक्रम की अध्यक्षता धर्मपाल ने की। इस अवसर पर हरीशचन्द्र, अमरसिंह, सौम्या त्यागी, निर्मल त्यागी, ईशा, चंचल, मोहिनी, लक्ष्मी देवी इत्यादि क्षेत्रवासी उपस्थित थे। इस मौके पर डा0 अंशु भारद्वाज व सुमन ने निर्णायक की भूमिका अदा की। इस अवसर पर आर्दश, रूदांक्ष त्यागी, पार्थ, आरव, वंशिका, प्रेरणा पुण्ढीर, राधिका शर्मा, आशनाया पाराशर, मनीष आदि बच्चों ने अपनी रोमांचक प्रस्तुति से दर्शकों का मन मोह लिया।

newsdesk@motherlandvoice.org
editor@motherlandvoice.org

राजकोषीय घाटा जीडीपी का 9.5% रहने का अनुमान इसे नियंत्रित करने के प्रयास जारी : सीतारमण

नई दिल्ली। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा कि सरकार राजकोषीय घाटे को नियंत्रित रखने के लिए बराबर कदम उठा रही है। चालू वित्त वर्ष में इसके सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का 9.5 प्रतिशत रहने का अनुमान है। पिछले सप्ताह बजट पेश करने के बाद उद्योग मंडल पीएचडी चेंबर ऑफ कामर्स के सदस्यों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि राजकोषीय घाटा ऐसा है, जिससे बचा तो नहीं जा सकता, लेकिन साथ ही हमें इस पर नजर रखनी है और सावधानीपूर्वक इस पर अंकुश लगाना है।

चालू वित्त वर्ष के बजट में राजकोषीय घाटा जीडीपी का 3.5 प्रतिशत के स्तर पर रखने का लक्ष्य के व्यय और आय के अंतर को था, लेकिन कोविड-19 संकट के बीच अर्थव्यवस्था को गति देने के लिए अधिक खर्च करने की जरूरत पड़ी। इससे राजकोषीय घाटा ऊंचा रहने का अनुमान लगाया गया है।

संशोधित अनुमान में चालू वित्त वर्ष 2020-21 में राजकोषीय घाटा जीडीपी का 9.5 प्रतिशत रहने की संभावना जताई गई है। सरकार दशानेंवाले राजकोषीय घाटा के अगले वित्त वर्ष 2021-22 में जीडीपी का 6.8 प्रतिशत रहने का अनुमान रखा गया है। इसे 2025-26 तक कम कर 4.5 प्रतिशत के स्तर पर लाने का लक्ष्य रखा गया है।

वित्तमंत्री ने कहा कि सरकार ने बजट को पारदर्शी बनाया है और कुछ भी ऐसा नहीं है, जिसे छिपाया गया है। उन्होंने कहा सरकार कितना कर्ज ले रही है, क्या और कहां खर्च कर रही है, यह हर कोई देख सकता है। सीतारमण ने कहा कि सरकार उन क्षेत्रों पर ज्यादा खर्च कर रही है, जिसका असर दूसरे संबंधित उद्योगों पर व्यापक पड़ता है। विकास वित्त संस्थान (डीएफआई) का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि बुनियादी ढांचा क्षेत्र को दीर्घकालीन वित्त पोषण उपलब्ध कराना डीएफआई का काम है लेकिन यह काम केवल एक डीएफआई का नहीं है, बल्कि यह निजी विकास वित्त संस्थानों के सामने आने का एक अवसर है।

इससे पहले पीएचडी उद्योग मंडल के अध्यक्ष संजय अग्रवाल ने कहा कि सरकार ने 2021-22 के बजट में आर्थिक वृद्धि और विकास को नई ऊर्जा देने के लिए जिस तरह से सधी हुई राजकोष नीति अपनाई है वह सरहानीय है। उन्होंने कहा कि इस नीति से बुनियादी ढांचा विकास की परियोजनओं में निवेश बढेगा और जैसा कि वित्त मंत्री ने कहा है, इससे आर्थिक गतिविधियों में तेजी आएगी, मांग बढ़ेगी और आर्थिक वृद्धि को बल मिलेगा।

दिल्ली और मुंबई रेलवे स्टेशनों के पुनर्विकास के लिए दिग्गज उद्योगपति अडानी ने डाली निविदा

नई दिल्ली। देश के दिग्गज उद्योगपति गौतम अडानी की अगुवाई वाला अडानी ग्रुप इन्फ्रास्ट्रक्चर के क्षेत्र में तेजी से अपना विस्तार कर रहा है। अडानी समूह ने एयरपोर्ट सेक्टर में विशेष रूप से अपने पैर पसारे हैं। मंगलुरु, लखनऊ और अहमदाबाद के बाद अब मुंबई एयरपोर्ट की कमान भी उनकी कंपनी अडानी एयरपोर्ट होल्डिंग्स लिमिटेड (एएएचएल) के हाथों में आ गई है। कंपनी ने मुंबई इंटरनेशनल एयरपोर्ट लिमिटेड (एमआईएएल) में 23.5 फीसदी हिस्सेदारी खरीद ली है। साथ ही वह जीवीके ग्रुप (जीवीके ग्रुप) की 50.5 फीसदी हिस्सेदारी भी खरीद रही है।

इस तरह एएएचएल की मुंबई इंटरनेशनल एयरपोर्ट लिमिटेड में हिस्सेदारी 74 फीसदी हो जाएगी। इसके साथ ही उसे नवी मुंबई में एयरपोर्ट विकसित करने का अधिकार मिल जाएगा। अडानी ग्रुप ने पिछले साल के आखिर में एएआई से मंगलुरु, लखनऊ और अहमदाबाद एयरपोर्ट्स का अधिग्रहण किया था।

इस साल जुलाई तक वह जयपुर, गुवाहाटी और तिरुवनंतपुरम एयरपोर्ट का भी अधिग्रहण कर लेगी। अडानी ग्रुप इन 6 एयरपोर्ट्स का विकास, प्रबंधन और परिचालन अगले 50 साल तक करेगा। इस तरह से अडानी ग्रुप एयरपोर्ट्स की संख्या के लिहाज से देश में सबसे बड़ा एयरपोर्ट ऑपरेटर बनने जा रहा है। हालांकि यात्री संख्या के लिहाज से जीएमआर देश का सबसे बड़ा एयरपोर्ट ऑपरेटर है। उसके पास दिल्ली का आईजीआईए, हैदराबाद और गोवा का मोपा एयरपोर्ट है।

एयरपोर्ट्स के बाद अब अडानी का जोर रेलवे स्टेशनों पर है। अडानी समूह की कंपनी जीएमआर एंटरप्राइजेज सहित 10 फर्मों ने 1,642 करोड़ रुपए की परियोजना के तहत छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस (सीएसएमटी) रेलवे स्टेशन के रिडेवलपमेंट के लिए बोली लगाई है।

रुपया मजबूत हुआ

मुंबई। अमेरिकी डॉलर के मुकाबले मंगलवार को भारतीय रुपया मजबूत हुआ है। सप्ताह के दूसरे ही कारोबारी दिन घरेलू शेयर बाजार में आये उछाल और विदेशी कोषों की लगातार आवक से रुपया आठ पैसे बढ़कर 72.89 के स्तर पर पहुंच गया। वहीं अंतरबैंक विदेशी मुद्रा बाजार में स्थानीय इकाई अमेरिकी डॉलर के मुकाबले रुपया 72.87 पर खुला और शुरूआती सौदों में थोड़ी गिरावट के साथ ही 72.89 के स्तर पर पहुंच गया, जो पिछले बंद भाव के मुकाबले आठ पैसे की बढ़त को दिखाता है। रुपया पिछले सत्र में अमेरिकी डॉलर के मुकाबले चार पैसे नीचे आकर 72.97 पर बंद हुआ था। वहीं अमेरिकी डॉलर की स्थिति को दर्शाने वाला डॉलर सूचकांक 0.21 प्रतिशत घटकर 90.73 के स्तर पर आ गया।

संक्षिप्त समाचार

नई श्रम-संहिता लागू करने के लिए नियमों को इस सप्ताह अंतिम रूप दे सकता है श्रम मंत्रालय

नई दिल्ली। श्रम मंत्रालय चार नई श्रम संहिताओं को लागू करने के लिए उनसे संबंधित नियमों को इस सप्ताह अंतिम रूप दे सकता है। इन संहिताओं को लागू करने से देश के श्रम बाजार में सुधरे नियमों-अधिनियमों का नया दौर शुरू हो जाएगा। इसके अलावा मंत्रालय असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों के पंजीकरण एवं कल्याण के लिए एक इंटरनेट-पोर्टल तैयार कर रहा है। अधिकारियों के अनुसार यह पोर्टल जून तक तैयार हो सकता है। इस पोर्टल पर असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों के पंजीकरण और उनके लिए अन्य सुविधाएं प्रदान की जा सकती हैं। इनमें ठेके या मुक्तरूप से काम करने वाले श्रमिकों और ह्यप्लेटफार्म' श्रमिकों जैसे कर्मियों का पंजीकरण किया जाएगा। वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण ने अपने भाषण में इस प्रकार के वेब-पोर्टल की स्थापना का उल्लेख किया था। श्रम सचिव अपूर्व चंद्र ने कहा नियम बनाए जा रहे हैं और उम्मीद है कि इस काम को आने वाले सप्ताह में पूरा कर लिया जाएगा। इस संबंध में सभी संबद्ध पक्षों से विचार-विमर्श किया गया है। उन्होंने कहा कि यह मंत्रालय जल्दी ही इस स्थिति में होगा कि चारो नई संहिताओं को लागू किया जा सके। इनमें वेतन/मजदूरी संहिता, औद्योगिक संबंधों पर संहिता, काम विशेष से जुड़ी सुरक्षा, स्वास्थ्य एवं कार्यस्थल की दशाओं (ओएसएच) पर संहिता, तथा सामाजिक सुरक्षा संहिता शामिल हैं। श्रम मंत्रालय ने चारों संख्याओं को अप्रैल से लागू करने की योजना बनाई है। मंत्रालय ने श्रम कानूनों में सुधार के लिए कुल 44 तरह के पुराने श्रम कानूनों को चार वृहद संहिताओं में समाहित किया है और उन्हें लागू करने की प्रक्रिया के आखिरी चरण में है।

एशियाई और अमेरिकी बाजार ऊपर आये

टोक्यो। एशियाई बाजारों में भी मंगलवार को तेजी का माहाल रहा। यहां सभी क्षेत्रों में बढ़त से सभी इंडेक्स हरे निशान पर कारोबार कर रहे हैं। इसमें निक्केई 225, स्ट्रेट टाइम्स और हैंग सेंग भी शामिल हैं। वहीं ताइवान इंडेक्स, कोरिया का कोस्पी और शंघाई कम्पोजिट में भी अच्छा कारोबार हो रहा है। वहीं अमेरिकी बाजार भी ऊपर आया है। राष्ट्रपति जो बाइडन की सरकार के प्रोत्साहन पैकेज से निवेशकों को अर्थव्यवस्था तेजी से बेहतर होने की उम्मीदें हैं। डाओ जोंस इंडस्ट्रियल एवरेज 237 अंक करीब 0.76 फीसदी ऊपरा आकर 31,385 बंद बंद हुआ। वहीं एसएंडपी 500 इंडेक्स में भी 0.74 फीसदी की बढ़त देखने को मिली और यह 3,915 अंक पर बंद हुआ। इसके साथ ही नैस्डेक कम्पोजिट भी 131 अंक की बढ़त के साथ ही 13,987 के स्तर पर पहुंच गया। मंगलवार को अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल का भाव बीते 13 महीने के शीर्ष स्त पर पहुंच गया है। प्रमुख उत्पादक देशों ने आपूर्ति में कटौती करने का फैसला किया है। उससे ये कीमतें बढ़ी हैं। इसके अलावा ईंधन बाजार की मांग में सुधार के संकेतों से भी कच्चे तेल का भाव बढ़ा है। ब्रेंट क्रूड का वायदा भाव 0.5 फीसदी चढ़कर 60.85 डॉलर प्रति बैरल पर कारोबार करते नजर आया।

शेयर बाजार तेजी के साथ खुला

मुंबई। मुम्बई शेयर बाजार मंगलवार को तेजी के साथ खुला है। दुनिया भर के बाजारों से मिले सकारात्मक संकेतों के साथ ही विदेशी कोषों की आवक से बाजार में यह उछाल आया है। इससे सेंसेक्स में शुरूआती कारोबार के दौरान 200 अंकों से अधिक की बढ़त दर्ज की गयी। इसके साथ ही इंफोसिस, रिलायंस इंडस्ट्रीज और एचसीएल टेक जैसे बड़े शेयरों से भी बाजार को सहारा मिला। शुरूआती कारोबार में बीएसई सेंसेक्स 233.30 अंक करीब 0.45 फीसदी की बढ़त के साथ ही 51,582.07 पर कारोबार कर रहा था। वहीं इसी प्रकार एनएसई निफ्टी 70.10 अंक तकरीबन 0.46 फीसदी बढ़कर सर्वकालिक उच्च स्तर 15,185.90 पर पहुंच गया। सेंसेक्स के शेयरों में सबसे अधिक दो फीसदी की बढ़त एचसीएल टेक में आई। इसके अलावा इंफोसिस, टाइटन, एशियन पेंट्स, ओएनजीसी, रिलायंस इंडस्ट्रीज और टेक महिंद्रा के शेयर ऊपर आये। वहीं दूसरी ओर एसबीआई, बजाज फिनसर्व, बजाज फाइनेंस, एक्सिस बैंक और इंडसइंड बैंक नुकसान के साथ ही लाल निशान पर आ गये। इससे पहले सोमवार को सेंसेक्स 617.14 अंक करीब 1.22 फीसदी बढ़कर 51,348.77 पर जबकि निफ्टी 191.55 अंक तकरीबन 1.28 फीसदी बढ़कर 15,115.80 पर बंद हुआ था। शेयर बाजार के अस्थाई आंकड़ों के मुताबिक विदेशी पोर्टफोलियो निवेशक (एफपीआई) ने सोमवार को सकल आधार पर 1,876.60 करोड़ रुपये के शेयर खरीदे थे इससे भी बाजार को सहारा मिला था।

रियलमी के नए फोन का हो रहा इंटरनली टेस्ट

नई दिल्ली। गीकबेंच लिस्टिंग से पता चलता है कि रियलमी कंपनी अपने नए फोन को लॉन्च करने से पहले इंटरनली टेस्ट कर रही है। रियलमी का यह फोन 2.0जीएचझेड की बेस फ्रीक्वेंसी वाले मीडियाटेक ऑक्टा-कोर प्रोसेसर के साथ आएगा। रियलमी के इस नए फोन को बेंचमार्किंग वेबसाइट गीकबेंच के डेटाबेस में देखा गया है। इस हैंडसेट का मॉडल नंबर आरएमएक्स3085 है। हैंडसेट को इससे पहले मलेशिया की टीकेडीएन और यूरोप की ईईसी सर्टिफिकेशन वेबसाइट पर भी देखा जा चुका है। एमटी6785ची/सीडी के साथ जिस एसओसी का जिक्र किया गया है वह मीडियाटेक हीलियो जी95 लग रहा है। एसओसी 8जीबी रैम वाला है और यह ऐंड्रॉयड 11 ओएस पर काम करता है।

चार पहिया वाहन की भारी डिमांड, 5 लाख से अधिक उपभोक्ताओं को कई महीनों से डिलीवरी का इंतजार

मुंबई। कोरोनाकाल के बाद भारत में चार पहिया वाहनों उसमें भी एसयूवी की डिमांड चरम पर पहुंच गई है और ऑटो कंपनियों को इस मांग को पूरा करने के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है। करीब 5 लाख कस्टमर्स कई महीनों से गाड़ी की डिलीवरी का इंतजार कर रहे हैं। कुछ अहम इनपुट्स की कमी से ऑटो कंपनियों का प्रोडक्शन प्रभावित हुआ है। स्टील और सेमीकंडक्टर्स की कमी के कारण ऑटो कंपनियों की मुश्किलें बढ़ी हैं। साथ ही कलपुर्जों के आयात के लिए कंटेनर्स भी पर्याप्त संख्या में नहीं हैं। दिसंबर में डीलरों के पास इनवेंट्री बहुत कम हो गई थी लेकिन अब इसमें कुछ सुधार हुआ है। मगर यह अब भी मांग को पूरा करने के लिए काफी नहीं है। यही वजह है कि कई गाड़ियों के लिए वेटिंग पीरियड नौ महीने तक चला गया है। महिंद्रा की थार के लिए वेटिंग पीरियड 9 महीने और हुंडई क्रेटा के लिए 7 महीने है। इसी तरह मारुति अर्टिगा और टाटा अल्ट्रॉस की डिलीवरी के ही ग्राहकों को 6 से 8 महीने इंतजार करना पड़ रहा है जबकि हुंडई आई20 और किआ सोनट के लिए वेटिंग पीरियड 5 महीने है। कई अन्य पॉपुलर मॉडल के लिए यह 2 से 6 महीने है।

जानकारों के मुताबिक देश की सबसे बड़ी ऑटो कंपनी मारुति सुजुकी के पास 2.15 लाख बुकिंग है। इसी तरह हुंडई के पास 1 लाख और किया मोटर्स के पास 75000 यूनिट्स की बुकिंग है। टाटा मोटर्स, महिंद्रा एंड महिंद्रा और निसान मोटर के पास भी 30 हजार से 50 हजार का बैकलॉग है। डीलर्स के पास पिछले करीब 6 महीने से एक महीने से भी कम का स्टॉक है। जनवरी के अंत तक इनवेंट्री बढ़कर 1.5 लाख यूनिट पहुंच गई जो 15 दिन की रीटेल सेल के लिए पर्याप्त है। दिसंबर के अंत में डीलर्स के पास 70 हजार यूनिट्स की इनवेंट्री थी। मारुति सुजुकी के दिसंबर के अंत में मात्र 21000 यूनिट्स की इनवेंट्री थी।

देश में पैसेंजर वीकल्स की कुल बिक्री में मारुति सुजुकी की हिस्सेदारी करीब 50 फीसदी है। कंपनी के एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर शशांक श्रीवास्तव ने ईटी से कहा कि त्योहारी सीजन के बाद भी मांग मजबूत बनी हुई है और उम्मीद है कि इस वित्त वर्ष की चौथी तिमाही में यह स्थिति बनी रहेगी।

रईस कारोबारी मस्क की एक चाल से बिटकॉइन की कीमतों में भारी उछाल

न्यूयार्क। दुनिया के धनाढ्यों में शुमार एलन मस्क की इलेक्ट्रिक कार कंपनी टेस्ला पॉपुलर क्रिप्टोकरेंसी बिटकॉइन में 1.5 अरब डॉलर का निवेश किया है। इस खबर के फैलते ही बिटकॉइन की कीमतें अपने अब तक के उच्चतम स्तर (ऑल टाइम हाई) पर पहुंच गई हैं। टेस्ला ने सोमवार को इसकी घोषणा की और उसके बाद बिटकॉइन की कीमत 15 फीसदी की तेजी के साथ 44,141 डॉलर पर पहुंच गई। यह पहला मौका है जब बिटकॉइन की कीमतें 44,000 डॉलर के पार पहुंची हैं। भारतीय मुद्रा के हिसाब से यह 32 लाख रुपये से भी ज्यादा हो गई है। इस निवेश के साथ टेस्ला विवादास्पद क्रिप्टोकरेंसी बिटकॉइन को सपोर्ट करने वाली अब तक की सबसे बड़ी कंपनी बन गई है। इसके साथ ही टेस्ला ने कहा है कि वह अपने प्रोडक्ट्स यानी कारों के लिए डिजिटल कॉइन में पेमेंट्स लेना शुरू करेगी। बिटकॉइन के लिए पिछला साल बेहतरीन रहा है। 2020 में इसकी कीमत 4 गुना बढ़ी थी।

ट्विटर प्रोफाइल पेज पर ऐड किया था हैशटैग बिटकॉइन टैग पिछले दिनों टेस्ला

के चीफ एग्जिक्यूटिव एलन मस्क ने अपने ट्विटर प्रोफाइल पेज पर हैशटैग बिटकॉइन टैग भी ऐड किया था। टेस्ला का यह निवेश, क्रिप्टोकरेंसी बिटकॉइन के लिए एक बड़ा सपोर्ट है। मनी लॉन्ड्रिंग और फ्रॉड में बिटकॉइन के बढ़ते इस्तेमाल के कारण पॉलिसीमेकर्स लगातार इसकी आलोचना करते आए हैं। लंदन में नेक्सो के मैनेजिंग पार्टनर और को-फाउंडर एंटोनी ट्रेन्चेव का कहना है कि उन्हें उम्मीद है कि साल 2022 के आखिर तक एसएंडपी 500 की कम से कम 10 फीसदी कंपनियों का बिटकॉइन में निवेश होगा। मस्क का महज एक ट्वीट शेयर बाजार में तहलका मचाने के लिए काफी है। हाल में उनके ट्वीट के दम पर कई कंपनियों के शेयरों की कीमतों में काफी तेजी आई है। मस्क अपनी बात कहने के लिए ट्विटर का ही सहारा लेते हैं और इस प्लेटफॉर्म पर उनके 4.45 करोड़ फॉलोअर्स हैं। उनके ट्वीट के कारण गुरुवार को क्रिप्टोकरेंसी डोगीकॉइन की कीमत 50 फीसदी से अधिक उछल गई। यह पहला मौका नहीं है जब मस्क के ट्वीट से डोगीकॉइन की कीमत में तेजी आई है। इससे पहले 20 दिसंबर को भी उन्होंने वन वर्ल्ड : डोगी ट्वीट किया था और इसकी कीमत 20 फीसदी बढ़ गई थी। इतना ही नहीं यह क्रिप्टोकरेंसी ट्विटर पर ट्रेंड होने लगी थी। पहले मस्क बिटकॉइन के पक्ष में नहीं थे लेकिन हाल में उन्होंने सोशल ऐप क्लबहाउस के साथ इंटरव्यू में कहा कि उन्हें 8 साल पहले ही यह डिजिटल करेंसी खरीद लेनी चाहिए थी। मस्क ने कहा, मुझे अब लगता है कि बिटकॉइन अच्छी चीज है। मैंने इसमें देरी कर दी है लेकिन मैं बिटकॉइन का सपोर्टर हूं। दक्षिण अफ्रीका में जन्मे और पेशे से इंजीनियर मस्क ने पिछले हफ्ते गेम्स कंपनी गेम्सटॉप के समर्थन में ट्वीट किया था। फिर क्या था कंपनी के शेयरों में 680 फीसदी से अधिक उछाल आई। इससे पहले कंपनी अपने वजूद को बचाने के लिए संघर्ष कर रही थी।

सैमसंग गैलेक्सी ए12 जल्द होगा लॉन्च

नई दिल्ली। साउथ कोरिया की कंपनी सैमसंग अपने नए बजट स्मार्टफोन गैलेक्सी ए12 को अगले सप्ताह लॉन्च करेगी। फोन में 5000 एमएएच बैटरी, वॉटरड्रॉप नॉच डिस्प्ले और चार रियर कैमरे के साथ और भी कई बेस्ट-इन-क्लास फीचर दिए गए हैं। कंपनी इस फोन को 15 हजार रुपये से कम की कीमत में लॉन्च कर सकती है। कंपनी ने इस फोन को पिछले साल नवंबर में यूरोप में लॉन्च किया था।

इस फोन में 720ग1600 पिक्सल रेजॉलूशन के साथ 6.5 इंच का एचडी+ एलसीडी पैनल दिया गया है। डिस्प्ले का आस्पेक्ट रेशियो 20:9 है और यह वॉटरड्रॉप डिजाइन के साथ आता है। यह फोन 6जीबी तक की रैम और 128जीबी तक के इंटरनल स्टोरेज ऑप्शन में उपलब्ध होगा। इस फोन में प्रोसेसर के तौर पर मीडियाटेक हीलियो पी35 चिपसेट दिया गया है। बैटरी की बात करें तो इसमें 5000 एमएएच की बैटरी मिलेगी जो 15 वॉट की फास्ट चार्जिंग को सपॉर्ट करेगी। कनेक्टिविटी के लिए इस फोन में वाई-फाई, ब्लूटूथ 5.0, जीपीएस, हेडफोन जैक और यूएसबी टाइप-सी पोर्ट जैसे फीचर मिलेंगे। फोटोग्राफी के लिए सैमसंग के इस फोन में चार रियर कैमरे मिलेंगे।

आर्थिक मोर्चे पर भगोड़े विजय माल्या को राहत, लंदन कोर्ट ने खर्चे के लिए पैसे लेने की दी मंजूरी

लंदन। भारत में बैंकों को करोड़ों का चूना लगाकर विदेश भागने वाले शराब व्यवसायी विजय माल्या को आर्थिक मोर्चे पर लंदन हाई कोर्ट ने थोड़ी राहत दे दी है। अदालत ने अपने पास जमा रकम में से माल्या को रहने और कानूनी खर्च को पूरा करने के लिए करीब 11 लाख पाउंड निकालने की अनुमति दी है। दिवाला एवं कंपनी मामलों की उप-अदालत के जज निगेल बर्नेट ने कोर्ट फंड ऑफिस से पैसा निकालने के संबंध में सुनवाई की अध्यक्षता की। यह सुनवाई लोन नहीं चुकाने को लेकर भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) की अगुवाई में भारतीय बैंकों की तरफ से की जा रही दिवाला संबंधी कार्रवाई के तहत हुई। इस आदेश के जरिए माल्या को अपने रहने और दिवाला याचिका के विरोध के संबंध में कानूनी खर्च को पूरा करने के लिए अदालत से पैसा निकालने की अनुमति मिल गई है। किंगफिशर एयरलाइंस का पूर्व प्रमुख माल्या जमानत पर ब्रिटेन में है और वह धोखाधड़ी और धनशोधन के आरोपों का सामना करने के लिए भारत प्रत्यर्पित किए जाने की एक अन्य कानूनी लड़ाई हार चुका है।

ध्यान रहे कि माल्या पर 17 भारतीय बैंकों का 9,000 करोड़ रुपये से ज्यादा का बकाया है। वह 2 मार्च, 2016 को भारत छोड़कर ब्रिटेन भाग गया था। भारतीय एजेंसियों ने यूके की कोर्ट से माल्या के प्रत्यर्पण की अपील की और लंबी लड़ाई के बाद यूके की अदालत ने 14 मई को माल्या के भारत प्रत्यर्पण की अपील पर मुहर लगा दी थी। हालांकि, कानूनी दांव-पेचों के चलते उसे अब तक भारत नहीं लाया जा सका है। भारत स्थित ब्रिटेन उच्चायोग ने बताया कि माल्या के प्रत्यर्पण से पहले कुछ कानूनी जटिलताएं हैं और उसके समाधान की जरूरत है। ब्रिटेन के कानून के तहत जब तक सारे मामले नहीं सुलझ जाते हैं तब तक किसी का प्रत्यर्पण नहीं किया जा सकता है। उच्चायोग ने पिछले साल जून महीने में कहा था, ह्यहर गुप्त मामला है और हम इसके डिटेल में नहीं जाएंगे।

पेट्रोल-डीजल की कीमतें फिर बढ़ीं

नई दिल्ली। घरेलू बाजार में पेट्रोल डीजल की कीमतों में बदलाव आया है और ये बढ़कर रिकार्ड स्तर तक पहुंच गयी हैं। अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतों में आ रही तेजी से यह उछाल अया है। घरेलू बाजार में तेल कंपनियों ने मंगलवार को पेट्रोल-डीजल के दाम में बदलाव किया है। इससे दिल्ली में पेट्रोल-डीजल के दाम 35 पैसे बढ़ गए हैं। दिल्ली में पेट्रोल अब 87.30 रुपये प्रति लीटर और डीजल 77.48 रुपये प्रति लीटर हो गया है। ये अब तक की सबसे ज्यादा कीमत है। वहीं इसी प्रकार मुंबई में भी पेट्रोल-डीजल के दाम ऐतिहासिक रिकॉर्ड स्तर तब बढ़े हैं। दिल्ली में 30 जुलाई को डीजल के दाम 81.94 रुपये प्रति लीटर पहुंचे। गौरतलब है कि करीब एक महीने तक स्थिर रहने के बाद जनवरी में पेट्रोल-डीजल के दाम फिर से बढ़ना शुरू हो गए। नए साल से अब तक 13 किस्तों में पेट्रोल-डीजल के दाम ऊपर आये हैं। पिछले एक साल में पेट्रोल 20 रुपये से अधिक और डीजल 15 रुपये से ऊपर महंगा हो गया है।

दिल्ली में 9 फरवरी को पेट्रोल कल के भाव में 86.95 रुपये प्रति लीटर से बढ़कर 87.30 यानी 35 पैसे की बढ़ोतरी हुई है।

इंडियाफर्स्ट लाईफ ने लॉंग गारंटीड इंकम प्लान लॉन्च किया

» मदरलैंड संवाददाता

चंडीगढ़। बैंक ऑफ बड़ोदा एवं यूनियन बैंक ऑफ इंडिया द्वारा प्रमोटेड, इंडियाफर्स्ट लाईफ इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड (इंडियाफर्स्ट लाईफ) ने आज इंडियाफर्स्ट लाईफ लॉंग गारंटीड इंकम प्लान के लॉन्च की घोषणा की। यह विशिष्ट प्लान वित्तीय स्थिरता सुनिश्चित करने और परिवार को जीवन की अनिश्चितताओं से सुरक्षा देने के लिए गारंटीड आय प्रदान करने के लिए डिजाईन किया गया है। सरल और गारंटीड समाधान प्रदान करने के उद्देश्य से यह ग्राहक केंद्रित सुरक्षा प्लान स्थिर रिटर्न देता है, ताकि जोखिम को कम से कम कर वित्तीय उद्देश्य पूरे हो सकें। रुषभ गांधी, डिप्टी सीईओ, इंडियाफर्स्ट लाईफ इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड ने कहा कि ऐसा उत्पाद खरीदना सदैव बहुत रोमांचक होता है, जो आजीवन की गारंटी देता हो।

यह एश्योर्ड व्यक्ति को 99 वर्ष की आयु तक टैक्स-फ्री आय की गारंटी देता है। यह मल्टी-जनरेशन प्लान 59 वर्ष के लंबे समय तक गारंटीड रिटर्न देता है, ताकि आप अपनी व अपने प्रियजनों की देखभाल कर सकें।

पुरुषोत्तम, चीफ जनरल मैनेजर-रिटेल लायबिलिटीज, वैल्थ मैनेजमेंट सर्विसेस, मार्केटिंग, एनआरआई बिजेस एवं कैपिटल मार्केट डिवीज, बैंक ऑफ बड़ोदा ने कहा कि लाईफ लॉंग गारंटीड इंकम प्लान ऐसा उत्पाद है, जो आजीवन एवं उसके बाद भी टैक्स-फ्री गारंटीड नियमित आय प्रदान करता है। यह प्लान अनेक सर्वश्रेष्ठ सुविधाएं प्रदान करता है, जो दीर्घकाल तक ग्राहकों की जरूरतों को पूरा करती हैं।

बैंक ग्राहकों की शिकायतों का फिगर 57 फीसदी से बढ़कर 3 लाख पर पहुंचा

मुंबई। बैंकों की शीर्ष निगरानी संस्था भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने कहा कि 30 जून, 2020 को समाप्त वर्ष में बैंक सेवाओं को लेकर शिकायतें 57 प्रतिशत उछलकर 3.08 लाख पहुंच गयी। ओम्बुड्समैन (लोक-प्रहरी) योजना पर अपनी सालाना रिपोर्ट में केंद्रीय बैंक ने कहा कि 20 प्रतिशत से अधिक शिकायतें एटीएम या डेबिट कार्ड से जुड़ी हैं। उसके बाद 13.38 प्रतिशत के साथ मोबाइल या इलेक्ट्रॉनिक बैंकिंग का स्थान हैं।

निष्पक्ष आचरण संहित (एफपीसी) का अनुपालन नहीं करना तीसरे स्थान पर है।

एवॉन इंडिया ने इंडियन कैंसर सोसायटी के साथ साझेदारी की

» मदरलैंड संवाददाता

चंडीगढ़ : दुनिया में महिलाओं को होने वाले स्तन कैंसर के बारे में जागरुकता बढ़ाने के लिए एवॉन इंडिया ने इंडियन कैंसर सोसायटी के साथ साझेदारी की है। दुनिया में स्तन कैंसर के खिलाफ लड़ाई में एवॉन आधुनिक शोध, उपकरण एवं शैक्षिक सामग्री की व्यवस्था कर रहा है।स्तन कैंसर का दाग कम करने और जागरुकता बढ़ाने के लिए एवॉन इंडियन कैंसर सोसायटी के साथ सोशल मीडिया, जैसे वेबिनार, टॉक शो आदि अनेक माध्यमोंसे लोगों व समुदायों तक जा रहा है। इन प्रयासों द्वारा उन महिलाओं के बीच सर्वाईवल एवं उम्मीद के संदेश का प्रसार किया जाएगा, जो स्तन कैंसर से पीड़ित हैं और समय पर पहचान, स्तन कैंसर को समय पर पहचानने के लिए नियमित तौर पर जाँच का महत्व समझाया जाएगा। इसमें महिलाओं को प्रशिक्षणों द्वारा शिक्षा एवं उच्च गुणवत्ता की कम लागत वाली जाँच सुविधाएं प्रस्तुत की जाएंगी। स्निग्धा सुमन, मार्केटिंग डायरेक्टर, एवॉन इंडिया ने कहा, ह्यहायह साल सबसे मुश्किल और चुनौतीपूर्ण रहा है। एवॉन में हम जानते हैं कि एक दूसरे के लिए, खासकर स्तन कैंसर के सवाईवर्स के लिए खड़े होना कितना जरूरी है। यह वह नाजुक समुदाय है, जिसे गुणवत्तायुक्त स्वास्थ्य सेवाएं एवं अग्रिम पंक्ति में काम कर रहे कर्मियों की उपलब्धता के मामले में असमानता का सामना करना पड़ सकता है। इंडियन कैंसर सोसायटी के साथ मिलकर ।

पोस्टपेड यूजर्स के लिए वीआई का स्पेशल ऑफर

नई दिल्ली। दूरसंचार क्षेत्र की निजी कंपनी वोडाफोन-आइडिया (वीआई) प्रीपेड के साथ पोस्टपेड यूजर्स पर भी खास ध्यान दे रही है। कंपनी अपने पोस्टपेड यूजर्स के लिए एक स्पेशल ऑफर लेकर आई है। ऑफर के तहत ग्राहकों को 399 रुपये वाले सबसे सस्ते पोस्टपेड प्लान के साथ 6 महीनों के लिए 150 जीबी मुफ्त डेटा दिया जा रहा है। कंपनी ने इसे एंटरटेनमेंट पोस्टपेड प्लान नाम रखा है। यह यूजर्स को किफायती दाम में मिलने वाले शानदार पोस्टपेड प्लान्स में से एक है। प्लान में आमतौर पर हर महीने 40 जीबी डेटा, सभी नेटवर्क पर अनलिमिटेड कॉलिंग, और रोज 100 एसएमएस मिलते हैं। हालांकि एक रिपोर्ट के मुताबिक, लिमिटेड टाइम ऑफर के तहत कंपनी फिलहाल इस प्लान के साथ 150जीबी अतिरिक्त डेटा ऑफर कर रही है। मुफ्त डेटा का इस्तेमाल 6 महीनों के भीतर करना होगा। प्लान के साथ यूं तो 200जीबी डेटा रोलओवर सुविधा मिलती है, लेकिन मुफ्त डेटा इस सुविधा में शामिल नहीं किया जाएगा। यानी आप 6 महीने के भीतर ही इस डेटा का इस्तेमाल कर पाएंगे।

बता दें कि कंपनी ने हाल ही में 598 रुपये और 699 रुपये वाले फैमिली पोस्टपेड की कीमत में बढ़ोतरी की है। वोडाफोन-आइडिया ने 598 रुपये के प्लान को 51 रुपये महंगा करते हुए 649 रुपये कर दिया है। इसी प्रकार 699 रुपये वाले प्लान कीमत 799 रुपये हो गई है।

इंग्लैंड ने पहले टेस्ट में भारतीय टीम को 227 रनों से हराया

सीरीज में 1-0 से आगे, मैन ऑफ द मैच जो रुट

चेन्नई। जेम्स एंडरसन और जैक लीच की शानदार गेंदबाजी से मेहमान टीम इंग्लैंड ने यहां पहले ही क्रिकेट टेस्ट मैच में टीम इंडिया को 227 रनों से हराकर सीरीज में 1-0 की बढ़त हासिल कर ली है। इस मैच में पांचवें और अंतिम दिन भारतीय टीम को जीत के लिए 381 रन बनाने थे पर पूरी टीम 192 रनों पर ही आउट हो गयी। कप्तान विराट कोहली ने सबसे अधिक 72 रन बनाये जबकि पहली पारी में शानदार प्रदर्शन करने वाले ऋषभ पंत भी इस बार टिक नहीं पाये और 11 रनों पर ही पेवेलियन लौट गये। भारतीय टीम में केवल पांच बल्लेबाज ही दो अंकों तक पहुंच पाये। युवा शुभमन गिल ने शानदार अर्धशतक लगाया पर चेतेश्वर पुजार 15 रन बही बना पाये। भारतीय टीम के बल्लेबाज इंग्लैंड के तेज गेंदबाजों एंडरसन और लीच का सामना नहीं कर पाये और दूसरे सत्र में ही भारतीय टीम सिमट गयी। कप्तान विराट एक छोर पर संघर्ष करते रहे पर किसी अन्य खिलाड़ी ने उनका साथ नहीं दिया।

भारतीय टीम ने सुबह एक विकेट पर 39 रनों से आगे खेलना शुरू किया। युवा सलामी बल्लेबाज शुभमन 15 तथा पुजारा ने 12 रन से अपनी पारी को आगे बढ़ाया। पुजारा और

गिल के बीच दूसरे विकेट के लिए अच्छी साझेदारी चल रही थी पर लीच ने बेन स्टोक्स के हाथों पुजारा को कैच कराकर यह साझेदारी तोड़ दी। पुजारा ने 38 गेंदों में एक चौके की मदद से 15 रन बनाए। शुभमन ने इसके बाद विराट के साथ पारी को आगे बढ़ाया और शुभमन ने अपने करियर की तीसरा अर्धशतक पूरा किया। शुभमन अर्धशतक पूरा करने के बाद ज्यादा देर नहीं खेल सके और एंडरसन की गेंद पर आउट हो गए। शुभमन ने 83 गेंदों में सात चौकों और एक छक्के की मदद से 50 रन बनाए। वहीं नए बल्लेबाज उपकप्तान अजिक्य रहाणे तीन गेंद खेल कर ही खाता खोले बिना एंडरसन की गेंद पर बोल्ड हो गए हैं। वहीं पहली पारी में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले ऋषभ ने इस बार निराश किया वह 11 रन बनाकर एंडरसन की गेंद पर रुट के हाथों कैच हो गये। इसके बाद डॉम बेस ने वॉशिंगटन सुंदर को बटलर के हाथों कैच कराकर आउट किया और भारत को छठा झटका दिया। विराट और अश्विन के बीच 64 रन की साझेदारी हुई पर लीच ने इस साझेदारी को समाप्त कर भारत की रही सही उम्मीम भी तोड़ दी। उनकी एक गेंद को अश्विन ने कट करने का प्रयास किया लेकिन गेंद दस्तानों से लगकर विकेटकीपर जोस बटलर के हाथों में गई। अश्विन ने नौ रन बनाए।

विराट ने 72 रन की पारी खेली। उन्हें स्टोक्स ने बोल्ड किया। कोहली ने अपनी 104 गेंद की पारी में 9 चौके लगाए। इसके बाद शाहबाज नदीम और जसप्रीत बुमराह के विकेट लेने के साथ ही इंग्लैड ने टेस्ट जीत लिया। पहली पारी में शानदार दोहरा शतक लगाने वाले इंग्लैंड के कप्तान जो रुट को मैन ऑफ द मैच का इनाम दिया गया।

दबाव में कप्तानी कर रहे विराट: डेविड लॉयड

लंदन। इंग्लैंड के पूर्व क्रिकेटर डेविड लॉयड ने कहा कि भारतीय टीम के कप्तान विराट कोहली ऑस्ट्रेलिया में अजिंक्य रहाणे को मिली जीत के बाद से ही दबाव में हैं। इसी के साथ ही उन्होंने कहा कि चौथे दिन ज्यादा अपील करने के कारण कोहली को फटकार का भी सामना करना पड़ा।

लॉयड ने कहा, 'इस पर भारत में किसी का ध्यान नहीं गया कि रहाणे की कप्तानी में टीम ने ऑस्ट्रेलिया में शानदार प्रदर्शन किया और तभी से विराट दबाव महसूस कर रहे हैं। इसी कारण, 'वह चौथे दिन अत्यधिक अपील कर रहे थे और मिड सेशल में भी उन्होंने 2 हैरान करने वाली समीक्षा करने के लिए कहा। कमेंटेटर ने कहा कि वह ऐसा कर अपनी टीम का जोश बढ़ाने का प्रयास कर रहे थे हालांकि मुझे लगता है कि वह अंपायरों को प्रभावित करने की कोशिश कर रहे थे। विराट ऑस्ट्रेलिया दौरे में पहले टेस्ट के बाद ही स्वदेश लौट गये थे इसके बाद भारतीय टीम ने रहाणे की कप्तानी ने शानदार वापसी करते हुए सीरीज जीती थी। वहीं इसके बाद से विराट की कप्तानी पर भी सवाल उठने लगे थे और कहा जाने लगा था कि रहाणे को ही कप्तानी दी जानी चाहिये।

20 फरवरी से शुरू होगा विजय हजारे टूनार्मेंट

नई दिल्ली। भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) के अनुसार विजय हजारे ट्राफी एकदिवसीय क्रिकेट टूनार्मेंट की शुरूआत 20 फरवरी से होगी और ये मुकाबले 14 मार्च तक चलेंगे। इसे जैव सुरक्षित (बायो बबल) के माहौल में पांच शहरों के साथ ही तमिलनाडु में खेला जाएगा। इस टूनार्मेंट के लिए खिलाड़ियों को 13 फरवरी को बायो बबल में आना होगा जिसके बाद उन्हें तीन बार कोविड-19 की जांच से गुजरना होगा। बीसीसीआई सचिव जय शाह ने कार्यक्रम की घोषणा की जिसमें में छह स्थानों में से पांच का जिक्र है। ये पांच शहर सूरत, इंदौर, बेंगलुरु, कोलकाता, जयपुर है जबकि प्लेट ग्रुप की आठ टीमें तमिलनाडु के विभिन्न मैदानों में अपने मैच खेलेंगी।

बीसीसीआई प्रोटोकॉल के अनुसार खिलाड़ियों को अपने बायो-बबल में शामिल होने से पहले तीन आरटी-पीसीआर परीक्षण से गुजरना होगा। उन्हें सात मार्च से होने वाले नॉक-आउट चरणों (प्री क्वार्टर फाइनल) के शुरू होने से पहले भी ऐसा करना होगा। बीसीसीआई की अधिसूचना के अनुसार, एलीट ग्रुप ए में गुजरात, चंडीगढ़, हैदराबाद, त्रिपुरा, बड़ौदा, गोवा शामिल होंगे। इनके मैच सूरत में खेले जाएंगे। ग्रुप बी में तमिलनाडु, पंजाब, झारखंड, मध्य प्रदेश, विदर्भ, आंध्र प्रदेश शामिल हैं। इसके मैच इंदौर में खेले जाएंगे। ग्रुप सी के मैच बेंगलुरू में आयोजित किए जाएंगे, जिसमें मेजबान कर्नाटक, उत्तर प्रदेश, केरल, ओडिशा, रेलवे और बिहार छह टीमें होंगी। ग्रुप डी में दिल्ली, मुंबई, महाराष्ट्र, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान और पुडुचेरी की टीमें होंगी और इसके मैच जयपुर में निर्धारित हैं। ग्रुप ई के मैच कोलकाता में खेले जाएंगे जिसमें मेजबान बंगाल के साथ सेना, जम्मू और कश्मीर, सौराष्ट्र, हरियाणा और चंडीगढ़ की टीमें है।

संक्षिप्त समाचार

महिला फुटबॉल लीग 25 मार्च से शुरू होगी

नई दिल्ली। महिला फुटबॉल लीग 25 मार्च से शुरू होगी जबकि अप्रैल में कारपोरेट फुटसाल लीग का आयोजन होगा। नया 2021-22 सत्र जून में दिल्ली कप के साथ शुरू होगा जो नाकआउट प्रतियोगिता है और संघ से मान्यता प्राप्त सभी क्लब इस प्रतियोगिता में हिस्सा ले सकते हैं। वहीं 15 मार्च से सीनियर डिविजन लीग के साथ फुटबॉल प्रतियोगिताएं शुरू होंगी। फुटबॉल दिल्ली ने अपनी कार्यकारी समिति की बैठक में यह फैसला किया है। राष्ट्रीय राजधानी से राष्ट्रीय सेकेंड डिविजन लीग के लिए क्लबों को नामांकित करने की समय सीमा को पूरा करने के लिए संघ ने पिछले साल इसी दिन कोरोना वायरस महामारी के कारण अपनी सभी गतिविधियों को रोक दिया था। कार्यकारी समिति ने दिल्ली की राज्य टीम सब जूनियर लड़कियों (अंडर-15) के चयन ट्रायल 20 फरवरी से शुरू कराने का फैसला किया। इसके साथ राष्ट्रीय सब जूनियर चैंपियनशिप की तैयारी होगी जिसके जरिए भारत की अंडर-17 महिला टीम के लिए प्रतिभा की तलाश की जाएगी। इस टीम को अगले फीफा अंडर-17 महिला विश्व कप में खेलना है।

अब ड्रोन कैमरे का इस्तेमाल कर सकेगी बीसीसीआई

नई दिल्ली। नागरिक उड्डयन मंत्रालय और नागरिक उड्डयन महानिदेशालय (डीजीसीए) ने भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) को क्रिकेट मैचों की लाइव एरियल सिनेमेटोग्राफी के लिए ड्रोन कैमरे का इस्तेमाल करने की अनुमति दे दी है। नागरिक उड्डयन मंत्रालय के संयुक्त सचिव अंबर दुबे ने कहा है कि देश में ड्रोन पारिस्थितिक तंत्र तेजी से विकसित हो रहा है। कृषि, स्वास्थ्य देखभाल और आपदा प्रबंधन से लेकर खेल और मनोरंजन क्षेत्र में इसका उपयोग हो रहा रहा है। ऐसे में बीसीसीआई को क्रिकेट मैचों में लाइव एरियल सिनेमेटोग्राफी के लिए ड्रोन के इस्तेमाल को मंजूरी देना देश में ड्रोन के व्यावसायिक उपयोग को बढ़ावा देने के केंद्र सरकार के उद्देश्यों के अनुरूप ही है। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि बीसीसीआई को क्रिकेटों मैचों में ड्रोन का इस्तेमाल शुरू करने से पहले स्थानीय प्रशासन, रक्षा मंत्रालय, गृह मंत्रालय और एयरपोर्ट अथॉरिटी ऑफ इंडिया जैसे संस्थानों से मंजूरी लेनी होगी। दुबे ने कहा कि ड्रोन नियम 2021 को लेकर कानून मंत्रालय के साथ अंतिम चरण की चर्चा जारी है। इसे मार्च 2021 तक मंजूरी मिलने की उम्मीद है।

स्टोक्स जैसे बल्लेबाज हैं ऋषभ : नासिर हुसैन

लंदन। इंग्लैंड के पूर्व कप्तान नासिर हुसैन ने टीम इंडिया के युवा विकेटकीपर बल्लेबाज ऋषभ पंत की जमकर तारीफ करते हुए कहा कि उनका रवैया ऑलराउंडर बेन स्टोक्स जैसा रहता है। नासिर ने ऋषभ को गेम चेंजर बताया और कहा कि वह निडर होकर बल्लेबाजी करते हैं, वह खुद पर भरोसा करते हैं, तभी भारत ब्रिस्बेन टेस्ट जीत सका। यदि ऐसा ना होता तो भारत वह मैच कभी नहीं जीत सकता था। पिछले माह की ऋषभ ने गाबा में भारत को महानतम सीरीज जीत दिलाई और बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी पर टीम इंडिया का कब्जा बरकरार रहा। उन्होंने कहा, 'ऋषभ आउट होने के बारे में नहीं सोचते, वह आक्रमण के विकल्प देखते हैं और यह देखते हैं कि क्या हासिल किया जा सकता है। यदि वह ऐसे क्रिकेटर होते जो सोचता है कि कहीं वह सस्ते में आउट ना हो जाएं तो ऋषभ वो परिणाम हासिल नहीं कर पाते जो कर रहे हैं।' इस पूर्व कप्तान ने कहा, 'ऋषभ का एटीट्यूड स्टोक्स की तरह है, हालांकि अंतर क्या है? जब आप 91 रन बना चुके हों और शॉर्ट लेग या मिडविकेट पर कैच आउट हो जाएं। ऋषभ इंग्लैंड के खिलाफ जिस तरह के शॉट खेल रहे थे वे काफी रोमांच पैदा करने वाले थे।'

ऑस्ट्रेलियाई ओपन से बाहर हुए सुमित

मेलबर्न। भारत के सुमित नागल लिथुआनिया के रिकार्डस बेरांकिस के हाथों हार के साथ ही ऑस्ट्रेलियाई ओपन टेनिस टूनार्मेंट से बाहर हो गए हैं। नागल को पहले दौर में ही बेरांकिस के खिलाफ दो घंटे और 10 मिनट के अंदर ही 2-6 5-7 3-6 से हार का सामना करना पड़ा। नागल ने दूसरे सेट में लगातार चार गेम जीतकर वापसी करने की कोशिश की पर वह बेरांकिस के दबदबे को तोड़ नहीं पाये। नागल को बेरांकिस के खिलाफ रक्षात्मक रवैया अपनाना भारी पड़ा। नागल ने कुछ अवसरों पर विरोधी खिलाड़ी को कड़ी टक्कर दी पर बेरांकिस अंत में अहम अंकों को हासिल करने में सफल रहे। सुमित की हार के साथ ही एकल वर्ग में भारत की उम्मीदें समाप्त हो गयी हैं।

पहले सेट में 2-3 के स्कोर पर सर्विस करते हुए इस भारतीय खिलाड़ी ने फोरहैंड के जरिये बेरांकिस को तीन ब्रेक अंक दिए पर लिथुआनिया के खिलाड़ी ने फोरहैंड जीत के साथ ही 4-2 की बढ़त हासिल की। वहीं इससे पहले नागल को तीसरे गेम में 40-0 के स्कोर पर तीन ब्रेक अंक मिले पर वह इनका लाभ नहीं उठा पाए। वहीं दूसरे गेम में भी बेरांकिस का दबदबा बना रहा। उन्होंने दो बार नागल की सर्विस तोड़कर 4-0 की बढ़त बनाई। नागल ने इसके बाद दो बार बेरांकिस की सर्विस तोड़कर स्कोर 4-4 कर दिया। अहम मौकों पर अंक हासिल कर बेरांकिस जीत दर्ज करने में सफल रही। और अब सभी की नजरें युगल खिलाड़ियों रोहन बोपन्ना, दिविज शरण और अंकित रैना पर टिकी हैं।

वेस्टइंडीज के खिलाफ दूसरे टेस्ट से बाहर हुए शाकिब

ढ़ाका। बांग्लादेश क्रिकेट टीम के स्टार ऑल राउंडर शाकिब अल हसन वेस्टइंडीज के खिलाफ गुरुवार से शुरू हो रहे दूसरे और अंतिम टेस्ट मैच में नहीं खेलेंगे। शाकिब पहले मैच में चोटिल हो गए थे जिससे वह अब तक उबर नहीं पाये हैं। बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड (बीसीबी) ने एक बयान में कहा, शाटिब की फिटनेस का आंकलन किया गया है। मैच के दूसरे दिन उनकी बाईं जांघ पर आये खिंचाव की लगातार निगरानी की जा रही है। बोर्ड ने कहा विचार करने के बाद तय किया गया है कि शाकिब दूसरे टेस्ट के लिए उपलब्ध नहीं रहेंगे। बीसीबी ने आगे कहा, शाकिब इस सप्ताह बायो-सिक्योरिटी बबल से निकलकर बीसीबी मेडिकल की की निगरानी में रहेंगे क्योंकि वह अपनी शारीरिक मजबूती को ठीक और मजबूत करना जारी रखे हुए हैं। शाकिब ने 2 साल के प्रतिबंध के बाद पिछले साल ही 29 अक्तूबर को फिर से क्रिकेट में वापसी की थी। बांग्लादेश और वेस्टइंडीज के बीच खेला जाने वाला दूसरा टेस्ट शेर-ए-बांग्ला नेशनल क्रिकेट स्टेडियम में खेला जाएगा।

78 टूनार्मेंटों का आयोजन करेगा एआईटीए

नई दिल्ली। अगले महीने देश के विभिन्न हिस्सों में 78 टेनिस टूनार्मेंटों का आयोजन किया जाएगा जिसमें राष्ट्रीय चैंपियनशिप और छह आईटीएफ टूनार्मेंट भी शामिल हैं। कोरोना महामारी के कारण साल 2020 कैलेंडर बाधित होने के कारण अब अखिल भारतीय टेनिस संघ (एआईटीए) लंबित टूनार्मेंटों को आयोजित करने पर ध्यान दे रहा है और 15 मार्च से पुरुष और महिला राष्ट्रीय हार्ड कोर्ड चैंपियनशिप का आयोजन करेगा। इसी महीने आयु वर्ग की अन्य राष्ट्रीय प्रतियोगिताएं भी होंगी। एआईटीए के कैलेंडर के अनुसार इसके अलावा 45 रैंकिंग टूनार्मेंटों का आयोजन भी किया जाएगा जिसमें 10 टैलेंड सीरीज, तीन चैंपियनशिप सीरीज और एक राष्ट्रीय सीरीज भी शामिल है। आईटीएफ टूनार्मेंटों की शुरूआत लखनऊ में 15 हजार डॉलर इनामी प्रतियोगिता के साथ होगी जबकि इतनी की इनामी राशि का महिला टूनार्मेंट दिल्ली में एक मार्च से होगा। दिल्ली लॉन टेनिस संघ (डीएलटीए) 29 मार्च से 15 हजार डॉलर इनामी पुरुष आईटीएफ प्रतियोगिता की मेजबानी भी करेगा। आठ मार्च से शुरू हो रहे हफ्ते में इंदौर में 15 हजार डॉलर इनामी प्रतियोगिता होगी जबकि पुणे 25 हजार डॉलर इनामी टूनार्मेंट का आयोजन करेगा। पुणे में ही 22 मार्च से 15 हजार डॉलर इनामी पुरुष प्रतियोगिता भी होगी। खेल मंत्रालय ने एसीटीसी (ट्रेनिंग एवं प्रतियोगिता के लिए वार्षिक कैलेंडर) के जरिए वित्तीय सहयोग मुहैया कराएगा जिससे मेजबान का काम कुछ आसान होगा क्योंकि टेनिस टूनार्मेंट के लिए प्रायोजक ढूंढना कभी आसान नहीं होता। एआईटीए के महासचिव अनिल धूपर ने कहा कि राष्ट्रीय महासंघ खिलाड़ियों की मदद के लिए प्रतिबद्ध है और उन्होंने साथ ही सरकार की सहायता को भी अहम बताया।

इंग्लैंड में प्रीमियर लीग फुटबॉल में खेलते हुए गोलकीपर विसेंटी गुवेटा।

ओपेरा यूरो रैपिड शतरंज में विदित का अच्छा प्रदर्शन

नासिक। भारत के विदित गुजराती नें ओपेरा यूरो रैपिड शतरंज के दूसरे दिन दौर 9 मे रूस के डेनियल डुबोव को शिकस्त दी। दूसरे दिन कुल 5 और राउंड खेले गए और इसमें विदित नें अमेरिका के हिकारु नाकामुरा, रूस के इयान नेपोनियची और अजरबैजान के तैमूर रद्जाबोव से ड्रॉ खेला वहीं उन्हें चीन के डिंग लीरेन के खिलाफ एक एक मुकाबले में हार मिली। विदित 16 खिलाड़ियों के इस टूनार्मेंट में 4.5 अंक के साथ ही 11 वे स्थान पर है और अगर उन्हे प्ले ऑफ मे जगह बनानी है तो उन्हे अंतिम दिन अपने प्रदर्शन को और बेहतर करना होगा।

वहीं दूसरे दिन विश्व चैम्पियन मेगनस कार्लसन का अच्छा प्रदर्शन जारी रहा और उन्होने 4 ड्रॉ और 1 जीत के साथ 3 अंक और जोड़ते हुए कुल 7 अंको के साथ पहला स्थान बरकरार रखा है। उनके ठीक पीछे 6.5 अंको लेकर नीदरलैंड के अनीश गिरि और अमेरिका के वेसली सो हैं। वहीं अन्य खिलाड़ियों में रूस के इयान नेपोनियची 6 अंक, अर्मेनिया के लेवोन अरोनियन, फ्रांस के मकसीम लागरेव और अजरबैजान के तैमूर रद्जाबोव 5.5 अंक, अमेरिका के हिकारु नाकामुरा, पोलैंड के जान डुड़ा और रूस के अलेक्जेंडर ग्रीसचुक 5 अंक, भारत के विदित और रूस के डेनियल डुबोव 4.5 अंक, अमेरिका के सैम शंकलंद 4 अंक, जर्मनी के मतथिस ब्लूबम 3.5 अंक, चीन के डिंग लीरेन और अमेरिका के दोमिंगेज पेरेज 3 अंकों पर हैं।

स्टोक्स का कैच पकड़ने वाला वीडियो सामने आया

चेन्नई। भारत और इंग्लैंड के बीच पहले क्रिकेट टेस्ट मैच में इंग्लैंड के ऑलराउंडर बेन स्टोक्स ने शानदार क्षेत्ररक्षण करते हुए जसप्रीत बुमराह का कैच एक हाथ से पकड़कर सबको हैरान कर दिया। अब इसका एक वीडियो भी वायरल हुआ है। भारत की पहली पारी के दौरान वाशिंगटन सुंदर ने एक रन लेकर बुमराह को स्ट्राइक दी थी। बुमराह एंडरसन की इस गेंद को समझ पाए और इसपर बुमराह के बल्ले का किनारा लगा। गेंद पहली स्लिप पर स्टोक्स के पास गई। स्टोक्स ने दाईं तरफ छलांग लगाते हुए एक हाथ से कैच पकड़ लिया। इसके साथ ही भारत की पहली पारी भी सिमट गयी थी। स्टोक्स अपनी बल्लेबाजी और गेंदबाजी के साथ ही क्षेत्ररक्षण में भी माहिर हैं।

टोक्यो ओलंपिक का इंतजार कर रहे डुप्लांटिस

टोक्यो। स्वीडन के पोल वॉल्टर अर्मांड मोंडो डुप्लांटिस ने कहा है कि वह बेसब्री से आगामी टोक्यो ओलंपिक का इंतजार कर रहे हैं हालांकि अर्मांड ने माना है कि कोरोना महामारी के बीच ही टोक्यो ओलंपिक में अपेक्षाओं के दबाव पर खरा उतरना आसान नहीं होगा। 21 वर्षीय अर्मांड को पिछले साल विश्व का सर्वश्रेष्ठ पुरूष एथलीट चुना गया था। उन्होंने साल 2019 में दोहा विश्व चैम्पियनशिप में रजत पदक जीतने के साथ ही पिछले साल फरवरी में पोलैंड में 6.17 मीटर का विश्व रिकार्ड बनाया था। इसके बाद सितंबर में खेल की बहाली पर 6.15 मीटर की छलांग लगाकर रोम डायमंड लीग में रजत पदक जीता था।

सर्जेइ बुबका का रिकार्ड तोड़ने वाले इस पोल वॉल्टर ने कहा, 'मैने पहले कभी ओलंपिक नहीं खेला है लेकिन मुझे पता है कि दुनिया भर के एथलीटों से मिलना कितना खास होता होगा। इस बार कोरोना महामारी के कारण हालात अलग होंगे पर हमें इसकी आदत डालनी होगी। उम्मीद है कि भले ही प्रतिबंधों के साथ हों पर ओलंपिक खेल अवश्य होने चाहिये।' वहीं बुबका का आउटडोर रिकार्ड तोड़ने के अनुभव पर उन्होंने कहा, 'सर्जेइ बुबका दुनिया के सर्वश्रेष्ठ पोल वॉल्टर हैं। मैं उनसे बेहतर बनना चाहता हूं और उनसे अधिक उपलब्धियां अर्जित करना चाहता हूं, मैं बचपन से यह मानकर चला हूं कि मेरे भीतर विश्व रिकार्ड बनाने की क्षमता है। मुझे विश्वास है कि मैं ओलंपिक स्वर्ण जीत सकता हूं।'

इशांत 400 विकेट लेकर नये गेंदबाजों के लिए राह बनायें: अश्विन

चेन्नई। भारतीय क्रिकेट टीम के अनुभवी स्पिनर आर अश्विन ने कहा है कि तेज गेंदबाज ईशांत शर्मा अपने करियर में 400 विकेट लेकर नये गेंदबाजों के लिए राह बनायें। अश्विन के अनुसार पिछले 14 साल के अंदर ईशांत ने अच्छी गेंदबाजी कर तीन सौ से ज्यादा विकेट लिए हैं। वर्तमान गेंदबाजों में इशांत सबसे ज्यादा अनुभवी खिलाड़ी है जो अपना 98वां टेस्ट मैच खेल रहे है। वह पूर्व कप्तान कपिल देव (434) और जहीर खान (311) के बाद टेस्ट मैचों में 300 विकेट लेने वाले तीसरे भारतीय तेज गेंदबाज हैं।

अश्विन ने कहा कि इशांत इस सबसे अधिक मेहनती खिलाड़ियों में से एक हैं। इशांत अपने 100 टेस्ट के आंकड़े से महज दो टेस्ट दूर है और वह ऐसा करने वाले देश के सिर्फ दूसरे गेंदबाज बन सकते है। अश्विन ने कहा कि टेस्ट मैचों का शतक अपने आप में एक विशेष उपलब्धि है। उन्होंने कहा कि इशांत साल 2007-08 में ऑस्ट्रेलिया गये थे और उन्होंने रिकी पोंटिंग का विकेट लिया था। इसके बाद चोट के बाद भी वह कई दौरों पर गए थे। किसी तेज गेंदबाज के लिए भारत के लिए 100 टेस्ट खेलना आसान नहीं है और यह बेहद ही शानदार उपलब्धि है। मैं इशांत को इसकी बधाई दूंगा लेकिन मैं चाहता हूं कि वह 400 या शायद 500 विकेट लेकर आने वाले गेंदबाजों को लिए राह तैयार करें।

दूसरे टेस्ट के लिए टीएनसीए ने जारी किया कोरोना प्रोटोकॉल

मास्क लगाने के साथ ही सामाजिक दूरी के नियम का भी पालन करना होगा

चेन्नई। तमिलनाडु क्रिकेट संघ (टीएनसीए) ने भारत और इंग्लैंड के बीच 13 फरवरी से यहां खेले जाने वाले दूसरे टेस्ट मैच के लिए कोविड-19 प्रोटोकॉल जारी कर दिया है। टीएनसीए के अनुसार यहां के एमए चिदंबरम स्टेडियम आने वाले दर्शकों को चेहरे पर मास्क का इस्तेमाल करने के साथ ही सामाजिक दूरी के नियम का भी पालन करना होगा। इसके साथ ही कोविड-19 के लक्षण वाले किसी भी दर्शक को स्टेडियम आने की अनुमति नहीं रहेगी।

टीएनसीए के अनुसार दूसरे टेस्ट के लिए स्टेडियम आने वाले दर्शकों को कुछ खास शर्तों का भी पालन करना होगा। दर्शकों को ऐसे मास्क का भी इस्तेमाल करना होगा जिससे मुंह और नाक ढका रहे। इसके साथ ही स्टेडियम परिसर में हर समय सामाजिक दूरी बनाए रखनी होगी। वहीं कोविड-19 के किसी भी लक्षण जैसे बुखार, खांसी, जुकाम आदि से ग्रसित व्यक्ति को स्टेडियम में प्रवेश नहीं दिया जाएगा। इसके साथ ही अधिकारियों ने प्रशंसकों से कहा है कि वे किसी भी तरह के नस्लीय व्यवहार से दूर रहें क्योंकि नियमों का पालन नहीं करने वालों पर सख्त कार्रवाई होगी। दर्शकों को स्टेडियम के अंदर नस्लीय, धार्मिक या राजनीतिक गतिविधियों के अलावा अभद्र भाषा के इस्तेमाल के खिलाफ आगाह किया जाता है। क्योंकि इससे खेल में बाधा पड़ सकती है।

newsdesk@motherlandvoice.org
editor@motherlandvoice.org

'अम्मा' 145 कलाकारों के साथ बनाएगी क्राइम थ्रिलर फिल्म

दक्षिण भारतीय फिल्मों के सुपरस्टार मोहनलाल ने एक क्राइम थ्रिलर फिल्म की घोषणा की है। उन्होंने कहा कि द एसोसिएशन ऑफ मलयालम मूवी आर्टिस्ट (अम्मा) 145 कलाकारों के साथ एक फिल्म बनाने वाली है। इस फिल्म का मकसद संगठन के लिए रकम इकट्ठा करना है। इस परियोजना पर 'अम्मा' की तरफ से आशीर्वाद फिल्म्स द्वारा काम किया जाएगा। फिल्म का प्रिदर्शन और टी. के. राजीव कुमार निर्देशन करेंगे। फिलहाल दोनों फिल्म की कहानी व स्क्रिप्ट पर भी काम कर रहे हैं। बता दें कि 'अम्मा' की ओर से मलयालम फिल्मों के कलाकारों को पेंशन दी जाती है और ऐसा इसके सदस्यों के द्वारा दिए जाने वाले वार्षिक दान और फिल्म '20:20' द्वारा प्राप्त ब्याज की राशि से किया जा रहा है।

रायता गांव में रायता फैलाया, आ गिरे भूतिया गांव में

ईशान खट्टर ने लिखा सोशल मीडिया पर

मुंबई । बालीवुड अभिनेता ईशान खट्टर ने अपने सोशल मीडिया एकाउंट पर सबसे पहले रायता गांव की ओर से जा रहे रास्ते के बीच में 10 किमी पहले पड़े 'किलोमीटर स्टोन' की तस्वीर खींच कर शेयर की। उन्होंने इस फोटो पर लिखा- 'पहले रायता गांव में रायता फैलाया। फिर चीरवा घाटी के एक पेड़ का फोटो पोस्ट कर कैप्शन लिखा- फिर चुरैल पेड़ के आंगन में शूटिंग की और फिर 'गूगल मैप' शेयर करते हुए लिखा- और आखिर में भूतिया गांव में आ गिरे।'

बता दें कि उदयपुर में पिछले एक सप्ताह से फिल्मी सितारों का जमावड़ा लगा है। कोरोना के बाद फिल्मों की शूटिंग उदयपुर में एक बार फिर शुरू हो गई है और सबसे पहले 'फोनभूत' फिल्म की शूटिंग उदयपुर में चल रही है। इस शूटिंग के लिए कैटरीना कैफ, ईशान खट्टर और सिद्धांत चतुर्वेदी उदयपुर में है। उदयपुर की खूबसूरती इन फिल्मी कलाकारों को इतनी रास आ रही है कि वे अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर लगतार उदयपुर की खूबसूरत झीलों के साथ ही वहां के शूटिंग स्थलों के फोटो-वीडियो शेयर कर रहे हैं, उनके फैन्स उन्हें पसंद भी कर रहे हैं। सात दिनों हो रही यह शूटिंग 8 फरवरी तक चलेगी। 31 दिसम्बर को इस फिल्म की शूटिंग के लिए उदयपुर पहुंची कैटरीना कैफ भी अब अपने प्रशंसकों को सोशल एकाउंट के जरिए अपडेट कर रही हैं।

शहर में 'फोनभूत' की शूटिंग कर रहे फिल्मी सितारे कैटरीना कैफ, ईशान खट्टर, सिद्धांत चतुर्वेदी लगातार उदयपुर को अपने अंदाज में पेश कर रहे है। ईशान खट्टर ने उदयपुर शहर में किस-किस जगह शूटिंग की इसकी जानकारी सोशल एकाउंट पर शेयर की, वहीं कैटरीना कैफ ने सिद्धांत चतुर्वेदी के साथ होटल के पोर्च में बैडमिंटन खेलते हुए वीडियो शेयर किया। उदयपुर के ईशान और सिद्धांत के साथ फोटो शेयर किए उसके बाद उन्होंने होटल ताज फतहप्रकाश के पोर्च में बैडमिंटन खेलते समय का वीडियो अपलोड किया।

बच्चे दर्शकों को खुश करना आसान नहीं: बादशाह

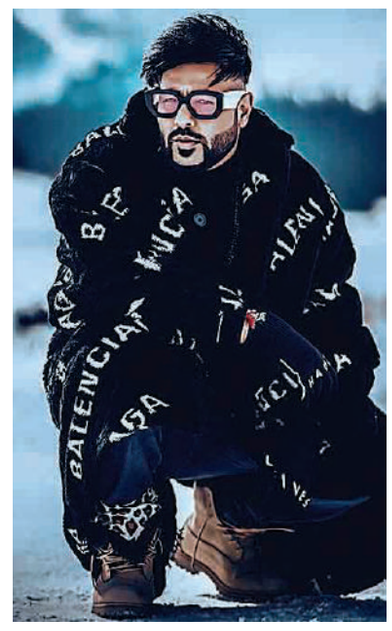

रैप स्टार बादशाह के लिए बच्चों को खुश करना सबसे मुश्किल काम लगता है। उनका कहना है कि दर्शकों में बच्चों का वर्ग ऐसा है, जिसे खुश करना सबसे मुश्किल काम है। बादशाह ने कहा कि बच्चे सबसे वफादार होते हैं, लेकिन यह दर्शकों का एक ऐसा वर्ग है, जिसे प्रभावित करना सबसे मुश्किल काम है। इतने सारे विकल्प उपलब्ध होने के साथ, उन्हें रखना और उनका ध्यान आकर्षित करना चुनौतीपूर्ण होता है। मैं ज्यादा गाने बनाने और उनके भरपूर मनोरंजन के लिए तत्पर हूं।'

हाल ही में बादशाह को निकलोडियन किड्स च्वाइस अवार्डस 2020 में सर्वश्रेष्ठ रैप म्यूजिक स्टार के रूप में नामित किया गया था। वहीं, बॉलीवुड की जानी-मानी हस्तियों के साथ जो बॉन्ड शेयर किया जाता है, वह वास्तव में विशेष, सहमत अभिनेत्री श्रद्धा कपूर का है, जिन्होंने समारोह में सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री की ट्रॉफी जीती।

राजीव कपूर का हार्टअटैक से निधन

कपूर फैमिली में शोक की लहर

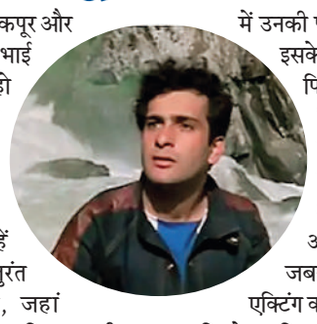

दिग्गज अभिनेता ऋषि कपूर और रणधीर कपूर के छोटे भाई राजीव कपूर का निधन हो गया है। 58 वर्षीय राजीव कपूर की मौत हार्ट अटैक के चलते हुई है। मंगलवार को उनके अचानक हार्टअटैक हुआ और उन्हें बड़े रणधीर कपूर उन्हें तुरंत अस्पताल लेकर पहुंचे, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। रणधीर कपूर ने भाई की मौत की पुष्टि करते हुए कहा, 'मैंने अपने छोटे भाई को खो दिया है। राजीव का निधन हो गया है। डॉक्टरों ने अपनी ओर से हर संभव कोशिश की है, लेकिन वह उन्हें बचा नहीं सके।' रणधीर कपूर ने बताया कि फिलहाल मैं अस्पताल में हूं और उनके शव का इंतजार कर रहा हूं।

राजीव कपूर को 'राम तेरी गंगा मैली' फिल्म में उनकी परफॉर्मेंस के लिए जाना जाता है। इसके अलावा वह 'एक जान हैं हम' फिल्म में भी नजर आए थे। उन्होंने 'प्रेम ग्रंथ' मूवी का डायरेक्शन किया था। इस फिल्म में उनके भाई ऋषि कपूर लीड रोल में थे। इसके अलावा राजीव कपूर ने 1984 में आई फिल्म आसमान, लवर बॉय, जबरदस्त और हम तो चले परदेस में भी एक्टिंग की थी। आखिरी बार वह 1990 में जिम्मेदार फिल्म में नजर आए थे। इसके बाद उन्होंने प्रोड्यूसर और डायरेक्टर के तौर पर काम करना शुरू कर दिया था।

1991 में उन्होंने हिना फिल्म का निर्देशन किया था, जबकि फिल्म के डायरेक्टर उनके भाई रणधीर कपूर थे। इसके अलावा उन्होंने 1996 में 'प्रेमग्रंथ' मूवी के जरिए डायरेक्टर के तौर पर करियर शुरू किया था। हालांकि यह फिल्म ज्यादा चल नहीं सकी थी। इस फिल्म में ऋषि कपूर और माधुरी दीक्षित लीड रोल में थे। इसके बाद 1999 में उन्होंने 'आ अब लौट चलें' फिल्म का निर्देशन किया था। 2001 में उन्होंने आर्किटेक्ट आरती सभरवाल से शादी की थी।

दिलचस्प बात है कि राजीव कपूर बिलकुल अपने भाई ऋषि कपूर की तरह ही दिखते थे। ऋषि कपूर की पत्नी नीतू कपूर ने उन्हें इंस्टाग्राम पर श्रद्धांजलि अर्पित की है। इंस्टाग्राम पर राजीव कपूर की तस्वीर को शेयर करते हुए नीतू कपूर ने कैप्शन में लिखा है, 'RIP'। बीते साल ही ऋषि कपूर का कोरोना लॉकडाउन के दौर में निधन हो गया था और अब राजीव कपूर की मौत के तौर पर परिवार को दूसरा बड़ा सदमा लगा है।

नेहा धूपिया ने लॉकडाउन के 8 महीने में घटाया 21 किलो वजन

मुंबई। नेहा धूपिया अपनी बोल्ड चॉइसेज के लिए जानी जाती हैं। वह ट्रोल्स को भी मुंहतोड़ जवाब देती हैं। हालांकि ट्रोलिंग की वजह से उनके जीवन में एक पॉजिटिव चेंज भी आया है। बेटी मेहर को जन्म देने के बाद उनका वजन 23-25 किलो बढ़ गया था। लोग इस पर काफी नेगेटिव बोलते थे।

लॉकडाउन के 8 महीनों में उन्होंने अपना 21 किलो वजन कम किया है। नेहा धूपिया की बेटी मेहर का जन्म नवंबर 2018 में हुआ था। बच्ची के जन्म के बाद वह भी कई बदलावों से गुजरीं और उनका वजन बढ़ गया। नेहा बताती हैं कि इसको लेकर उनके मन में कोई नेगेटिविटी नहीं थी, लेकिन इसके लिए उन्हें फैट-शेम किया गया।

नेहा ने बताया कि लॉकडाउन के 8 महीने में उन्होंने 21 किलो वजन घटाया। वह बताती हैं कि प्रेग्नेंसी के दौरान उनका वजन करीब 25 किलो बढ़ गया था। इसके लिए उन्हें ट्रोल और जज किया गया। यह तक कहा गया कि उनका फिल्मी करियर खत्म हो जाएगा। नेहा बताती हैं, आप अपने अंदर एक खूबसूरत जिंदगी लिए होते हैं और अचानक यह बाहर आ जाती है। जब आप खुद को देखते हैं तो अजीब लगता है। हर कोई इतना भाग्यशाली नहीं होता कि प्रेग्नेंसी में उसका वजन ना बढ़े। मेरा 23-25 किलो वजन बढ़ गया था। नेहा ने बताया कि लोग उनकी फैट-शेमिंग करते थे। हालांकि उन्होंने धैर्य रखा और धीरे-धीरे वजन घटने दिया। नेहा बताती हैं, लॉकडाउन में मैंने एक काम किया कि लोगों ने मेरे बारे में जो कहा उसकी चिंता नहीं की और 8 महीनों में 21 किलो वजन कम किया।

संजय दत्त की बेटी त्रिशाला ने सुनाए टॉर्चर के किस्से, बताया बॉयफ्रेंड ने कैसे-कैसे सताया

बॉयफ्रेंड ऐसा फील कराता था जैसे मैं किसी काम की नहीं, 'मैं कचरे की तरह ट्रीट की जाती थी

मुंबई। बॉलिवुड ऐक्टर संजय दत्त की बेटी त्रिशाला दत्त सोशल मीडिया पर काफी ऐक्टिव रहती हैं। वह अक्सर फैंस और फॉलोअर्स के साथ बातचीत भी करती हैं। फिलहाल, वह न्यूयॉर्क में साइकोथेरपिस्ट के रूप में काम कर रही हैं। हाल ही में आस्क मी एनीथिंग सेशन के दौरान त्रिशाला ने अपने रिलेशनशिप और अफेयर के दौरान झेलीं मुश्किलों पर खुलकर बात की। उन्होंने फैंस के कई इंट्रेस्टिंग सवालों के भी जवाब दिए। एक यूजर ने पूछा कि क्या त्रिशाला ने अपने रिलेशनशिप्स में कोई गलती की है, इस पर उन्होंने कहा, 'मैं कुछ वर्षों पहले एक शख्स के साथ 'डेटिंग' कर रही थी और डेटिंग शब्द को मैं इसलिए कोट कर रही हूं क्योंकि असल में मैं खुद को डेट कर रही थी।' त्रिशाला ने बताया, 'उसे कोई फर्क नहीं पड़ता था लेकिन मुझे उसे समझाना पड़ा कि हमारा साथ रहना जरूरी ही क्यों है। मुझे याद है कि मैं उससे कहती थी कि मैं तुम्हें हफ्तेभर का समय दे रही हूं। तुम इस पर सोचो।' त्रिशाला बताती हैं कि उनका बॉयफ्रेंड ऐसा फील कराता था जैसे वह किसी काम की नहीं हैं। उन्होंने कहा, 'मैं कचरे की तरह ट्रीट की जाती थी।

त्रिशाला ने कहा कि हर दिन मुझे लगता था कि मेरा बुरा दिन गया। मैं सोचती थी कि कल सबकुछ ठीक होगा, लेकिन यह बेहतर होने के बजाय बुरा होता चला गया।' वहीं, बॉयफ्रेंड के आक्रामक व्यवहार पर बात करते हुए त्रिशाला ने कहा, ह्यवह धीरे-धीरे मुझे मेरे दोस्तों से दूर करता गया और मुझे इसका एहसास भी नहीं होने दिया। अगर मैं कभी भी बाहर जाती थी तो घर लौटकर उसे मेसेज करती थी। इस पर वह अग्रेसिव मेसेज भेजता था कि ओह, आज घर कोई देर से पहुंचा।' त्रिशाला के मुताबिक, 'वह ऐसा दशार्ता था जैसे मैंने कोई ऐसा काम कर दिया जो नहीं करना चाहिए था। अब प्लीज यह कहने की जरूरत नहीं है कि हो सकता है कि वह मजाक कर रहा हो। नहीं, मैं उसे और उसके पास्ट को अच्छे से जानती हूं।' इन चीजों से त्रिशाला कैसे उबरीं, इस पर बात करते हुए उन्होंने बताया, 'मैंने कई वर्षों तक खुद पर काम किया और मैं सोचती रही कि मैं क्यों उस रिलेशनशिप में थी जबकि मैं शुरू से अच्छे से जानती थी।' संजय दत्त की बेटी ने आगे बताया, 'मेरे टॉक्सिक बिहेवियर के कारण मैं खुद के लिए नहीं खड़ी हो पा रही थी और इसीलिए वह मुझे इस तरह ट्रीट करता रहा। मैंने उसे स्वीकार किया। लानत है मुझ पर लेकिन मैं बढ़ी, सीखा और अब मैं यहां हूं।'

राजकुमार राव और भूमि पेडनेकर साथ करना चाहते थे काम, 'बधाई दो' ने पूरी की विश

पिछले महीने से देहरादून और मसूरी में चल रही है फिल्म 'बधाई दो' की शूटिंग

मुंबई। नैशनल अवॉर्ड विनिंग फिल्म 'बधाई हो' को रिलीज हुए दो साल से ज्यादा वक्त गुजर जाने के बाद जंगली पिक्चर्स अब 'बधाई दो' बना रहा है। इस फिल्म की कास्ट काफी दमदार है। फिल्म हर्षवर्धन कुलकर्णी के डायरेक्शन में बन रही है और इसे अक्षत घिलडायल और सुमन अधिकारी ने लिखा है। फिल्म में राजकुमार राव और भूमि पेडनेकर पहली बार साथ नजर आएंगे। 'बधाई दो' की शूटिंग बीते महीने से देहरादून और मसूरी में चल रही है। फिल्म में राजकुमार राव पुलिस के रोल में हैं और भूमि पेडनेकर पीटी टीचर के। दोनों ऐक्टर पहली बार साथ में इस फिल्म में काम करने को लेकर काफी एक्साइटेड हैं।

राजकुमार राव ने बताया, भूमि के साथ करना बढ़िया अनुभव है। एक ऐक्टर के तौर पर उनमें काफी ग्रोथ हुई है। मैं उनके साथ काम करना चाहता था, लेकिन अच्छी स्क्रिप्ट नहीं मिल रही थी। हमें 'बधाई हो' का ऑफर मिला और हमने यह मौका झपट लिया। वहीं भूमि इस बारे में कहती हैं, राज के बारे में कई नए खुलासे हुए हैं। मुझे लगता है था कि वह बहुत सीरियस और इंट्रोवर्ट होंगे पर वह वैसे नहीं हैं। कम से कम इस फिल्म में तो नहीं, हमें साथ में काम करने के लिए 'बधाई दो' से बेहतर फिल्म नहीं मिल सकती थी। वहीं डायरेक्टर हर्षवर्धन ने भी कहा कि उन दोनों के साथ काम करना किसी ट्रीट से कम नहीं। उन्होंने बताया कि दोनों ऐक्टर्स उनको चैलेंज करते हैं और उनके साथ काम करते हुए हर वक्त अलर्ट रहना पड़ता है।

मनोज बाजपेयी ने फिल्म 'डिस्पैच' की शूटिंग की शुरू

अभिनेता मनोज बाजपेयी ने अपनी आगामी फिल्म 'डिस्पैच' की शूटिंग शुरू कर दी है। उन्होंने सोशल मीडिया के जरिए यह जानकारी दी। अभिनेता ने फिल्म के सेट की एक फोटो इंस्टाग्राम पर शेयर की और लिखा कि 'वहां वापस आना, जहां घर जैसा महसूस होता है। 'डिस्पैच' की शूटिंग शुरू।' बाजपेयी की यह फिल्म क्राइम जर्नलिज्म की थ्रिलर कहानी पर आधारित है। इसका निर्देशन तितली फेम निर्देशक कनू बहल करने वाले हैं और यह फिल्म सीधे डिजिटल प्लेटफॉर्म पर रिलीज होगी। इसे रॉनी स्क्रूवाला ने बनाई है और इसकी शूटिंग लंदन, दिल्ली और मुंबई में होनी है। अभिनय की बात करें, तो बाजपेयी 'द फैमिली मैन' के दूसरे सीजन में भी नजर आएंगे। यह सीजन इसी साल गर्मियों में रिलीज होना है। वैसे इस सीरीज को जल्दी रिलीज होना था, लेकिन अज्ञात कारणों से इसकी रिलीज टाल दी गई है।